विचित्र परीकथा विशेषांक
अधिक पृष्ठ
अधिक कहानियां
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन
जुलाई '९२
५ रुपए

YOU KNOW HOW THESE GROWN-UPS KEEP TELLING US "DON'T DO THIS" AND "DON'T DO THAT"?

SO HERE'S SOMETHING GROWN-UPS ARE NOT ALLOWED TO DO (HA! HA! HA!)

THEY'RE NOT ALLOWED TO EAT THIS YUMMY NEW JAM FROM VOLFARM

BECAUSE (MMM!) IT'S FAR TOO GOOD FOR THEM

New Volfarm Jam is made just for kids.
So, naturally, it's made just the way kids like it.
With the yummiest, juiciest fruits. (Slurp, slurp!)
Tell all those adults to keep their hands off it!

NOW

Volfarm

MIXED FRUIT PINEAPPLE JAMS

जीवन में भर लो रंग डायमण्ड कॉमिक्स के संग!

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं.

मिलें, क्लब के अन्य सदस्यों से!

चाचा चौधरी, लम्बू मोटू, जाब, पिंकी, बिल्लू, ताऊजी, फौलादी सिंह, चन्नी चाची, दाबू, महाबली शाका, चाचा भतीजा, राजन इकबाल, जेम्स बाड, फैण्टम, मैण्ड्रेक.... और कई अन्य मशहूर पात्र।

इन सब पात्रों से मिलाने का श्रेय 'डायमण्ड कॉमिक्स' को है जो देश में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स हैं और हर महीने अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, बंगाली और मराठी भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं।

और कितना आसान है अपने इन प्रिय पात्रों से मिलना!

आप एक बार 'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न तो बार-बार आपको अपने मम्मी पापा से डायमण्ड कॉमिक्स लाने के लिए कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को याद दिलाना पड़ेगा, तब आपको यह चिन्ता भी नहीं रह जाएगी कि कहीं बुक-स्टाल पर डायमण्ड कॉमिक्स समाप्त न हो जाएं। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आगामी कॉमिक्स की सूचना भी यथा समय मिलती रहेगी।

मुफ्त उपहार:

'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बनने पर आपको पहली वी.पी. में 'चिल्ड्रन जोक्स' नामक पुस्तक उपहार स्वरूप मुफ्त भेजी जाएगी तथा आपके जन्मदिन पर एक विशेष उपहार भी मुफ्त भेजा जाएगा। समय-समय पर अन्य उपहार भी आपको मिलते रहेंगे।

डाक खर्च माफ!

'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाने पर आपको हर महीने वी.पी. से घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स प्राप्त होते रहेंगे। कहीं आने-जाने की भी जरूरत नहीं। जो डाकिया आपका कॉमिक्स पेक्ट लेकर आएगा, आपने केवल उसे कॉमिक्स का मूल्य ही देना है। डाक खर्च भी आपको नहीं देना पड़ेगा।

कितना सुगम है 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना!

आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में भेज दें।

सदस्य बनने पर हर महीने आपको 3/-रु. की बचत वी.पी. पर और 7/-रु. की बचत डाक खर्च पर होगी। यानी आपको 10/-रु. की बचत और 12 वी.पी. लगातार छुड़वाने पर आपको 12/-रु. मूल्य की एक डाइजेस्ट उपहार स्वरूप मुफ्त मिलेगी।

अपने मित्रों को सदस्य बनाएं, इनाम पाएं!

यदि आप अपने चार मित्रों के नाम पते व सदस्य शुल्क (10/-रु. प्रत्येक सदस्य) भिजवायेंगे तो आपको उपहार स्वरूप 12/- की एक डाइजेस्ट मुफ्त दी जाती।

हां! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

डाकघर __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10/-रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्मदिन ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

प्लेटफॉर्म पर भीड़ न कीजिए
यात्रा को यातना न बनने दीजिए

उत्तर रेलवे

आपकी सेवा में

HTA 7509 HIN

पीताम्बर द्वारा प्रकाशित उत्तम बाल साहित्य

जीवनी संस्मरण

1. प्रेमचन्द-चित्रात्मक जीवनी	कमल किशोर गोयनका
2. भीमराव आंबेडकर	डा.राजेन्द्र मोहन भटनागर
3. मौलाना आजाद	व्यथित हृदय
4. राष्ट्र नायक और निर्माता जवाहर लाल नेहरू	ब्रजभूषण
5. यादें जो सांसों में बसी हैं भाग 1 व 2	श्री व्यथित हृदय
6. बालक जो अमर हो गए भाग 1 से 3	राजकुमार अनिल

उपन्यास

1. सूरज कब निकलेगा ?	गगाप्रसाद मिश्र
2. सत्यमेव जयते	राजेन्द्रमोहन भटनागर
3. नई दिशाएँ	रवीन्द्र वाघ

ज्ञान-विज्ञान

1. जगदीश चन्द्र बोस	विमल कुमारी
2. टामस अल्वा एडीसन	श्याम कपूर
3. अलबर्ट आइन्सटाइन	श्याम कपूर
4. महान भारतीय वैज्ञानिक	श्री व्यथित हृदय
5. भारत का प्रथम अन्तरिक्ष यात्री (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)	जयप्रकाश भारती
6. दैनिक जीवन में विज्ञान	श्री व्यथित हृदय
7. ऊर्जा की कहानी	कृष्ण गोपाल रस्तोगी
8. क्या और कैसे ?	मनोहर लाल वर्मा
9. धरती के खेल तमाशे	रामस्वरूप वशिष्ट
10. होमी जहाँगीर भाभा	श्याम कपूर
11. चन्द्रशेखर वेंकटरमन	श्याम कपूर
12. शक्ति का विकास	ब्रह्मप्रकाश गुप्त

राष्ट्रप्रेम, एकता और स्वतंत्रता संग्राम

1. एकता के प्रकाश दीप भाग 1 व 2	श्री व्यथित हृदय
2. शहीदों की शौर्य गाथाएं भाग 1 व 2	श्री व्यथित हृदय
3. स्वतन्त्रता संग्राम की कहानी भाग 1 से 3	राजेन्द्रमोहन भटनागर
4. भारत का स्वतन्त्रता संग्राम (दिल्ली प्रशासन द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित पुस्तक)	दुर्गा प्रसाद गुप्त

कथा-साहित्य

1. लो उपहार भाग 1 व 2	जयप्रकाश भारती
2. गरीब परी तथा अन्य कहानियाँ	लक्ष्मीनारायण लाल
3. बात की घात	ब्रज भूषण
4. चार चावल	ब्रह्मप्रकाश गुप्त
5. नीली रोशनी का महल	स्नेह अग्रवाल
6. लाल फूल	श्रीनिवास वत्स
7. चिड़िया बोली	श्री व्यथित हृदय
8. देश-देश की कहानी	महेन्द्र भटनागर
9. रानी का न्याय	मदनमोहन श्रीवास्तव
10. इन्द्रधनुष	ब्रह्मप्रकाश गुप्त
11. नर हो न निराश करो मन को	ब्रज भूषण
12. रात में पूजा	श्रीनिवास वत्स
13. हीरों का हार (अन्तराष्ट्रीय हैंस एण्डरसन-डिप्लोमा से सम्मानित)	जय प्रकाश भारती
14. नन्हें बने महान	ब्रह्मप्रकाश गुप्त
15. ज्ञान और विवेक की कहानिया	राजकुमारी श्रीवास्तव
16. श्रुतसेन का परिचय	गौरव अग्रवाल

बाल नाटक संग्रह

1. आओ नाटक खेलें	ओमप्रकाश सिहल

भारतीय लोक कथा माला

1. भारत की लोककथाएं-उत्तरपूर्व	श्याम कपूर
2. भारत की लोककथाएं-मध्य भारत	श्याम कपूर
3. भारत की लोककथाएं-पश्चिमी भारत	श्याम कपूर
4. भारत की लोककथाएं-दक्षिणी भारत	श्याम कपूर
5. भारत की लोककथाएं-पूर्वी भारत	श्याम कपूर
6. भारत की लोककथाएं-उत्तर भारत	श्याम कपूर

हमारे गौरव ग्रंथ

1. रामायण	डा. कृष्णदत्त भारद्वाज
2. महाभारत	राजेन्द्रमोहन भटनागर
3. कालिदास की महान् कृतियाँ	हरिवंश लूथरा

शिशु गीत

1. गा गा गा शिशु के गड़बड़ गीत	जयप्रकाश भारती
2. विज्ञान गीत	जयप्रकाश भारती

जीवनोपयोगी

1. जरा सोचो	ब्रह्मप्रकाश गुप्त

भारतीय संस्कृति

1. भारतीय मेले-एकता की कड़ियाँ	मोना साहनी

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०

888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग, नई दिल्ली-110005 (भारत)

तार : 'पीताम्बर' नई दिल्ली

दूरभाष : कार्यालय : 7770067, 7776058, 7525528
आवास : 5715182, 5721321, 5737437

आओ बात करें

एक था गड़रिया और एक था राजकुमार। छुटपन से ही उन में मित्रता हो गई। गड़रिया पशु चराकर लौटता, तो राजकुमार से मिलता। दोनों साथ घूमते-फिरते। एक जगह बैठकर हंसते-बतियाते। गड़रिया बांसुरी की तान छेड़ देता। राजकुमार देर तक सुना करता। वे यों ही बड़े होते गए।

एक दिन गड़रिया बोला— "मित्र, तुम तो राजा बन जाओगे, मैं यों ही भेड़ें चराता रहूंगा।"

झट-से राजकुमार ने कहा— "कैसी बातें करते हो! मैं राजा बनूंगा, तो तुम मेरे मंत्री बनोगे। पक्की बात है!"

समय बीता, राजकुमार राजा बन गया। शान-शौकत में वह गड़रिए को भुला बैठा। कुछ समय बाद धूमधाम से नए राजा की शादी हुई। सुंदर-सी रानी मणिमाला राजमहल में आ गई।

सब कहते कि रानी क्या, परी है, परी। गड़रिए ने सुना, तो तय किया कि वह भी रानी को देखेगा। जा पहुंचा राजमहल। पर फाटक पर ही रोक दिया गया। उसने राजा से दोस्ती की बात कही, तो दरबारियों ने खिल्ली उड़ाई। बेचारा गड़रिया भारी मन से लौट आया।

अगले दिन राजा सुबह-सवेरे उठे, तो परेशान। उनके शरीर में जैसे सब जगह सुइयां चुभो दी गई हों। हर समय दर्द और परेशानी। राजा कुछ न कर पाते। खाना-पीना भी कठिन हो गया। राजमहल में हड़कम्प मच गया। एक दिन, दो दिन — सारे राज्य में बात फैल गई। लोग राजा को 'सुई राजा' कहने लगे।

राजा बैठे-बैठे सोचते रहे, सोचते रहे। अचानक उन्हें गड़रिए का ध्यान आया। उसे वचन देकर तोड़ा था उन्होंने। पर अब क्या हो? वह कुछ कर न पाए।

अब रानी मणिमाला तो राज चलातीं, राजा रनिवास में बेकार पड़े रहते।

रानी एक दिन नदी स्नान को गईं। नदी से लौटते हुए जंगल से गुजरीं, तो देखा कि घायल हिरनी पड़ी है। हिरनी जोर-जोर से सांस ले रही थी, शायद मर ही जाती। रानी रुकीं। उन्होंने देखा कि हिरनी के बदन में तीर चुभा हुआ है। रानी ने तीर निकाला। नदी से लाकर पानी पिलाया, तो देखती क्या है कि हिरनी की जगह एक सुंदर लड़की खड़ी है।

लड़की बोली— "मेरा शाप आपने दूर किया। आपकी मुसीबत मैं दूर करूंगी। बताओ, मैं क्या कर सकती हूं, रानी जी?"

रानी मणिमाला ने अपना दुखड़ा रोया और राजा की बीमारी के बारे में बताया। लड़की बोली— "राजा की सुइयां तो गड़रिया ही निकाल सकता है। वे झूठ की सुइयां हैं।" उसने यह भी बता दिया कि गड़रिया कहां मिलेगा!

लड़की तो देखते ही देखते न जाने कहां छूमंतर हो गई। मणिमाला राजमहल लौटी। उन्होंने तुरंत गड़रिए को लाने के लिए सेवक दौड़ाए। गड़रिया आया तो अपने साथ एक भेड़ भी लाया। राजा से मिला। उसने राजा के शरीर पर हाथ फेरा, तो राजा का दर्द ठीक होता चला गया। गड़रिए ने अपने हाथों को भेड़ पर झटक दिया। उसका शरीर सुई जैसी बारीक ऊन से भर उठा।

राजा ने अपनी भूल मानी। उसे अपना मंत्री बना लिया।

राजकुमार और गड़रिए की दोस्ती इस तरह फिर से जुड़ी। इस जमाने में ऐसे राजा कहां, ऐसे दोस्त कहां!

परी-कथा विशेषांक में देश-देश की कहानियां दी गई हैं— अजब-अनोखी। इन्हें पढ़ते हैं, तो जैसे कोई कान में कुछ कह भी देता है। लिखना, अंक कैसा लगा?

—तुम्हारे भइया

नंदन

जुलाई '९२
वर्ष :२८ अंक : ९

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : अखिलेश
एलबम : रामकृष्ण शर्मा

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश, डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : प्रशांत सेन

फूल चुराए कौन

— जय प्रभा

एक राजकुमार था देवकुमार— डील-डौल से पहलवान जैसा। देखने में सुंदर सलौना। बहादुर था, साहसी था। बड़ा हुआ, तो राजा बना। राजा के पास खूब धन-दौलत थी। शक्तिशाली भी था। उसके दरबारी अच्छे और सच्चे थे। फिर भी राजा खुश न रह पाता।

राजा को झट से किसी भी बात पर गुस्सा आ जाता। वह कठोर स्वभाव का था। छोटे से अपराध के लिए भी ऐसा दंड दे देता कि लोग त्राहि-त्राहि कर उठते।

एक दिन बिना कारण ही देवकुमार ने पड़ोसी देश पर हमला बोल दिया। उसके सैनिक बड़ी वीरता से लड़े। लड़ाई चलती रही। सैनिक जान हथेली पर लेकर लड़ते रहे। अंत में उनकी विजय हुई। उन्होंने एक बड़ी लड़ाई जीत ली। पर राजा को कोई खास संतोष न था। वह खुश भी नजर नहीं आया।

सेना राजधानी में लौटी। जश्न मनाए गए। आए दिन सेना की परेड होती। रात के समय भोज होते। खुशी के बैंड-बाजे बजते। आसमान में आतिशबाजी से चकाचौंध हो उठती। प्रजा अपने राजा का जय-जयकार करती।

अभी खुशियां ही मनाई जा रही थीं कि देवकुमार ने एक और लड़ाई छेड़ दी। घमासान लड़ाई चली। बहुत-से लोग मारे गए। पर अंत में विजय हुई। राजा एक के बाद एक हमले करता रहता। आसपास के सभी देशों को उसने जीत लिया।

उसके सैनिक लड़ते-लड़ते परेशान हो उठे। वे थक गए। पर क्रूर राजा तो नहीं थका था। वह अपने सैनिकों के लटके चेहरे देखता। उनसे पूछता कि क्या कठिनाई है। वे आदर से राजा के सम्मान में झुक जाते। पर वे चुप ही रहते। भला यह कैसे कहें कि हम लड़ाई करते-करते ऊब गए हैं। क्या उनके राजा यह पसंद करेंगे?
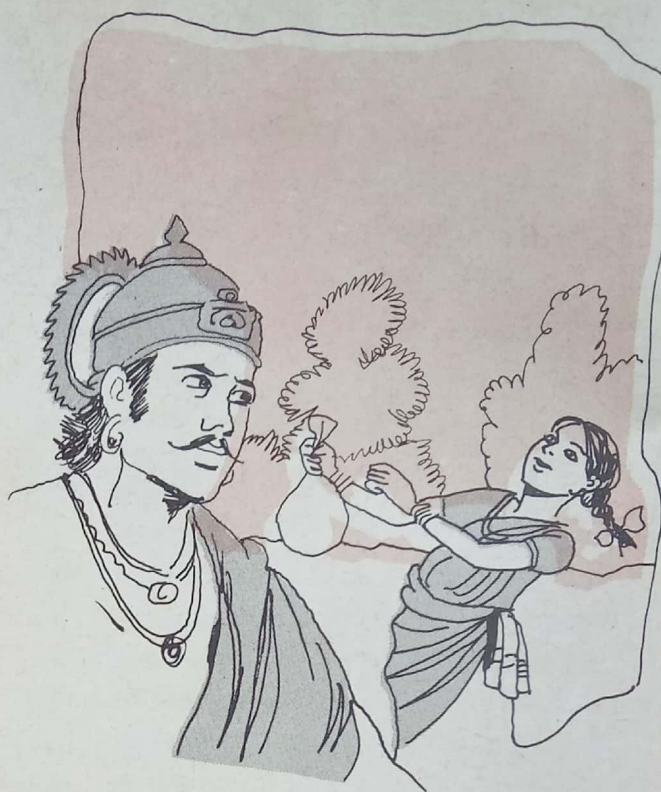
एक दिन देवकुमार शिकार खेलने गया। घोड़ा दौड़ाते हुए वह अपने लोगों से बिछुड़ गया। तभी उसे कहीं से मधुर संगीत-सा सुनाई दिया। राजा ठिठक गया। उसने फिर किसी गीत के बोल सुने, वह उसी ओर बढ़ गया। देखता क्या है कि एक बालिका क्यारियों में बीज बो रही है। देवकुमार वहां खड़ा रहा, पर बालिका ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। वह तो अपने काम में मगन थी। राजा को बहुत बुरा लगा कि कोई उसे इस तरह अनदेखा भी कर सकता है।

तभी एक बालक तेजी से लड़की के पास आया। तालियां बजाता हुआ बोला— "अरे, अरे, राजा आया, राजा आया।"

बालिका अचानक चौंकी। खड़ी हो गई, पीछे घूम कर देखा, तो बोल उठी— "क्या तुम सचमुच के राजा हो?"

— "हां, मैं राजा हूं!"

"ओह, राजा को क्या दूं?"— वह एकदम बोली। उसने सुना था कि राजा के सामने जाओ, तो कुछ भेंट लेकर। बस, बालिका ने बीजों की छोटी-सी थैली उठाई और राजा को दे दी।

"लीजिए महाराज, हमारे पास तो इसके अलावा

कुछ और नहीं'— वह बोली।

राजा गुस्से से लाल-पीला तो हुआ, पर उसने थैली ले ली। वह कहना चाह रहा था कि राजा को ऐसी घटिया चीज भी भला कोई देता है! पर कह न सका। वह वहां से मुंह फेर कर चल दिया।

दोनों बच्चे खड़े-खड़े देखते रहे। सोचते रहे— 'राजा ने थैली लेकर कुछ कहा नहीं। यों ही चला गया।'

इधर राजा देवकुमार महल में लौटा, तो उसने माली को बुलवाया। माली डरता-डरता आया, तो राजा ने बीजों भरी थैली उसे थमा दी। बोला—"बताओ, ये बीज किस पौधे के हैं?"

माली ने थैली खोली। बीज हाथ में ले,देर तक उन्हें देखता-सूंघता रहा। उसकी समझ में न आया कि बीज किस पौधे के हैं।

राजा उसे गुमसुम देखकर और नाराज हो उठा। कड़ककर बोला— "तुम्हें किसने माली बनाया है? यदि तुम यह नहीं बता सके कि ये बीज किस पौधे के हैं, तो कड़ा दंड दूंगा।"

माली बेचारा ऊपर से नीचे तक कांप उठा। कुछ समझ में नहीं आया कि क्या करे। अचानक उसके मुंह से निकल गया— "ये तो आकाश में उगने वाले पौधों के हैं।"

राजा माली की बात सुनकर और नाराज हो गया। उसने आकाश में उगने वाले पौधों के बारे में कभी सुना तक न था। वह बोला— "ऐसा न हुआ, तो तुम्हें सजा मिलेगी। जाओ इन्हें शाही बगीचे में बो दो।"

राजा का आदेश। माली ने उसी दिन भगवान का नाम ले,बीज बो दिए। उन्हें पानी से सींचता रहा। तीसरे दिन माली ने देखा कि उन बीजों के पौधे बन गए। चौथे दिन उसने देखा कि उन पर रंग-बिरंगे फूल खिल उठे हैं। दूर तक बगिया महक रही थी। माली ने राजा को खबर की— "महाराज, ऐसे फूल, जो कभी कहीं न देखे। लगता है, बगिया में इत्र छिड़क दिया गया हो।"

राजा देवकुमार बगीचे में खुद गए। वह ठगे-से रह गए। जल्दी लौटना था उन्हें, पर वहां देर तक घूमते रहे।

अगले दिन सबेरे ही फिर माली महल में आया। राजा से बोला— "महाराज, रात में कोई फूल चुरा ले गया।"

"ऐं, तुम रखवाली नहीं करते ठीक से!"— राजा को गुस्सा तो आया पर उसने माली को दंड नहीं दिया। दो पहरेदार बगीचे के लिए रख दिए गए। बाग में नए पौधों पर फूल खिलते लेकिन रात-रात में गायब हो जाते। कोई वहां आता भी न था। राजा हैरान, माली परेशान।

बाग में रात का पहरा कड़ा किया गया। इधर-उधर कई सैनिक छिप गए। राजा ने कहा कि जब भी कोई पकड़ा जाए तुरंत खबर की जाए। आधी रात को अचानक दिपदिप रोशनी चमकी। दो चमकदार पक्षी जैसे आसमान से उतरे। धरती पर आते ही वे दो बालक बन गए। झटपट पौधों से फूल तोड़ने लगे।

इधर-उधर छिपे सैनिक पहले तो देखते रहे, देखते रहे। फिर एकाएक उन्होंने एक साथ झपटकर उन बच्चों को पकड़ लिया।

लेकिन यह क्या! दोनों बच्चे सैनिकों के हाथों से

गायब हो गए। सैनिक रह गए हैरान, परेशान ! वे दोनों फूल चोर बच्चों को इधर-उधर ढूंढ़ने लगे। सैनिक समझ रहे थे कि अगर वे चोरों को न पकड़ सके, तो राजा कड़ा दंड देंगे।

कुछ देर बाद बच्चे सैनिकों को फूलों के बीच दिखाई दिए, हंसते-खिलखिलाते हुए। सैनिक उन्हें पकड़ने दौड़ते,तो वे गायब हो जाते। बस, हंसी सुनाई पड़ती रहती।

सैनिक फूल चोरों की खोज में इधर से उधर भागदौड़ करते रहे, पर वे हाथ न आए। तब तक दिन निकल आया। सैनिक अधिकारी सिर झुकाए देवकुमार के पास पहुंचा। हाथ जोड़कर कहा— "अन्नदाता, अपराध क्षमा हो। रात को दो बच्चे फूल तोड़ने आए थे, पर हम उन्हें पकड़ न सके। वे जाने कहां गायब हो गए?"

यह सुनकर देवकुमार का पारा जैसे सातवें आसमान पर जा पहुंचा। उन्होंने सैनिकों को कारागार में डलवा दिया। अगली रात नए सैनिक बाग में तैनात किए गए। वे पूरी मुस्तैदी के पहरा देते रहे। पर उन्हें कुछ दिखाई न दिया। हां, फूलों के बीच द्दिप-द्दिष होती और हंसी सुनाई देती।

इसी तरह कई दिन बीत गए। देवकुमार बहुत गुस्से में थे, क्योंकि फूल चोरों को नहीं पकड़ा जा सका था। राजा को लगा, यह शरारत है, उसके विरुद्ध जानबूझकर षड्यंत्र रचा जा रहा है। बस, देवकुमार ने तुरंत लोगों की गिरफ़्तारी के आदेश दे दिए। जो भी राजमहल के पास दिखाई दे जाता, उसी को कारागार में ठूंस दिया जाता।

नगर में हाहाकार मच गया। लोग समझ न पाए कि राजा को क्या हो गया है ! नगर पर उदासी छा गई।

उधर राजा देवकुमार भी परेशान थे। उन्हें रात को नींद न आती। बस, अपने कक्ष में चहलकदमी करते रहते। फूल चोर बच्चों के बारे में सोचते रहते।

एक रात मन ज्यादा बेचैन हुआ,तो स्वयं बाग में जा पहुंचे। तभी दोनों बच्चे फूलों के बीच दिखाई दिए— हंसते हुए। सैनिक दौड़े और इस बार बच्चे उनके

बंधन में आ गए। उन्हें झट देवकुमार के सामने पेश किया गया।

राजा देवकुमार ने उन्हें देखा, तो उन्हें लगा कि वह इन बच्चों से पहले भी मिले हैं। राजा ने कड़क आवाज में पूछा— "तुम हमारे बाग के फूल चोरी क्यों करते हो?"

जैसे मधुर घंटियां खनखना उठीं। मीठी-मीठी आवाज में बालक परी बोली— "फूल हमारे हैं, बीज हमने दिए थे।"

राजा बोले— "पर फूल हमने उगाए, हमारे बगीचे में उगे। दूसरे का बगीचा तुम कैसे उजाड़ सकते हो?"

बालक बोला— "राजन, तुमने किस-किस के बगीचे उजाड़ डाले, तुम्हें याद नहीं। हर दिन उसी उधेड़-बुन में तुम्हें रात को नींद तक नहीं आती।"

राजा देवकुमार को जैसे बिजली का झटका लगा। उनका दिमाग भन्ना उठा। उन्होंने कहा कि अब वह ऐसा नहीं करेंगे।

सफेद धुएं के दो बगूले उठे और न जाने बालक कहां गायब हो गए। राजा देवकुमार को उस रात खूब गहरी नींद आई। अगले दिन सेना को कूच करनी थी, उन्होंने उसे रोक दिया। ●

वहीं का वहीं

—रश्मि बिंदल

जग्गू एक गरीब लकड़हारा था। वह रोज जंगल से लकड़ी काटकर लाता। उसे बेचकर किसी तरह अपनी गुजर-बसर करता।

एक दिन एक आदमी जग्गू के पास आया। बोला—"मैं चंदन की लकड़ी का कारीगर हूं। मुझे चंदन की बढ़िया और मोटी लकड़ी चाहिए। मुंहमांगे दाम दूंगा।"

सुनकर जग्गू खुश हो गया। कुल्हाड़ी लेकर जंगल में निकल पड़ा। सारे दिन घूमता रहा, मगर चंदन का पेड़ न मिला। खोजते-खोजते घने जंगल में बहुत दूर निकल गया।

दिन ढलने लगा था। 'आज तो खाली हाथ ही वापस जाना पड़ेगा।' —जग्गू सोच ही रहा था कि अचानक उसे चंदन का एक विशाल पेड़ दिखाई दिया।
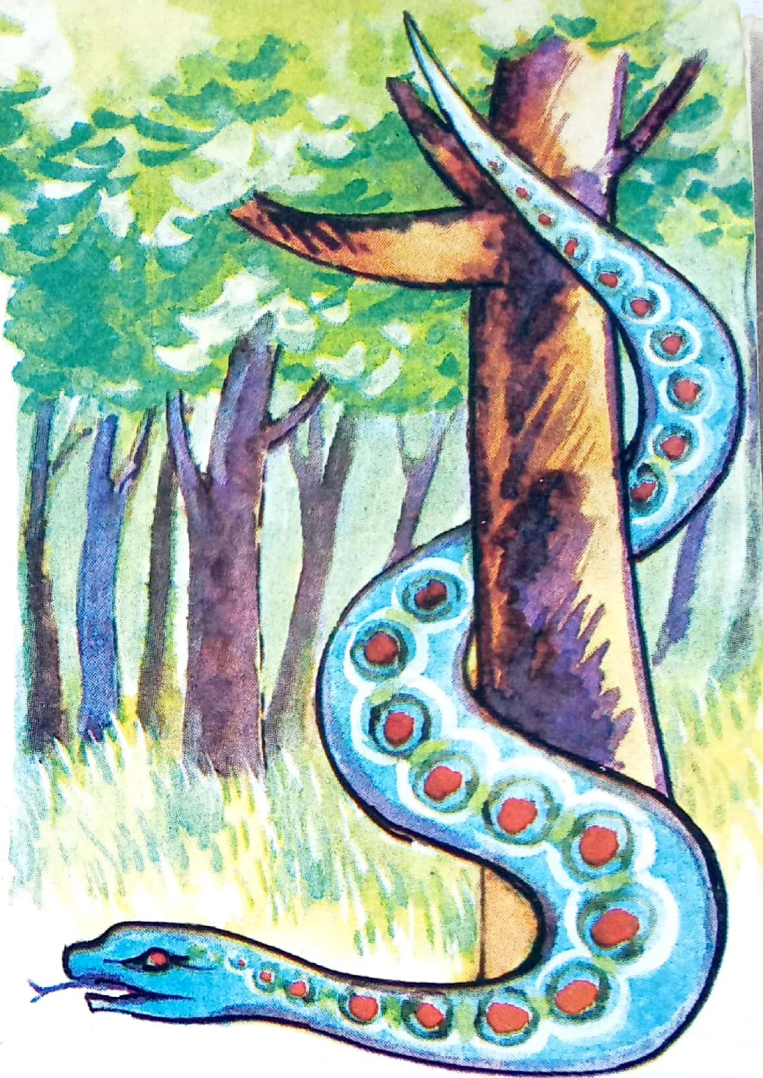
जग्गू की बांछें खिल गईं। उसने पेड़ काटने के लिए कुल्हाड़ी उठाई ही थी कि सामने एक काला नाग प्रकट हुआ। बोला—"खबरदार! इस पेड़ पर कुल्हाड़ी चलाई, तो अच्छा न होगा। यह हम नागों का सदियों से निवास स्थान है।"

जग्गू मन ही मन बहुत डरा, पर हिम्मत करके बोला—"सारा दिन भटकने के बाद यह पेड़ दिखाई दिया है। ऐसी लकड़ी और कहीं नहीं मिलेगी। मैं दो-चार टहनियां तो जरूर काटूंगा।"

"पेड़ काटना तो दूर, हम तुम्हें इसे छूने भी न देंगे।"—नाग ने कहा।

जग्गू बहुत गिड़गिड़ाया। उसने अपनी गरीबी की दुहाई दी। कहा—"जीवन में पहली बार पैसा कमाने का इतना अच्छा मौका मिला है।"

उसकी बात सुन, नाग सोच में पड़ गया। फिर बोला—"अच्छा, कुछ क्षण रुको।" इसके बाद नाग ने एक बड़ा, चमकदार मनका जग्गू को दिया। कहा—"इसे अपने गले में धागे से बांध लेना। इसे
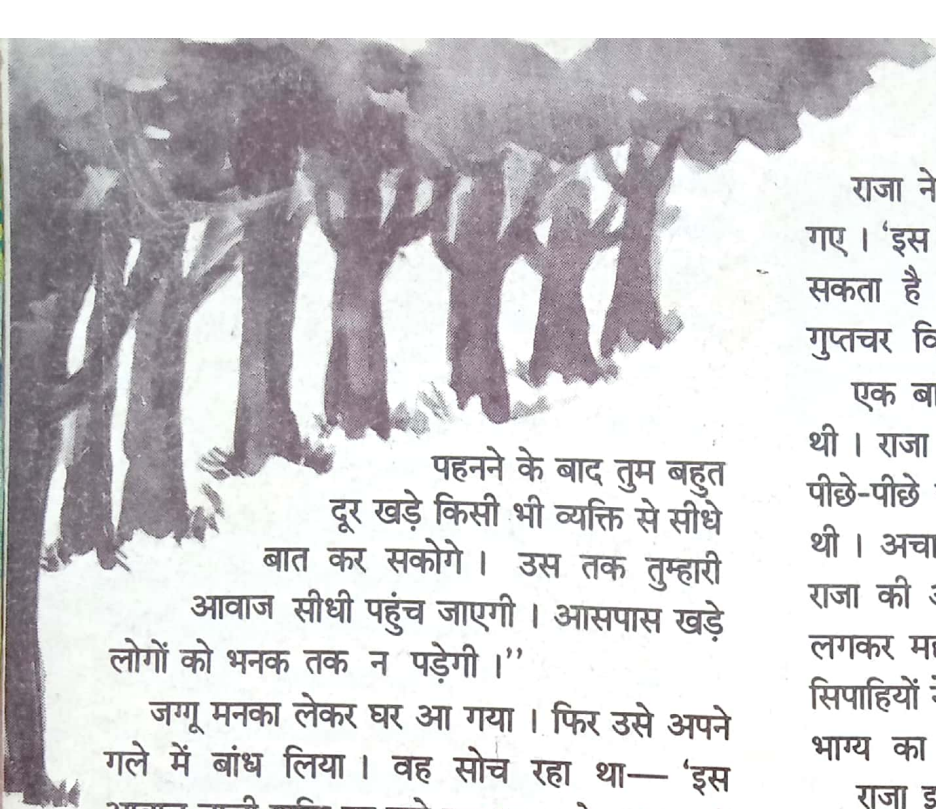
पहनने के बाद तुम बहुत दूर खड़े किसी भी व्यक्ति से सीधे बात कर सकोगे। उस तक तुम्हारी आवाज सीधी पहुंच जाएगी। आसपास खड़े लोगों को भनक तक न पड़ेगी।''

जग्गू मनका लेकर घर आ गया। फिर उसे अपने गले में बांध लिया। वह सोच रहा था— 'इस आवाज वाली शक्ति का मुझे क्या लाभ होगा ?' तभी उसने देखा कि उसकी पत्नी शांति घर के बाहर बैठी लकड़ी बेच रही है। वह एक ग्राहक को दाम बता रही थी। जग्गू ने सोचा— 'मनके की शक्ति को आजमाना चाहिए।' और वह चिल्ला पड़ा—''शांति, इस ग्राहक को लकड़ी महंगी बताना।''

आवाज सीधी शांति के कानों में पहुंची। पहले तो उसे समझ न आया कि जग्गू ने यह बात क्यों कही। पर उसने तुरंत दोगुनी कीमत बता दी।

ग्राहक राजा का मंत्री था। उसने कहा—''अभी तो तुमने लकड़ी सस्ती बताई थी और अचानक इतनी महंगी कर दी। ऐसा क्यों ?''

शांति को कोई उत्तर न सूझा।

यह देख जग्गू आगे आया। बोला—''साहब, गलती मेरी है। मैंने ही शांति से दाम बढ़ाने को कहा था। पर इस नासमझ ने तो दोगुने ही कर दिए।''

''लेकिन तुमने कब कहा ? मैंने तो सुना नहीं।''—मंत्री ने पूछा।

और कोई चारा न देख, जग्गू ने मंत्री को पूरी बात बता दी। सुनकर मंत्री बहुत चकित हुआ। कुछ सोचकर बोला—''अच्छा, कल तुम दरबार में आना।''

मंत्री ने सोचा— 'राजा को नया खेल दिखलाऊंगा। राजा खुश होकर मुझे इनाम देंगे।'

राजा ने मनके का कमाल देखा, तो सोच में पड़ गए। 'इस शक्ति का तो राज-काज में बहुत उपयोग हो सकता है।'—उन्होंने सोचा और जग्गू को अपने गुप्तचर विभाग में रख लिया।

एक बार की बात, राजा की सवारी निकल रही थी। राजा हाथी पर बैठे थे। जग्गू भी कुछ दूरी पर पीछे-पीछे चल रहा था। सड़क के दोनों ओर भीड़ थी। अचानक भीड़ में से एक तीर सनसनाता हुआ राजा की ओर आया। किंतु संयोग से राजा को न लगकर महावत के लग गया। हलचल मच गई। सिपाहियों ने तुरंत कुछ लोगों को गिरफ़्तार कर लिया। भाग्य का खेल। उनमें जग्गू भी था।

राजा इस घटना से बेहद घबरा गए थे। ये सब बातें सुनीं, तो जग्गू को नौकरी से निकाल दिया।

बदले की आग में जग्गू भड़क उठा।

राजा को शिकार का बहुत शौक था। वह अक्सर जंगल में शिकार खेलने जाते। एक दिन जग्गू जंगल में पहुंच गया। एक गहरा गड्ढा खोदा और उसमें नुकीले पत्थर व कांटे बिछा दिए। ऊपर से उसे पत्तों व घास-फूस से ढक दिया। फिर छिपकर मनके की सहायता से राजा के कान में शेर की दहाड़ भेजने लगा। राजा आवाज की दिशा में चल पड़े। जग्गू रह-रहकर शेर की आवाज निकालता।

शेर को मारने की धुन में राजा बिना सोचे-समझे तेजी से बढ़ते गए। लेकिन गड्ढे के किनारे तक आकर राजा रुक गए। कुछ क्षण इधर-उधर नजर दौड़ाई। फिर घोड़ा वापस मोड़कर लौट गए।

जग्गू के आश्चर्य की सीमा न रही। वह समझ न पाया कि अचानक राजा ने आवाज पर ध्यान देना क्यों बंद कर दिया।

अचानक ही काला नाग जग्गू के सामने प्रकट हुआ। बोला—''मनके की शक्ति मैंने तुम्हें इसलिए दी थी कि तुम अपनी गरीबी दूर करो। दूसरों का भी भला करो। परंतु तुमने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। मैं तुमसे यह शक्ति वापस लेता हूं।''

अपनी करनी पर पछताता हुआ जग्गू वापस घर की ओर चल पड़ा। ●

रेत में पुतले

—डा. देवेन्द्र आर्य

रा सबसे बड़ा देवता था। उसने सबको बनाया-धरती, आकाश, पाताल, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी। सब कुछ बनाकर भी उसे कई बार सूना-सूना लगता।

एक दिन उसने फूलों से रंग लिया। उषा से ताजगी ली। सूरज से तेज और चंद्रमा से अमृत लिया। मोर से नाचना, हिरणों से चाल, कोयल से कुहुक और शेर से वीरता ली। इस प्रकार हर किसी से कुछ न कुछ लेकर, उसने एक नए जीव,आदमी का निर्माण किया।

फिर उसमें दया, परोपकार, सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि गुण भर दिए। एक दिन उसने सब देवताओं को बुलाया। उनका आदमी से परिचय कराया। फिर एक दिन रा ने आदमी को दुनिया में भेज दिया।

आदमी के आने से दुनिया की रंगत ही बदल गई। रा की इस नई रचना को सबने सर्वश्रेष्ठ मान लिया। आदमी सबको देखता और खुश होता। वह सबके सुख-दुःख में हाथ बटाता।

वर्षों बीत गए। सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। एक दिन रा को कुछ बेचैनी-सी महसूस हुई। हवा ने उसके कान में आकर कहा—''रा देवता ! आपका बनाया आदमी अब बहुत बदल गया है। आज सारी दुनिया उससे परेशान है।''

रा परेशान हो उठा। उसका विश्वास डगमगाने लगा। उसने चिड़िया, वर्षा और नदी को सही बात की जानकारी के लिए भेजा। स्वयं भी वेश बदल कर घूमने निकल गया।

एक महीने बाद, जब सब दुबारा मिले, तो सबके मुख पर एक ही बात थी—'सृष्टि की सर्वोत्तम रचना होने के अभिमान में आदमी ने तरह-तरह के अत्याचार करने शुरू कर दिए हैं। वह अन्यायी, पापी, कठोर और हिंसक बन गया है।'

''ठीक है, मुझे आदमी को खत्म करना ही होगा।''—रा ने फैसला सुनाया। लेकिन देवताओं ने राय दी—''अपनी सृष्टि को खुद नष्ट करना ठीक नहीं रहेगा। अपराध करके आदमी रेगिस्तान में जा छिपा है। आप यह काम देवी हाथोर को सौंप दें।'' रा को देवताओं की यह सलाह पसंद आ गई।

रा ने देवी हाथोर को बुलाया। अपनी समस्या उसे बताई। देवी सोचती हुई बोली—''महाराज ! मैं तो दया-ममता की देवी हूं ! मुझसे यह काम... ?''

—''जानता हूं हाथोर ! पर आदमी को नष्ट करने का यह काम तुम्हें करना होगा।''

बहुत सोचने के बाद, देवी हाथोर ने यह काम अपने हाथ में ले लिया। आदमियों को यह पता लगा, तो उनमें हड़कम्प मच गई। वे सुरक्षित स्थान की तलाश में भटकने लगे। हाथोर की नजर से आदमी कैसे बचता ? वह हाथ हिलाती और आदमी वहीं ढेर हो जाता।

लगातार अपने वंश का नाश होते देख आदमी को चिंता हुई। वह सोचता—'अगर इसी तरह हाथोर आदमियों का विनाश करती रही, तो एक दिन आदमी का नामो-निशान ही मिट जाएगा।' उसे अपनी गलती का अहसास था। पर अब करे क्या ? उसने मन ही मन रा से प्रार्थना की।

उधर हाथोर आदमियों को मारती जा रही थी। एक दिन वह इसी चिंता में डूबा था। उसे हलकी-सी झपकी लग गई। कोई हौले-हौले जैसे उसके कान में

कह रहा था— 'मुसीबत से छुटकारा पाना है, तो दयापरी के पास जा। दयापरी के पास जा... ।' हड़बड़ाकर उसने आंखें खोलीं और कहा—"दयापरी ! दयापरी ! पर वह मिलेगी कहां ?"

पेड़ पर बैठे सफेद कबूतर ने कहा—"मैं जानता हूं दयापरी को ।"

कबूतर ने कहा—"मैं तुम्हें दयापरी के पास ले चलता हूं। मेरे कहने पर आंखें खोलना ।" थोड़ी देर बाद कबूतर के कहने पर उसने आंखें खोलीं, तो अपने आपको दयापरी के सामने खड़ा पाया। दयापरी ऊपर से नीचे तक सफेद मलमल में लिपटी हुई थी। कंधे पर छोटे-छोटे सुनहरे पंख थे। चेहरे पर अद्‌भुत तेज था। वह सुध-बुध खो बैठा। तभी दयापरी की आवाज गूंज उठी—"आदमी ! क्यों आए हो मेरे पास ?"

आदमी सिर नीचा किए खड़ा था। फिर बोला—"दयापरी ! मैं पापी हूं। बहुत अत्याचार किए हैं मैंने। मैं अनजाने में गलतियां करता रहा। अब कभी गलत काम नहीं करूंगा ।"

दयापरी का दिल पसीज गया। उसने कहा—"ठीक है, मैं रा से तुम्हारे अपराधों को क्षमा करने की सिफारिश करूंगी ।" अगले दिन दयापरी ने देवता रा से भेंट कर आदमी के अपराध क्षमा करने की प्रार्थना की। रा ने कहा—"दयापरी ! मैंने आदमी की प्रार्थना सुनी है। तुम जानती हो कि हाथोर भी दया, करुणा, ममता की देवी है। परंतु मेरी आज्ञा से वह आदमी का विनाश कर रही है। अब तुम्हीं बताओ कि मैं उसे कैसे मना करूं ?" कुछ देर चुप रहने के बाद रा ने कहा—"दयापरी ! आदमी ने मेरे साथ छल किया है। उसे अपनी करनी का फल तो मिलना ही चाहिए ?"

—"नहीं रा देवता ! आदमी को एक बार सुधरने का मौका मिल जाए, तो ठीक रहेगा। यह आपकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। अगर आदमी मिट गया, तो आप पर क्या गुजरेगी।" रा कुछ सोचने पर मजबूर हो गया। अच्छा मौका देखकर दयापरी ने रा के कान में कुछ कहा। फिर चुपके से उठकर बादलों में अदृश्य हो गई।

दयापरी की तरकीब सुन रा की आंखों में चमक आ गई। वह चुपके से रात के अंधेरे में रेगिस्तान में उतरा। रेत के असंख्य पुतले बनाकर उनमें प्राण फूंक दिए। सुबह हाथोर ने रेगिस्तान में बहुत से आदमियों को रेंगते देखा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि रातों-रात इतने आदमी कहां से आ गए ? कुछ झुंझलाते हुए उसने हाथ घुमाया। आदमी के पुतले वहीं ढेर हो गए।

अगले दिन हाथोर ने फिर असंख्य पुतले रेगिस्तान में रेंगते देखे। हाथोर के हाथ हिलाते ही वे पुतले ढेर हो गए। एक दिन सुबह हाथोर ने देखा कि रेगिस्तान में एक भी पुतला नहीं है। पांच-छह दिनों तक कोई पुतला नजर नहीं आया, तो हाथोर को विश्वास हो गया कि सारे आदमी मारे जा चुके हैं। काम पूरा करने की खुशी में वह रा के दरबार में आई। रा ने उसे शाबाशी देते हुए कहा—"हाथोर ! तुमने दुष्ट आदमी को अच्छी सजा दी है। अब जाकर आराम करो ।"

चेहरे पर विजयी मुसकान लिए हाथोर चली गई। रा ने संतोष की सांस ली। उसने मन ही मन दयापरी को भी धन्यवाद दिया। उसी की तरकीब से वह हाथोर के सामने आगा-पीछा सोचने से बच गए थे। पर एक कांटा भी उसके दिल में खटक रहा था—'आदमी को अपने किए की सजा मिल गई है। वह अपने आप में शर्मिंदा है। लेकिन भविष्य किसने देखा है ? पता नहीं, कब आदमी का अहंकार जाग जाए ?'

काफी देर सोचने के बाद, उसने आदमी को बुलाया और कहा—"देखो, दयापरी के कहने पर मैं तुम्हें माफ कर देता हूं। लेकिन याद रखना—हाथोर तुमसे ज्यादा दूर नहीं है। भविष्य में तुमने अत्याचार किया, तो हाथोर के हाथों बेमौत मारे जाओगे ।"

आदमी ने सदा अच्छा बना रहने की प्रतिज्ञा की। वह रा का आशीर्वाद लेकर धरती पर पहुंचा। रा खुश था। हाथोर को रा और दयापरी की योजना का पता नहीं लगा।

(मिस्र)

सुनहरी मछली

—अमर गोस्वामी

राजकुमार चंद्रवदन एक दिन शिकार खेलते हुए जंगल में रास्ता भटक गया। शाम हो गई थी। वह थककर नदी किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गया। अचानक उसके कानों में एक स्त्री के गाने की आवाज आई। वह चौंका—'इस जंगल में इतना मधुर गीत कौन गा रही है?' गीत की दिशा में वह चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर उसने देखा, नदी के किनारे एक पत्थर पर बैठकर सुनहरे रंग की एक परी अपनी धुन में खोई हुई गीत गा रही है। राजकुमार चंद्रवदन मुग्ध होकर उस परी को देखता रह गया।

अचानक सुनहरी परी की निगाह राजकुमार पर पड़ी। वह घबरा गई। तुरंत पानी में कूद गई। पानी में जाते ही वह सुनहरी मछली में बदल गई। वह पानी में तरह-तरह के करतब दिखाने लगी। अभी-अभी एक सुंदर परी को इतनी सुंदर मछली में बदलते देखकर राजकुमार चकित रह गया। तभी उसने एक विशालकाय मगरमच्छ को अपना जबड़ा खोलकर उस सुनहरी मछली के पास आते हुए देखा। अपने सामने खतरे को देखकर सुनहरी मछली घबरा गई। राजकुमार ने झट तरकस से तीर निकालकर उस मगरमच्छ को मार डाला। सुनहरी मछली बहुत खुश हुई। उसने तट पर आकर राजकुमार को धन्यवाद दिया। फिर पानी में गायब हो गई।

राजकुमार अपने राजमहल में लौट गया। पर उसका मन सुनहरी परी की ओर ही लगा रहा। शाम होते ही वह फिर घोड़ा दौड़ाते हुए नदी तट पर आ पहुंचा। टाप की आवाज सुनते ही सुनहरी मछली पानी की सतह पर आ गई। राजकुमार को देखकर वह भी बहुत खुश हुई और लहराते हुए तैरने लगी। एक मछेरे ने अपना जाल फैला रखा था। सुनहरी मछली उसमें फंस गई और तड़पने लगी। राजकुमार उसे बचाने के लिए दौड़ा। तलवार से जाल काटकर उसने सुनहरी मछली को आजाद कर दिया।

आजाद होते ही सुनहरी मछली फिर परी में बदल गई। उसने दो बार जान बचाने के लिए राजकुमार को धन्यवाद दिया। राजकुमार की इच्छा थी कि परी उसके साथ राजमहल में चले। पर सुनहरी परी तैयार नहीं हुई। वह आजाद रहना चाहती थी। उसने राजकुमार को समझाया। इस बार वह एक हंसिनी बनकर आसमान में उड़ गई।

रास्ते में जाते-जाते अचानक एक शिकारी की नजर उस पर पड़ी। उसके सुनहरे डैनों को देखकर उसने अपना तीर चला दिया। सुनहरी हंसिनी का भाग्य अच्छा था। तीर उसे लगा नहीं। वह बच गई।

उड़ते-उड़ते उसकी नजर एक हरे-भरे घने छायादार पेड़ पर पड़ी। पेड़ फूलों से भरा हुआ था। उसे वह दृश्य बहुत अच्छा लगा। सुनहरी परी ने सोचा—'क्यों न मैं भी एक फूल बन जाऊं?'

आधी रात को कुछ डाकू वहां से गुजरते हुए, उस पेड़ के नीचे आकर आराम करने लगे। अचानक एक डाकू की नजर उस पेड़ पर लगे एक ऐसे फूल पर पड़ी, जो सितारे की तरह चमक रहा था। लग रहा था, कोई सोने का सितारा आसमान से उतरकर पेड़ पर लटक गया है! उसने अपने साथियों को यह दृश्य दिखाया। डाकुओं के मन में उस सुनहरे फूल को पाने का लोभ जाग गया। तुरंत एक डाकू सुनहरे फूल को तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ गया।

फूल परी समझ गई कि डाकू की नीयत अच्छी नहीं है। डाकू के हाथ में एक डंडा था। उसने फूल तोड़ने के लिए डंडे से चोट की। फूल परी कुछ दूर खिसक गई। डाकू बार-बार फूल तोड़ने के लिए आगे बढ़ता रहा। फूल परी भी उसे खिजाने के लिए शाख पर आगे-पीछे, ऊपर-नीचे बार-बार अपना स्थान बदलती रही। हैरान डाकू थककर फूल परी के उस अनोखे करतब से घबरा गया और जमीन पर गिर पड़ा।

उसे जमीन पर गिरता देखकर दूसरे डाकू उसका मजाक उड़ाने लगे। इस बार एक दूसरा डाकू अपनी मूंछें ऐंठता हुआ सुनहरे फूल को तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ गया। आखिरकार वह भी पहले डाकू की तरह थककर जमीन पर गिर पड़ा। नीचे से दूसरे डाकुओं

को पेड़ के ऊपर फूल परी का खेल नजर नहीं आ रहा था। वे समझ नहीं पा रहे थे, बात क्या है ?

इस बीच सुबह हो गई। संयोग से राजकुमार चंद्रवदन उधर से गुजर रहा था। डाकुओं ने राजकुमार को देखा, तो उन्होंने सोचा—'शायद राजकुमार हमें पकड़ने आया हो !' उन्होंने राजकुमार पर हमला बोल दिया। राजकुमार ने उन डाकुओं का डटकर मुकाबला किया। घायल होकर सारे डाकू वहां से भाग गए। उस मुकाबले में राजकुमार भी घायल हो गया था।

फूल परी को राजकुमार पर बहुत तरस आया। वह फिर से परी बन गई। उसने उसी पेड़ की कुछ पत्तियों के रस को निचोड़कर राजकुमार के घावों पर लगाकर हाथ फेरा। राजकुमार भला-चंगा हो गया।

अपने सामने सुनहरी परी को देखकर राजकुमार बहुत खुश हुआ। राजकुमार ने फिर परी को अपने साथ राजमहल में चलने के लिए कहा। अपने पिता की मृत्यु के बाद अब वह राजा हो गया था। सुनहरी परी ने कहा—"अगर आप हमेशा प्रजा की भलाई के लिए काम करते रहें, तो मैं आपके साथ रानी बनकर रह सकती हूं।"

चंद्रवदन ने उसकी बात मान ली। उन दोनों की शादी धूमधाम से हुई। उस राज्य की प्रजा इतनी सुंदर महारानी को देखकर खुशी से पागल हो उठी। मगर चंद्रवदन के दरबार में कुछ ऐसे भी लोग थे, जो राजा के भाग्य से जलते थे। उन्होंने अपनी सुंदर रानी के खिलाफ तरह-तरह की अफवाहें उड़ानी शुरू कर दीं। उनका कहना था—'इतनी सुंदर औरत कोई मानवी हो ही नहीं सकती।'

रानी बनी सुनहरी परी के कानों में ये बातें पहुंचीं, तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसने राज्य को छोड़कर वापस चले जाने की राजा से आज्ञा मांगी। मगर राजा ने समझा-बुझाकर सुनहरी रानी के मन को धीरज बंधाया। उसने अफवाह उड़ाने वाले दरबारियों को पकड़कर कड़ा दंड दिया।

उसमें से एक दरबारी किसी तरह भागकर पड़ोसी राज्य में पहुंच गया। वहां का राजा बड़ा लोभी था,

उस राजा से उस दरबारी ने सुनहरी रानी के रूप की इतनी प्रशंसा की कि वह राजा उसे पाने के लिए चंद्रवदन पर चढ़ाई करने के लिए तैयार हो गया। एक बड़ी फौज लेकर उसने हमला बोल दिया।

घमासान युद्ध हुआ। तेरह रात और तेरह दिन तक बर्छे और तलवारें टकराती रहीं। आखिरकार पड़ोसी राजा को मुंह की खानी पड़ी। चंद्रवदन के भाले की चोट से उसकी एक आंख चली गई। अच्छा-भला राजा काना होकर अपनी सारी फौज गंवाकर किसी तरह जान बचाकर भाग आया।

पर चंद्रवदन जीतकर भी हार गया। किसी विश्वासघाती ने छिपकर उस पर ऐसा वार किया कि वह स्वर्ग सिधार गया।

परी रानी दुःख से भर गई। राजा चंद्रवदन के न रहने पर उसके लिए कैसा राज और कैसा पाट !

जब कभी सुनहरी परी बहुत व्याकुल हो जाती है तो वह इंद्रधनुष बनकर धरती पर झांकने लगती है। उसे धरती की बातें याद आती हैं, तो उसकी आंखों से आंसू की झड़ी लग जाती है !

धरती के लोग सोचते हैं, बरसात हो रही है।●

बौनों का पहाड़

—हेरमन हेस्से

एक गांव में दो भाई रहते थे। उनमें से बड़ा भाई काफी बलशाली था, छोटा लंगड़ा व कमजोर। बड़ा भाई बलवान होने के कारण अक्सर छोटे पर जुल्म करता, झिड़कियां देता। इस बर्ताव के कारण छोटा भाई बहुत दुखी रहता था।

एक दिन तो बस हद ही हो गई। बड़े भाई ने किसी बात पर नाराज होकर छोटे भाई को घर से निकाल दिया। छोटे ने बड़े हाथ-पैर जोड़े, माफी मांगी। किंतु बड़े भाई का दिल न पसीजा। अंत में छोटा भाई भाग्य के भरोसे चल दिया। उसे अपनी अच्छाई व ईश्वर के न्याय पर भरोसा था।

रास्ते में चलते-चलते उसे एक किसान मिला। वह बैलगाड़ी में अनाज की बोरियां लादे कहीं जा रहा था। छोटे भाई ने पूछा—"भइया, आप कहां जा रहे हैं ?"

किसान ने बताया—"मैं बौनों के पहाड़ पर जा रहा हूं। मुझे उनका अनाज पहुंचाना है।"

इस पर छोटे भाई ने प्रार्थना की कि वह उसे भी बौनों के पहाड़ पर ले चले। किसान ने पहले तो बहुत आनाकानी की, किंतु बाद में मान गया। साथ ही उसने कह भी दिया—"मैं तुम्हें ले तो जा रहा हूं, किंतु बौने अजीब स्वभाव के हैं। तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह मैं खुद भी नहीं जानता।"

बैलगाड़ी पर बैठ, वे लम्बी, थका देने वाली यात्रा के बाद बौनों के पहाड़ पर पहुंचे। किसान बैलगाड़ी से उतरकर पहाड़ से बनी एक गुफा के पास गया। वहां खड़े होकर चिल्लाया—"मैं आ गया हूं। अनाज ले लीजिए।"

जल्दी गुफा में एक द्वार खुल गया। उसमें से एक व्यक्ति बाहर आया। यह व्यक्ति लम्बा था। लग रहा था कि यह बौनों का सेवक है।

जब सारा सामान उतर चुका, तो उस व्यक्ति का ध्यान छोटे भाई की तरफ गया। उसने किसान से उसके बारे में पूछा। किसान ने सारी बात बता दी। उसने बौनों से मिलने की छोटे भाई की इच्छा भी उसे बता दी। वह व्यक्ति अंदर गया। फिर कुछ ही देर में उसे ले जाने के लिए वापस आया।

बौनों ने छोटे भाई की कहानी सुनी, तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने उसे अपने पास ही रख लिया। इस पहाड़ में जगह-जगह हीरों की खानें थीं। बौनों ने उनकी देखरेख का काम उसे सौंप दिया।

इस बीच युद्ध छिड़ गया। बड़े भाई को लड़ाई में जाना पड़ा। लड़ाई के दौरान वह अपने हाथ खो बैठा। अब उसकी शारीरिक शक्ति किसी काम की न थी। जगह-जगह वह ठोकरें खा रहा था। भीख मांगकर पेट भरता था।

ऐसे ही एक दिन भीख मांगता हुआ, वह बौनों के पहाड़ की ओर आ निकला। छोटे भाई ने उसे देखते ही पहचान लिया, किंतु बड़ा भाई नहीं पहचान पाया। उसकी हालत देख, छोटे भाई को बड़ा दुःख हुआ। बड़े भाई ने जब उससे भीख मांगी, तो उसके आंसू आने लगे, किंतु वह उन्हें छिपा गया।

भाई को लेकर वह हीरों की खान में गया। चारों तरफ हीरे जगमगा रहे थे। छोटे ने कहा—"तुम यहां से जितने चाहो, हीरे ले जा सकते हो।"

किंतु भला वह हीरे कैसे लेता ! हाथ तो थे ही नहीं। छोटे ने फिर कहा—"तुम चाहो, तो अपनी मदद के लिए अपने भाई को बुला सकते हो।"

यह सुनकर बड़ा भाई रो पड़ा। बोला—"मेरा एक ही छोटा भाई था। वह बहुत नेक व आज्ञाकारी था, किंतु मैंने ही उसे ताकत के घमंड में घर से निकाल दिया था। यदि वह आज होता, तो मेरी मदद जरूर करता।" इतना कहते ही उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

बड़े भाई की आंखों में आंसू देख, छोटे भाई के भी आंसू निकल पड़े। उसने अपना परिचय दिया। बोला—"मैं आपका ही छोटा भाई हूं।" उसने अपने भाई को अपने ही पास पहाड़ पर रख लिया। दोनों वहीं सुखपूर्वक रहने लगे। **प्रस्तुति : महेश दत्त**

(जर्मनी)

दाना बना मोती

—दिलकुमारी भंडारी

सिक्किम के एक गांव में नीमा नाम का एक गरीब युवक रहता था। वहां के पहाड़ों में एक चिड़िया पाई जाती है, जिसे गौंथली कहते हैं। ये चिड़ियां, बसंत के आते ही कहीं से पहाड़ी प्रदेशों में आ जाती हैं। और घर-घर में घोंसला बनाती हैं। फिर अंडे देती हैं, जिसमें से प्यारे-प्यारे बच्चे निकलते हैं।

एक बार बसंत के मौसम में नीमा की छोटी-सी झोंपड़ी में भी गौंथली ने घोंसला बनाया। एक दिन नीमा ने देखा कि घोंसले से चिड़िया का एक बच्चा नीचे गिरा पड़ा था। उसने झट से उस बच्चे को उठाकर देखा। बच्चे के पांव में चोट लग गई थी। नीमा ने उसकी मरहम-पट्टी कर दी। फिर चिड़िया के उस बच्चे को वापस उसके घोंसले में रख दिया।

कुछ दिन बाद, जब नीमा घोंसले के नीचे खड़ा था, मक्का का एक दाना उसके पांव के पास आ गिरा। नीमा ने दाने को हाथ में उठाया। सोचा—'अब इस एक दाने का क्या होगा ? इसे अपने खेत में बो देता हूं।' उसने उसे खेत में बो दिया। एक सुबह, नीमा ने देखा कि मक्का का वह दाना—एक अच्छा-खासा पौधा बन चुका था। और देखते ही देखते, औरों की मक्का की फसल की तुलना में वह पौधा बहुत जल्दी बड़ा हो गया। उसमें एक भुट्टा भी निकल आया। नीमा ने जब भुट्टे के पत्तों को छीलकर हटाया, तो देखा—उसमें मोती के दाने थे।

नीमा ने सोचा—'अब तो चिड़िया भी वापस जा चुकी है, किसे धन्यवाद दूं ? चलो, इन मोतियों को बेचकर अपनी गरीबी ही दूर कर लेता हूं।' नीमा ने उन मोतियों को बेचा। उन पैसों से घर बनवाया। कुछ और खेत खरीदे।

नीमा के पड़ोस में ही दावा नाम का एक युवक रहता था। उसने जब नीमा को रातों-रात अमीर होते देखा, तो उसने उससे पूछा। नीमा ने दावा को सारी

बातें बता दीं। अब तो दावा अगले बसंत की बाट जोहने लगा। बसंत के आते ही फिर चिड़ियां लौटीं। दावा के घर में भी एक चिड़िया ने घोंसला बनाया। दावा रोज देखता कि अंडे से बच्चा निकला या नहीं।

एक दिन सुबह—जब उसकी आंखें खुलीं, तो घोंसले से उसे नन्ही चिड़ियों की आवाजें सुनाई दीं। बस, दावा ने झट से खिड़की पर चढ़कर घोंसले से चिड़िया के एक बच्चे को निकाला और जान-बूझकर उसे नीचे गिरा दिया। फिर उतरकर उसकी मरहम-पट्टी भी की। फिर वह हर रोज घोंसले के नीचे जाकर खड़ा हो जाता। मक्का के दाने का इंतजार करता। आखिर एक दिन वह दाना गिर ही गया। दावा ने झट उसे खेत में बो दिया। वह बहुत जल्दी एक बड़ा पौधा बन गया। उसमें एक भुट्टा भी निकल आया। दावा मन ही मन बड़ा खुश था। जब उसने उस भुट्टे को छीलकर देखा, तो पाया कि मोती तो दूर-मक्का के दाने भी नहीं थे उसमें। उसमें कीड़े-मकोड़े भरे हुए थे। वह बड़ा निराश हुआ। ●

सुख ही सुख

—सुषमा स्वराज

एक बार की बात है। कोई मां और बेटी एक छोटे-से मकान में रहती थीं। पिता का देहांत हो जाने के कारण, बेटी के लालन-पालन की पूरी जिम्मेदारी मां पर थी। मां एक सेठ के घर में काम करती। जो कुछ कमाती, उससे अपनी बेटी के लिए सुख-सुविधाएं जुटाती। प्यार से उसने बेटी का नाम रानी रख दिया था। पांच वर्ष की अवस्था में रानी की मां ने नजदीक के एक स्कूल में उसका नाम लिखा दिया। जिस दिन स्कूल की छुट्टी होती, मां रानी को अपने साथ सेठ के घर ले जाती।

सेठ के घर का वैभव देखकर, रानी बहुत चकित होती। वह सोचती कि क्या अच्छा होता कि उसके पास भी ये सब सुख-सुविधाएं होतीं।

एक रात रानी सोई थी। उसे सपने में एक परी दिखाई दी। सुंदर कपड़े पहने, गहनों से सजी, पंख फैलाए परी जमीन पर उतरी। वह रानी से बोली—"तुम पकवान खाना चाहती हो? क्या तुम आलीशान महल में रहना चाहती हो? मोतियों से सजी सेज पर सोना चाहती हो?" रानी एकदम उछलकर बोली—"हां-हां, मैं यह सब चाहती हूं, मगर यह सब मुझे मिलेगा कैसे?"

परी ने कहा—"तो आओ मेरे साथ। मैं पंख फैलाऊंगी, तुम उन पर बैठ जाना। मैं तुम्हें लेकर उड़ जाऊंगी और परी महल में पहुंचा दूंगी। वहां हमारी

महारानी रहती हैं। बहुत-सी और परियां भी वहां रहती हैं। तुम उन सबसे मिलकर बहुत खुश होगी। उस परी महल में तुम्हारी सारी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी।" परी की यह बात सुनकर, रानी बहुत खुश हुई और बोली—"फैलाओ पंख। मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।" परी ने पंख फैलाए रानी उन पर बैठ गई। परी ने रानी को परी महल में पहुंचा दिया।

परी महल का वैभव देखकर रानी चौंक गई। इतनी आकर्षक साज-सज्जा उसने पहले कभी नहीं देखी थी। सेठ का घर उसे आज बिल्कुल फीका लग रहा था। रंग-बिरंगे प्रकाश से जगमगाता यह महल उसकी कल्पना से परे था। परी ने रानी को अन्य परियों से मिलाया। फिर उसे अपनी महारानी के पास ले गई। महारानी ने उसे देखते ही पूछा—"तो तुम्हारा ही नाम रानी है! तुम यह सब सुख-सुविधाएं पाना चाहती थीं ना, इसीलिए हमने तुम्हें यहां बुला भेजा। अब यहां आराम से रहो।"

महारानी ने एक परी की ओर संकेत करके कहा—"जाओ, रानी को सबसे सुंदर कमरे में ले जाओ। खूब अच्छा भोजन कराओ। खूब घुमाओ। परी महल की सैर कराओ। जब यह थकने लगे, तो नरम-नरम बिस्तर पर सुला दो।" रानी यह सब सुनकर, खुशी से फूली नहीं समा रही थी। मखमली फर्श पर उसके पांव टिक नहीं पा रहे थे।

रानी ने सुगंधित जल से स्नान किया। सुंदर रेशमी वस्त्र पहने। फिर भोजन करने के लिए बैठ गई। चांदी की थाली में सजे पकवान देखकर उसके मुंह में पानी भर आया। एक के बाद एक पकवान वह चखती चली गई। इससे ही उसका पेट भर गया। खा-पीकर, रानी परी महल की सैर करने निकली। रंग-बिरंगे जल के फव्वारों से सजे बाग-बगीचे देखकर वह खुशी से नाचने लगी। नाचते-नाचते रानी थक गई। वह साथ आई परी से बोली—"मैं थक

गई हूं। मुझे नींद आ रही है।" परी रानी को एक कमरे में ले गई। वहां मोतियों की लड़ियां लटक रहीं थीं। सुंदर गद्देदार बिस्तर लगा था। परी ने रानी से कहा—"यही है तुम्हारा सोने का कमरा। जाओ, बिस्तर पर सो जाओ।" रानी ने परी से कहा—"तुम मेरे पास सो जाओ। मुझे लोरी सुनाओ। बिना लोरी सुने, मुझे नींद नहीं आती। मेरी मां मुझे रोज लोरी देकर सुलाती थी।" यह सुनकर परी खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली—"अरे, हम क्या जानें, मां कैसे सुलाती है ? हमने न मां देखी है, न हम मां बनी हैं। हमें नहीं पता, मां की ममता क्या होती है ? यहां सारे सुख, सारी सुविधाएं तो मिलेंगी। लेकिन लोरी सुनाकर सुलाने वाली यहां कोई नहीं है। चलो, सो जाओ।" इतना कहकर परी रानी के कमरे का दरवाजा बंद करके चली गई।

रानी एकदम अधीर हो उठी। उसे मां के बिना सोने की आदत नहीं थी। वह रोने लगी। उसे मां की याद सताने लगी। रोते-रोते उसकी सिसकियां बंध गईं। वह एक ही बात बोलती जा रही थी—"मुझे नहीं रहना यहां। मुझे मेरी मां के पास ले चलो। मुझे नहीं चाहिएं ये खाना, ये कपड़े। मुझे मेरी मां के पास छोड़ आओ।"

मां ने उसकी बड़बड़ाहट सुनी, तो तुरंत कमरे में दौड़ी आई। मां ने देखा—रानी का चेहरा आंसुओं से तर-बतर था। वह बार-बार कह रही थी— 'मुझे मेरी मां चाहिए। मुझे मेरी मां चाहिए।' मां ने उसके सिर पर हाथ रखा। वह बोली—"मैं यहीं तो खड़ी हूं। बेटी, मैं कहां गई हूं, क्या हो गया है तुझे ?" रानी ने आंखें खोलीं। उसने मां को सामने खड़ा पाया, तो वह उससे लिपट गई। वह बोली—"मुझे परी महल नहीं जाना है। मैं यहीं रहूंगी, अपनी मां के पास। मां की गोदी में जो सुख मिलता है, वह उस परी महल में भी नहीं है।" मां ने पूछा—"यह सब तू क्या कह रही है ?" रानी ने सपने के परी महल की सारी कहानी मां को सुनाई। फिर सुनाते-सुनाते मां की गोदी में सिर रखकर सो गई। ●

दिखो, क्या क्या लाई गरमी
आई गरमी
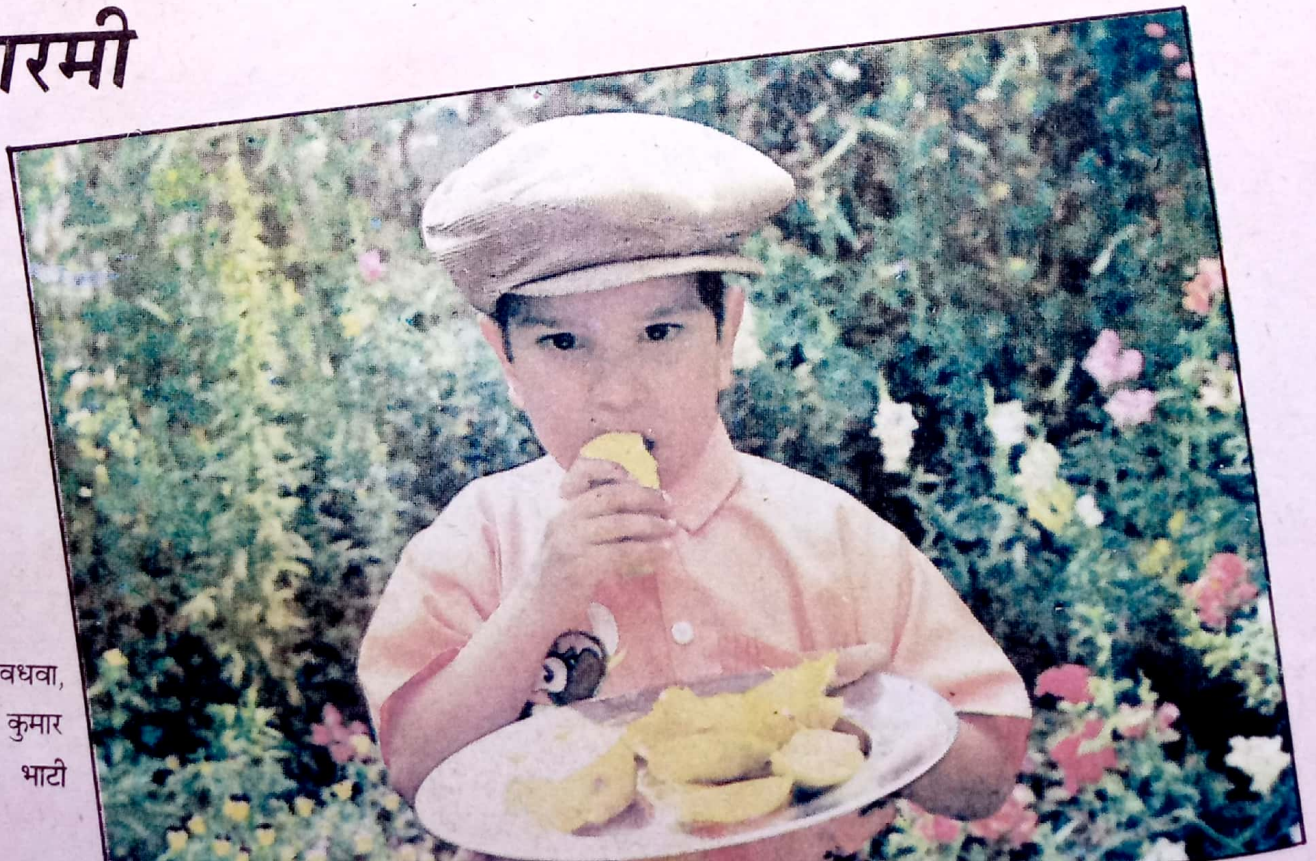
त्र : राजेन्द्रकुमार वधवा,
सुशील कुमार
लियाकत अ. भाटी
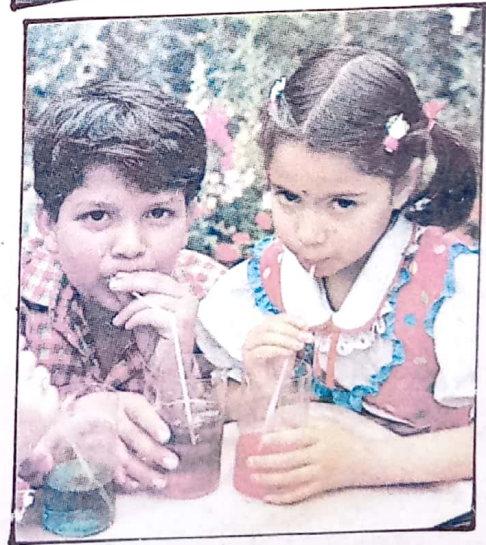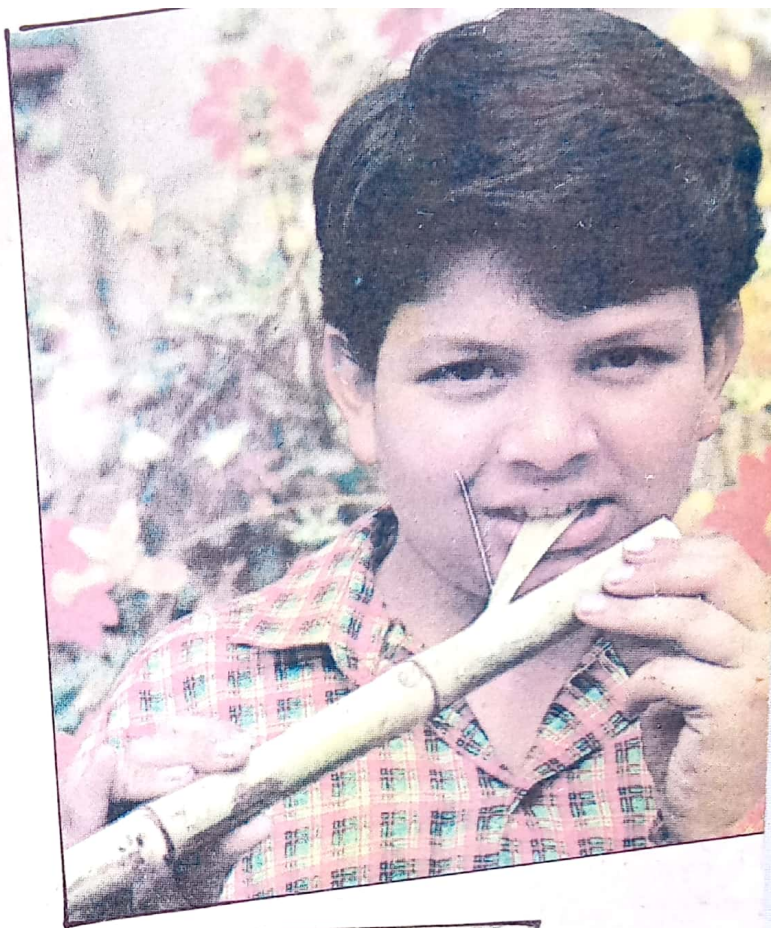
चांद सी बिटिया

—सीताराम खोड़ावाल

बहुत पुराने समय की बात है। एक छोटे से द्वीप में एक रानी राज करती थी। वह विधवा थी। उसके एक बेटी थी, चांद जैसी सुंदर। रानी को हर समय चिंता सताती रहती कि बड़ी होने पर बिटिया कहीं क्रीट की रानी की ईर्ष्या का शिकार न हो जाए। क्रीट की रानी बहुत घमंडी और जादूगरनी थी। वह अपने आपको संसार में सबसे सुंदर मानती थी। हर समय उसकी यही कोशिश रहती कि कोई उससे सुंदर न हो।

क्रीट की रानी ने अपने जादू से आसपास के द्वीपों के राजाओं को युद्ध में हरा दिया था। उनको इस बात के लिए मजबूर कर दिया था कि वे अपनी हर बेटी को, पंद्रह साल की उम्र होते ही, क्रीट के राजमहल में हाजिर करें। इस प्रकार क्रीट की रानी अपने से सुंदर राजकुमारी को पहचान लेती थी। उस पर अपना छमाही जादू डाल देती थी। जिससे छः माह के अंदर ही अंदर वह राजकुमारी चल बसती थी।

छोटे द्वीप की रानी समझती थी कि इस आदेश के पीछे क्या चाल है। फिर भी उसने यह निश्चय कर रखा था कि जैसे ही उसकी बेटी पंद्रह साल की होगी, वह उसे क्रीट के महल में ले जाएगी। और उसने ऐसा ही किया। उसकी बेटी पंद्रह साल की हुई, तो वह उसे क्रीट के राजमहल में ले गई।

क्रीट की रानी ने भी राजकुमारी के रूप के बारे में

सुन रखा था। सोच रही थी कि यदि वह उससे भी अधिक सुंदर हुई, तो बुरा होगा। फिर क्या हो? दरबारियों के सामने वह कुछ कर न पाएगी। बस, छोटे द्वीप की रानी अपनी पुत्री को लेकर जब महल में पहुंची, तो क्रीट की रानी ने जादू डाल, बहाना बनाकर बिना मिले, उसे लौटा दिया।

छोटे द्वीप की रानी उल्टे पैरों लौट गई। द्वीप पर पहुंचकर उसने अपनी पुत्री को सचेत कर दिया कि अगले छह महीने तक वह किसी भी हालत में महल से बाहर न निकले।

छह महीने बीतने में एक दिन शेष था। छोटे द्वीप की रानी ने एक शानदार समारोह का आयोजन किया। राजकुमारी भी समारोह में भाग लेने की हठ कर रही थी। रानी ने भी सोचा कि अब तो अशुभ घड़ी टल गई है। इसलिए वह राजकुमारी को खुद अपने साथ लेकर आई। सब टकटकी बांधे राजकुमारी को देख रहे थे। समारोह का आनंद चारों ओर बिखरा था।

बहुत समय बाद खुली हवा में आने पर राजकुमारी फूली नहीं समा रही थी। वह धीरे-धीरे मंच की तरफ जा ही रही थी कि अचानक उसके पैरों के नीचे से धरती फटी और राजकुमारी देखते ही देखते उसमें समा गई।

रानी यह देखकर भय के कारण बेसुध हो गई। इस दुःख की घड़ी में सारे दरबारी शोक के समुद्र में डूबे थे। तुरंत आदेश दिया गया कि धरती खोदकर राजकुमारी की तलाश की जाए, लेकिन सारी कोशिशें बेकार गईं। राजकुमारी को न मिलना था और न वह मिली।

राजकुमारी धरती में धंसती हुई एक वीरान जंगल में जा गिरी। कहीं न चिड़िया, न चिड़िया का बच्चा। जीवित प्राणी के नाम पर सिर्फ एक कुत्ता था, जो राजकुमारी को देखते ही प्यार से कूं-कूं करने लगा। राजकुमारी ने कुत्ते को उठा लिया। कुत्ता राजकुमारी को अपने साथ एक छोटी-सी पहाड़ी पर ले गया, जहां से उसे एक खूबसूरत घाटी दिखाई दी। घाटी में फूलों और फलों से लदे पेड़ दिखाई दे रहे थे।

राजकुमारी यह दृश्य देख मुग्ध रह गई। भाग्य को कोसती वह कुत्ते के साथ घाटी में उतर गई। कुछ फल खाकर पानी पिया। पेट भरा, तो उसे अब यह चिंता सताने लगी कि अगर कोई जंगली जानवर इधर से आ निकला, तो वह उसका मुकाबला कैसे करेगी।

देखते ही देखते शाम ढल गई। अंधेरा घिरने लगा, तो उसकी चिंता और बढ़ गई। तभी उसने देखा कि वह कुत्ता उसको कहीं और ले जाने की कोशिश कर रहा है। पहले तो उसने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब कुत्ते ने उसके दामन को पकड़कर खींचना शुरू किया, तो वह कुछ कदम आगे बढ़ी। कुत्ता उसे एक खास दिशा में ले जा रहा था। कुछ ही देर बाद कुत्ते ने उसे एक ऐसी चट्टान के सामने ले जा कर खड़ा कर दिया, जिसके बीच में एक गुफा थी। डरती-सहमती राजकुमारी ने गुफा में झांककर देखा। गुफा हीरे-जवाहरात से जगमगा रही थी। बीच में एक चारपाई पड़ी थी, जिस पर नरम बिछौना था। राजकुमारी बिछौने पर लेट गई। कुत्ता भी उसके पैरों की ओर बैठ गया। जल्दी ही राजकुमारी को नींद आ गई।

सवेरे जब वह उठी, तो उसका प्यारा कुत्ता कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। वह झपट कर गुफा के बाहर आई, लेकिन जैसे ही वह बाहर आई, उसे एक बूढ़े व्यक्ति की परछाई दिखाई दी। जब तक राजकुमारी उसकी ओर देखती, वह फुर्ती के साथ गायब हो गई। राजकुमारी सकते में पड़ गई, न जाने वह कौन था?
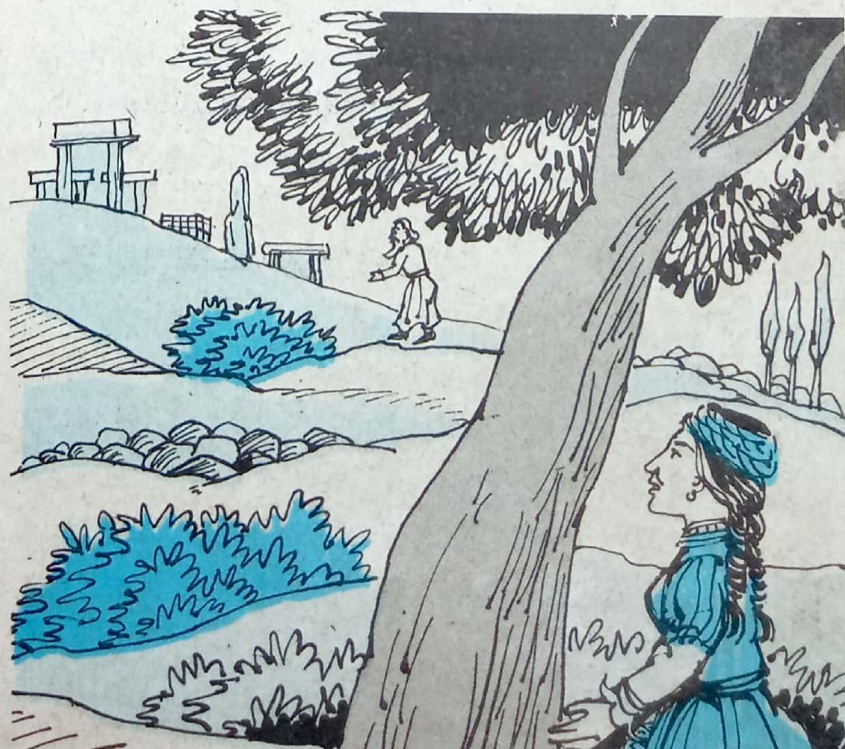
इसी उलझन में वह इधर-उधर चक्कर काट रही थी। अचानक उसे महसूस हुआ, जैसे उसे किसी बादल ने अपने बीच में लपेट लिया हो और वह हवा में उड़ती जा रही हो। राजकुमारी ने बादल की पकड़ से छूटने के लिए हाथ-पांव पटके, किंतु कुछ न हुआ। वह उड़ती गई, उड़ती गई। फिर एकाएक यह देखकर वह आश्चर्य में डूब गई कि वह अपने ही महल में खड़ी है।

राजकुमारी को महल के नौकर-चाकरों ने तुरंत पहचान लिया। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ पड़ी। शीघ्र ही राजकुमारी को पता चल गया कि उसके गुम होने के कारण उसकी मां भगवान को प्यारी हो गई है। द्वीप बिना रानी के अनाथ बनकर रह गया है। खुशी और दुःख के बीच राजकुमारी को द्वीप की रानी का मुकुट पहनाया गया। द्वीप की रानी बनते ही पहला काम उसने किया अपने प्यारे कुत्ते की तलाश। उसने पूरे देश में उसकी तलाश करवाई। जब कुछ पता नहीं चला, तो उसने ऐलान कर दिया कि जो कोई उसे उसका खोया हुआ कुत्ता लाकर देगा, उसे आधा राज दिया जाएगा।

एक दिन रानी को सूचना मिली कि एक बूढ़ा आदमी उससे मिलना चाहता है। रानी ने उसे मिलने की इजाजत दे दी। भेंट होने पर वह बूढ़ा बोला—"मैं आपको आपका खोया हुआ कुत्ता ला दूंगा, मगर आपको मेरे साथ विवाह करना पड़ेगा।"

बूढ़े की बात सुनते ही रानी का चेहरा तमतमा उठा, मगर कुत्ते की याद आते ही वह शांत हो गई। कुछ कहना ही चाहती थी कि चमत्कार हुआ। वह बूढ़ा अदृश्य हो गया। रानी दुःख से भर उठी। असल में वह अपने प्रिय कुत्ते के लिए उस बूढ़े से विवाह करने पर भी राजी थी। मगर उसके हां करने से पहले ही बूढ़ा गायब हो चुका था। वह बूढ़े के बारे में सोच ही रही थी कि एक दरबारी ने खबर दी, द्वीप के चारों तरफ से जहाज चले आ रहे हैं। रानी दौड़कर महल के छज्जे पर गई। चारों ओर देखा, तो सहम गई। द्वीप की ओर एक बड़ा भारी जहाजी बेड़ा बढ़ता आ रहा था।

अचानक उसकी आंखें चमकने लगीं। वह बुदबुदाई— 'ये जहाज किसी मित्र देश के हैं। हर जहाज पर लहरा रहे झंडों से युद्ध का नहीं, मैत्री का संदेश मिल रहा है। सबके आगे जो छोटी नौका आ रही है, उस पर शांति का प्रतीक सफेद झंडा फहरा रहा है।'

रानी ने तुरंत एक संदेश वाहक समुद्र तट पर भेजा। लौटकर उसने सूचना दी, यह जहाजी बेड़ा एक मित्र राजकुमार का है। रानी ने तुरंत राजकुमार की अगवानी के लिए अपने दरबारी भेज दिए।

राज दरबार में राजकुमार का भव्य स्वागत किया गया। रानी खुद गद्दी से उतरकर अगवानी के लिए आगे बढ़ी। राजकुमार से आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया।

अगले दिन राजकुमार ने विशेष कक्ष में रानी से भेंट की। बातचीत के दौरान केवल रानी मौजूद थी। बातों ही बातों में राजकुमार ने बताया—"मैं क्रीट के अन्य छोटे द्वीप का राजकुमार हूं। एक दिन शिकार के समय दुर्भाग्य से मेरी भेंट क्रीट की जादूगर रानी से हो गई। मैं उसे पहचान न सका। इसीलिए उसे सही सम्मान नहीं दे पाया। जादूगर रानी भड़क उठी। मुझे कुत्ते के रूप में बदल दिया। उसी रूप में मैं आपसे मिला। क्रीट की रानी को यह भी सहन न हुआ। उसने कुत्ते से मुझे बूढ़ा बना दिया। उसी रूप में मैं तुम्हारे पास आया था। मगर जैसे ही तुमने मुझसे विवाह करने के बारे में सोचा, उस दुष्ट जादूगर रानी ने मुझे तुम्हारे सामने से उठाकर दूर जंगलों में पटक दिया। सौभाग्य से जंगलों में मुझे एक भली परी मिल गई। उसने मुझे दुष्ट रानी के जादू से मुक्त कराया और तुम्हारे पास जाने को कहा। यह भी कहा कि यदि हम दोनों एक हो गए, तो क्रीट की रानी का जादू समाप्त हो जाएगा।"

रानी मुसकरा उठी। कुछ ही दिनों में उन दोनों का विवाह हो गया। क्रीट की रानी पूरी कोशिशों के बावजूद उनके विवाह को न रोक सकी, क्योंकि उसका जादू समाप्त होता जा रहा था।

(यूनान)

जलपरी की सैर

—उषा महाजन

गहरे नीले समुद्र में दूर एक जलपरी अपनी ही धुन में मग्न, इठला-इठलाकर तैर रही थी। शाम का समय था। ठंडी हवा बह रही थी। ऊपर आसमान में चांदी की किनारी वाले बादल जैसे दौड़-भाग रहे थे। सूरज की सुनहरी किरणें समुद्र के पानी पर पड़ रही थीं। अनगिनत मछलियां जल की सतह के नीचे तेजी से इधर-उधर दौड़ती हुई खेल रही थीं। परी का मन खुशी से झूम रहा था।

तभी अचानक उसने चौंककर पीछे देखा। कुछ दूर एक नाव में दो मछुआरे मछलियां पकड़ने के लिए उसी तरफ बढ़े आ रहे थे। वे आपस में बतिया रहे थे। एक मछुआरा अपने साथी से कह रहा था—''हमारी भी क्या जिंदगी है ! दिन भर खटने के बाद भी दो जून भरपेट खाना नसीब नहीं होता। ऊपर से तमाम दूसरे झंझट। कभी बेटा बीमार हो गया, कभी बेटी की शादी के लिए चिंता। हमारी तो रोजी-रोटी का भी कुछ पक्का नहीं। कभी समुद्र में तूफान आ गया, तो नावें उलट जाती हैं, घर बह जाते हैं। सच, हमसे अच्छी तो ये मछलियां हैं। देखो, कैसे आनंद से पानी में तैरती रहती हैं। न कोई फिक्र, न चिंता इन्हें।''

उनकी बातें सुनकर परी की उत्सुकता जगी। वह अपनी सखियों के पास गई। मछुआरों के बीच हुई बातचीत उन्हें सुनाने लगी। परी की सखियों ने भी अपने-अपने अनुभव सुनाने शुरू किए। एक परी बोली—''हां-हां, मैं भी एक दिन तट पर गई, तो मैंने एक लड़की को रोते हुए देखा। पिता के मर जाने पर उसकी मां ने दूसरा विवाह कर लिया था। वैसे तो उसका सौतेला पिता उसे खूब प्यार करता, पर वह अपने सगे पिता को भूल नहीं पा रही थी। रो-रोकर अपनी सखी को अपना दुःख बता रही थी।''

तभी एक दूसरी परी बीच में बोल उठी—''लेकिन धरती पर केवल दुःख ही नहीं है। मैंने भी तट पर एक घटना देखी थी। मुझे तो लगा कि धरती पर रहने वाले लोग बहुत सुखी हैं। मैंने देखा, एक स्त्री और पुरुष चादर बिछाकर तट से कुछ दूर बैठे थे। स्त्री छोटी-छोटी तश्तरियों में भोजन डालकर उसे दे रही थी। पुरुष बड़े सुरीले स्वर में गा-गाकर बच्चों को बहला रहा था। बच्चों की तोतली आवाजें सुन, मुझे इतना अच्छा लग रहा था कि जी हुआ, उनके पास ही चली जाऊं।''

जलपरी बोली—''हां, यही तो मैं देखना चाहती हूं कि यह सुख-दुःख है क्या ? धरती के लोगों का जीवन सचमुच बहुत मजे का होगा। कभी सुख, कभी दुःख, कभी हंसना, कभी रोना।''

सभी ने उसे एक सुर में मना किया—''सुन री जलपरी, चाहे जैसा भी हो वहां का जीवन, तू वहां मत जा। जो जहां रहता है, उसे वहीं अच्छा लग सकता है, दूसरी जगह नहीं।''

पर जलपरी न मानी। वह पाताल लोक की बूढ़ी जादूगरनी के पास गई। बोली—''मौसी, मुझे सुंदर-सी लड़की बना दो। मैं धरती पर जाना चाहती हूं, ताकि वहां के लोगों के सुख-दुःख को करीब से जान सकूं।''

बूढ़ी जादूगरनी ने भी उसे धरती पर जाने से

रोका। बहुत समझाया। पर परी न मानी, तो उसने उसे सुंदर-सी लड़की बना दिया। आशीर्वाद देते हुए बोली—"जब तुझ पर बहुत मुसीबत पड़े, तो मुझे याद करना। मैं फिर तेरा रूप बदलकर तुझे कुछ भी बना दूंगी।"

तैरते-तैरते जलपरी समुद्र तट तक आ पहुंची। रात काफी हो चुकी थी। चारों ओर एकदम सुनसान लग रहा था। तभी उसे दूर टिमटिमाता हुआ प्रकाश दिखाई दिया। लड़की बनी जलपरी उसी दिशा में बढ़ने लगी। घर के द्वार पर पहुंचकर उसने कुंडी खटखटाई। एक खूबसूरत नवयुवक ने दरवाजा खोला। परी उसे देखते ही मोहित हो गई। बहाना बनाते हुए बोली—"हमारा बेड़ा टूट गया। बहुत से लोग थे साथ। पता नहीं, कोई बचा या नहीं। मैं किसी तरह तैरकर किनारे तक आ पहुंची। क्या यहां रात भर के लिए ठिकाना मिल सकेगा ? सुबह तड़के ही चली जाऊंगी।"

भीतर उस युवक की मां खाना पका रही थी। वहीं से चिल्लाकर बोली—"बेटा, दुखियारी है बेचारी। अंदर बुला लो।"

युवक और उसकी मां ने लड़की बनी जलपरी का खूब सत्कार किया। उसे पहनने को दूसरे कपड़े दिए, भरपेट स्वादिष्ट भोजन कराया। सोने के लिए नर्म, मुलायम बिस्तर दिया।

सुबह उठकर लड़की ने जाने का दिखावा किया, तो युवक की मां ने उसे रोक लिया। वह उसे इतनी अच्छी लगी कि मन ही मन उसने उसे अपनी बहू बनाने का निश्चय कर लिया। वह अपने पुत्र से बोली—"अरे बेटा, इतनी सुंदर और भोली लड़की तुझे फिर कहां मिलेगी ? और फिर बेचारी बेसहारा भी है। मैं तो आज ही गांव वालों को तुम दोनों के ब्याह की सूचना देने जाऊंगी। शुभ दिन तय कर, इसे अपनी बहू बनाऊंगी।"

सचमुच मां ने उन दोनों का विवाह धूमधाम के साथ कर दिया। तीनों मिलकर खुशी-खुशी रहने लगे। पर कुछ ही दिनों बाद परी का मन उचटने लगा। उसे समुद्र में खेलने-तैरने की बड़ी इच्छा हुई। अपनी सखियों, सहेलियों की याद सताने लगी। इधर युवक और उसकी मां से भी उसका लगाव बहुत बढ़ गया था। बेचारी दिन भर बड़ी उलझन में रहती।

आखिर उसे एक उपाय सूझा। रात में जब सब गहरी नींद में सो जाते, वह घर से निकलती। परी बन, उड़कर समुद्र में पहुंच जाती। पानी में खूब तैरती और सुबह होने से पहले ही घर लौट आती।

कुछ दिन तक किसी को पता नहीं चला। पर एक दिन कोई बुरा सपना देखने के कारण युवक की नींद आधी रात को खुल गई। पत्नी को घर में न पाकर वह बहुत परेशान हुआ। उसे खोजता-खोजता समुद्र तट तक पहुंचा, तो देखा, वह परी बनी तैर रही थी।

पति को देखते ही घबराकर परी तुरंत पहले वाले रूप में आ गई। युवक ने उसका रूप बदलना भी देख लिया। उसे पूरा यकीन हो गया कि वह कोई जादूगरनी थी, सामान्य लड़की नहीं। घर ले जाकर युवक ने उसे एक कोठरी में बंद कर दिया। ओझा को बुलवाया। ओझा ने उसे देखकर कहा—"यह समुद्र के अंदर से आई है। इसे पानी से दूर रखो। पीने तक को पानी मत दो। तब यह ठीक-ठीक बता देगी कि यह कौन है ? अभी तक यह तुम लोगों से अपने बारे में झूठ बोलती रही है।"

लड़के ने वही किया, जो ओझा ने कहा था। कुछ ही देर में लड़की बनी जलपरी घबरा गई। वह फूट-फूटकर रोने लगी। पर किसी ने उस पर दया न दिखाई। परी को अपनी सहेलियों का यहां आने से मना करना याद आया। उसे बूढ़ी जादूगरनी की भी याद आने लगी। उसे याद आया कि जादूगरनी ने कहा था—"तुम जब भी मुझे याद करोगी, मैं तुम्हारी मदद अवश्य करूंगी।"

परी ने जादूगरनी को आवाज लगाई। जादूगरनी ने उसे एक नन्ही चिड़िया में बदल दिया। चिड़िया बनी जलपरी खिड़की की राह बंद कमरे से बाहर निकल आई। उड़ती-उड़ती समुद्र के किनारे जा पहुंची। वहां पहुंचते ही वह फिर से परी रूप में आ गई।

जलपरी को वापस आया देख, उसकी सखियों ने उसे घेर लिया।

(वियतनाम)

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।

कहानी लिखो-१०४

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० जुलाई '९२ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। पसंद आने पर कहानी छपेगी। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : सितम्बर '९२ अंक

चित्र पहेली-१०४

'खेल दिखाता जादूगर' विषय पर एक रंगीन चित्र बनाइए। उसे १० जुलाई '९२ तक **चित्र पहेली-१०४, नंदन मासिक, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : अक्तूबर '९२ अंक

इकतारे की धुन

—मिर्जा इरफान बेग

दूर गांव में नन्हीं-मुन्नी, प्यारी-सी, एक लड़की थी—रुबी। वह गरीब थी, परंतु बड़ी हंसमुख और भोली-भाली थी। मां ने उसे बता रखा था कि उसके पिता चंदा मामा के पास गए हैं। ढेर सारे कपड़े, खिलौने और उपहार लेकर आएंगे। रुबी के पास एक इकतारा था, जिसे वह सदैव साथ रखती थी। मां ने बताया था कि यह इकतारा उसके पिता जी ने चंदा मामा के देश से भेजा था। इकतारे की धुन में मगन रुबी सुनहरे सपनों के संसार में दूर-दूर तक उड़ान भरती रहती।

गांव के किसान गरीब थे। उनके खेत साहूकार के पास बंधक थे और वे अब साहूकार के बंधुआ मजदूर भर थे। रुबी की मां भी सबके साथ तड़के खेत में चली जाती, सांझ ढले थकी-हारी घर लौटती। रुबी भी अपनी मां के संग खेत में चली जाती। एक पेड़ के नीचे बैठकर इकतारा बजाती रहती। गांव वाले कहते थे कि कभी यह खेत रुबी के पिता के थे और यह पेड़ रुबी के जन्म पर उन्होंने अपने हाथों से लगाया था।

एक दोपहर झरने से पानी भरते हुए रुबी ने पास की झाड़ियों में कुछ आवाज सुनी। तीर से बिंधा एक पंछी तड़प रहा था। उसकी चोंच खुली हुई थी और घाव से खून रिस रहा था। रुबी ने उसकी चोंच में पानी टपकाया और संभाल कर तीर निकाल दिया। घायल पंछी को गोद में उठाकर वह मां के पास लौटी।

—"अरे बेटी, यह क्या उठा लाई ? यह मर जाएगा और तुझे पाप लगेगा।"

इस पर रुबी झट बोली—"पर मां, तुम्हीं तो कहा करती हो कि जो लोग पशु-पक्षियों की सेवा करते हैं, प्रभु उनसे प्रसन्न होते हैं। मैं तो इसे अभी वैद्य जी के पास ले जाऊंगी।"

और रुबी ने किया भी यही। कुछ ही दिनों में पंछी के घाव भर गए। वह अभी उड तो नहीं सकता था, पर इधर-उधर मजे से फुदकता फिरता था। रुबी उसे गोद में उठाकर खेत पर जाती। उसे पेड़ की निचली डाल पर बिठाकर इकतारा बजाती। पंछी फुदककर रुबी के निकट आ जाता और कूदकर उसके कंधे पर बैठ जाता। रुबी बहुत प्रसन्न थी। उसे एक अच्छा साथी मिल गया था।

एक दिन एक किसान को सांप ने डस लिया। सब उसकी ओर दौड़े। उसके मुंह से झाग आ रहा था और शरीर नीला पड़ता जा रहा था। किसान उसे उठाकर पेड़ के नीचे ले आए। तभी एक विचित्र घटना घटी। पंछी ने इकतारे के तार को चोंच से छेड़ दिया। सुरीली धुन निकली और किसान ऐसे उठ बैठा, जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो। उसके शरीर का नीलापन उड़न-छू हो गया। सबने दांतों तले अंगुली दबा ली। तभी रुबी ने देखा, पंछी खुले आकाश में उड़कर दूर जा चुका था।

रुबी के पड़ोस में लक्ष्मी चाची बरसों पहले खाट पकड़ चुकी थी। वैद्य जी के लंबे इलाज से कोई लाभ नहीं हुआ था। रुबी ने उसके पास बैठकर इकतारा बजाया, वह भली-चंगी हो गई। राम आसरे काका के दाएं पैर में पुराना घाव था। इकतारे की धुन से घाव भर गया। दूसरे दिन गांव में कोई बीमार न रहा। हर ओर हर्षोल्लास छा गया। लोग अपनी गरीबी और दुःख-दर्द भूल गए।

शीघ्र ही इकतारे की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। गांव में परदेसियों का तांता बंध गया। बरसों से कष्ट भोग रहे रोगी आते और भले-चंगे होकर लौटते। गांव में छोटी-बड़ी दुकानें खुल गईं। दुकानों की आय से किसानों ने अपने खेत छुड़ा लिए। शाम को जब रुबी अपनी सखियों के संग इकतारा बजाती खेतों से गुजरती, तो पेड़-पौधे झूम-झूम उठते। इस बार इतनी अच्छी फसल हुई, जैसी किसी ने न कभी देखी, न सुनी। सब प्रसन्न थे। बस प्रसन्न नहीं था तो साहूकार। वह इस इकतारे को किसी न किसी तरह हथियाना चाहता था। एक रात उसने रुबी का इकतारा हू-ब-हू वैसे ही इकतारे से बदल लिया।

अगली प्रातः लोगों को तब बड़ी निराशा हुई,

जब रुबी के इकतारे की धुन से किसी को कोई लाभ नहीं हुआ। रुबी तरह-तरह की धुनें बजाती रही, पर व्यर्थ। वह परेशान थी, तभी साहूकार के मुनीम की आवाज सुनाई दी—"जो रोग मिटाना चाहे, मेरे संग हवेली में आ जाए।"

निराश लोगों की भीड़ मुनीम के पीछे-पीछे चल पड़ी। साहूकार ने इकतारा बजाकर सबको अच्छा कर दिया। पर अगले दिन से ही वह इलाज के लिए धन ऐंठने लगा। दिन पर दिन उसकी मांग बढ़ती गई। अब वह इलाज के लिए चांदी के सौ रुपए लेता था।

नन्हीं रुबी कर भी क्या सकती थी! बहुत सोच-विचार कर उसने अपना इकतारा वापस लेने की एक योजना बनाई। इस योजना में रामआसरे काका और घनश्याम चाचा को एक नाटक करना था। एक प्रातः जब साहूकार इकतारा लिए हुए गद्दी पर बैठा, तो सबसे पहले रामआसरे काका की बारी थी। वह तड़प रहा था—"हाय मरा, पेट दर्द से फटा जा रहा है।"

"सौ रुपए निकालो!"—साहूकार बोला। उत्तर में रामआसरे ने रुपयों की थैली बढ़ा दी। मुनीम ने लपककर थैली थाम ली और रुपए गिनने लगा। साहूकार ने इकतारा बजाया। रामआसरे और बुरी तरह तड़पने लगा—"यह दर्द तो और बढ़ गया।" साहूकार इकतारा बजाता रहा, पर उसका तड़पना बढ़ता ही गया।

"तुम उधर लेट जाओ, बाद में ठीक करूंगा।"—कहते हुए साहूकार ने दूसरे रोगी को बुलाया। यह घनश्याम था। जब उसका भी पहले जैसा हाल हुआ, तो पीछे की भीड़ खिसकने लगी। कोई कहता—"बाजे का जादू खत्म हो गया।" "क्यों न होता, इसका लालच जो इतना बढ़ गया।"—दूसरा कहता।

ठीक इसी समय रुबी इकतारे के साथ हवेली की ड्योढ़ी में पहुंची। राम आसरे काका के सिरहाने बैठकर उसने इकतारा बजाया। वह तुरंत प्रसन्नचित्त होकर उठ खड़ा हुआ—"वाह, पेट दर्द छू हो गया। जीती रहो बिटिया!" साहूकार से अपने रुपए वापस लेकर वह चला गया। रुबी ने इकतारा बजाकर

घनश्याम चाचा को भी अच्छा किया।

साहूकार के काटो तो खून नहीं। रुबी ने उससे कहा—"इकतारा बदल गया। अब तुम्हारा इकतारा तुम्हारे पास है और मेरा, मेरे पास।" वह दांत पीसकर रह गया। लोगों की भीड़ रुबी के संग हो ली। घर पहुंचकर रुबी ने उनसे कहा—"आज आप यहीं विश्राम करें। कल भोर की बेला में आप सबके लिए इकतारा बजाऊंगी।"

उस रात कोठरी में दिया जल रहा था। रुबी की मां सारा काम पूरा करके गहरी नींद में सो रही थी। रुबी जागती रही। रह-रहकर उसे रामआसरे काका और घनश्याम चाचा का नाटक याद आ जाता और वह खिलखिलाकर हंस पड़ती। देर रात गए उसने अधखुली आंखों से देखा कि साहूकार पिछली खिड़की के रास्ते दबे पांव अंदर आया और खूंटी पर लटके इकतारे को बदलकर उलटे पांव चला गया। रुबी का मन खिल उठा। उसकी योजना सफल हो गई थी। उसने दौड़कर अपने इकतारे को चूमा और सीने से लगा लिया।

सोने से पहले वह खिड़की बंद करने के लिए गई थी कि बाहर शोर-गुल सुनाई पड़ा। "चोर है, छोड़ना

नहीं !...बाजा चुराकर खिड़की से कूदा था, इसकी अच्छी तरह मरम्मत करो।''—लोग चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे।

रुबी की मां भी जाग गई। वह बाहर लपकी। रुबी ने अपना इकतारा संभाला और मां के पीछे दौड़ी। साहूकार जमीन पर पड़ा था और भीड़ उसके साथ मार-पीट कर रही थी।

''छोड़ दो इसे।''—रुबी की मां चीखी, पर लोग थे कि सुनने को तैयार न थे। तब रुबी बोली—''अब अगर किसी ने इन्हें मारा, तो मैं इकतारा कभी नहीं बजाऊंगी...कभी नहीं।''

उठे हुए हाथ थम गए। कुछ लोग घायल साहूकार को रुबी के घर में ले आए। रुबी ने उसके पास बैठकर इकतारा बजाया। साहूकार पलक झपकते ठीक हो गया। उसने रुबी के सिर पर हाथ फेरा और बोला—''जीती रहो बेटी, पर तुम्हारा जादुई इकतारा तो....।''

रुबी ने सब कुछ बता दिया। साहूकार हंसने लगा। फिर गम्भीर होते हुए बोला—''तुम्हारे इकतारे से मैंने जो ढेर सारा धन जुटाया है, वह अब तुम्हारा है। मैं अभी लाकर तुम्हें सौंप देना चाहता हूं।''

''पर चाचा जी, मैंने तो किसी रोगी से एक पैसा भी नहीं लिया। आप उससे गांव में हमारे लिए एक स्कूल बनवा दीजिए।''—रुबी बोली।

''वाह! यह तो बहुत अच्छा होगा।''—साहूकार खुश।

''चाचा जी, उस स्कूल का नाम होगा— 'रूपा विद्या निकेतन'।'' —रुबी ने अपना फैसला सुनाया।

साहूकार की आंखें गीली हो गईं। उसने रुबी को गले से लगा लिया। रूपा, रुबी की सहेली और साहूकार की इकलौती बेटी थी, जो दो बरस पहले अचानक चल बसी थी।

''क्यों चाचा! यही नाम रखेंगे ना?'' —रुबी ने फिर पूछा।

''ठीक है, बेटी!''—कहते हुए साहूकार की आवाज खुशी से कांप उठी। ●

चमचम चमके

—शांता ग्रोवर

पूर्वी समुद्र के राजा की बेटी हाशिया बहुत सुंदर और बुद्धिमती थी। राजा उसके विवाह के लिए चिंतित थे। राजा ने हाशिया से पूछा—''राजकुमारी, हम तुम्हारे लिए किस तरह के वर की तलाश करें?''

''पिता जी, मैंने सुना है कि पृथ्वी पर बहुत वीर रहते हैं। वे आकाश में भी चले जाते हैं और समुद्र में भी। पृथ्वी पर रहने वाला वीर और ईमानदार व्यक्ति ही मुझे पति रूप में पसंद है।''

राजा ने अपने सभासदों को आदेश किया कि राजकुमारी के लिए पृथ्वी-वासी एक ईमानदार और बहादुर व्यक्ति की तलाश की जाए।

एक दिन राजा के सेनापति जब सागर तट पर घूम रहे थे, तो उनकी नजर एक जगह पर जाकर ठहर गई। उन्होंने देखा—एक निहत्था नवयुवक शेर से लड़ रहा है। कुछ ही देर में अपने बाहुबल से उसने शेर को पछाड़ दिया। सेनापति उस युवक के पीछे-पीछे उसके गांव तक गए और सारी जानकारी प्राप्त कर राजा के पास पहुंचे। राजा का अभिवादन कर बोले—''राजन्, पहाड़ों की तलहटी में बसे गांव में एक युवक रहता है, जिसकी बहादुरी तो मैंने आंखों से देखी। उसकी ईमानदारी के गुण सारा गांव गा रहा है। उसके माता-पिता का देहांत हो चुका है।''

राजा ने राजकुमारी से पूछा—''क्या तुम्हें ऐसे ही वर की तलाश थी?''

राजकुमारी बोली—''पिता जी, मैं खुद उसकी परीक्षा लेना चाहती हूं।''

राजा और राजकुमारी ने मिलकर एक योजना बना डाली। उसी रात उस युवक ने जिसका नाम गोशांग था, एक सपना देखा। सपने में एक बूढ़ा आदमी आया और बोला—''गोशांग, नदी के किनारे एक सुंदरी तुम्हारा इंतजार कर रही है। जाओ, और उससे अपनी शादी का प्रस्ताव रखो।'' गोशांग हड़बड़ाकर उठा। उसने अपने दोस्त तिमिंग को उठाकर उसे अपने सपने की बात बताई। तिमिंग बोला—''सपने भी

कभी सच होते हैं ! चुपचाप जाकर सो जाओ ।''

गोशांग चुपचाप दुबारा सो गया । गोशांग के सोते ही तिमिंग चुपके से उठा और नदी की तरफ चल पड़ा । गोशांग ने सोते हुए दुबारा वही सपना देखा, तो उसकी आंख खुल गई । उसने सोचा—'नदी के किनारे जाकर देख आने में क्या हर्ज है ?' वह नदी की ओर चल पड़ा ।

उधर तिमिंग जब नदी किनारे पहुंचा, तो वह हैरान रह गया कि वहां सचमुच एक सुंदर लड़की बैठी हुई है । तिमिंग ने उसके पास जाकर शादी का प्रस्ताव रखा । लड़की ने उससे पूछा—''क्या तुम वही हो, जिसने आज शेर को मारा था ?''

तिमिंग बोला—''जी हां, जी हां ।''

तभी गोशांग वहां पहुंच गया । लड़की ने उससे पूछा—''क्या तुमने भी अभी-अभी सपना देखा था ?''

तिमिंग बीच में ही बोल पड़ा—''राजकुमारी, मैंने एक बार नहीं, दो बार सपना देखा था ।''

राजकुमारी असमंजस में पड़ गई । कुछ सोचती हुई वह बोली—''मैं आप दोनों में से उसी से शादी करूंगी,जो मुझे एक चमकदार हीरा लाकर देगा । यह काम आपको ईमानदारी और बहादुरी से करना होगा ।''

''लेकिन वह हीरा मिलेगा कहां ?''—तिमिंग ने पूछा ।

—''वह हीरा पूर्वी समुद्र के राजा के पास मिलेगा । समुद्र में राजा तक पहुंचने के लिए मैं तुम दोनों को एक-एक सोने का तीर देती हूं । इसे तुम अपने-अपने हाथ में पकड़े रहना। तुम्हें समुद्र रास्ता दे देगा ।''

तिमिंग ने घोड़ा लिया और उस पर चढ़कर पूर्वी समुद्र की तलाश में चल पड़ा । गोशांग पैदल ही नदी के किनारे-किनारे चला । बहुत दिनों बाद तिमिंग एक गांव में पहुंचा । वहां बाढ़ ने तबाही मचाई हुई थी । खेतों-खलिहानों और घरों में पानी भर गया था । वृद्धों और बच्चों ने एक पहाड़ पर शरण ली हुई थी ।

तीन दिन बीत चुके थे, लेकिन पानी कम होने का

नाम नहीं ले रहा था । उधर बरसात भी कम नहीं हो रही थी । लोग बहुत परेशान थे । तभी एक वृद्ध को कुछ ध्यान आया । वह बोला—''यदि पूर्वी समुद्र के राजा से जादुई सफेद शंख मिल जाए, तो उससे तुरंत पानी सूख सकता है ।'' तिमिंग वहां खड़ा, ये बातें सुन रहा था । वह अपने साथ जो खाना लेकर चला था, वह खत्म हो गया था । वह गांव वालों से बोला—''मैं समुद्र के राजा के पास ही जा रहा हूं । यदि आप मुझे खाने का कुछ सामान दे दें, तो मैं आपके लिए जादुई शंख ले आऊंगा ।''

सब खुशी से चहक उठे । उनके पास थोड़ा-सा खाना बचा था । उन्होंने वह सारा खाना तिमिंग को दे दिया । तिमिंग ने उन सबसे विदा ली और आगे चल पड़ा ।

दो दिन बाद, गोशांग भी उसी गांव में पहुंचा । गांव में बाढ़ का प्रकोप देखकर, वह अपनी भूख-प्यास भूल गया । गांव के युवकों के साथ वह भी उनकी सहायता करने लगा । तभी उसने भी किसी को कहते सुना—''अब हमारी तकलीफ तो पूर्वी समुद्र के राजा के सफेद शंख से ही दूर होगी ।''

गोशांग बोला—''मैं आप लोगों के लिए राजा से सफेद शंख लाऊंगा ।'' ऐसा कहकर वह तुरंत वहां से समुद्र की ओर चल पड़ा । समुद्र के तट पर उसने देखा—तिमिंग भी वहीं खड़ा है । गोशांग को देखते ही तिमिंग चालाकी से बोला—''आओ मित्र, मैं

तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। समुद्र बहुत विशाल है। पहले तुम इसमें छलांग लगाओ।'' वास्तव में वह पानी में छलांग लगाते हुए डर रहा था।

गोशांग ने सोने का तीर हाथ में पकड़कर छलांग लगाई। समुद्र का पानी दो हिस्सों में बंट गया। वहां एक विशाल द्वार दिखाई दिया। उसी समय तिमिंग ने भी छलांग लगाई और द्वार पर पहुंच गया। दरबान ने उनसे आने का कारण पूछा। वह उन्हें समुद्र के राजा के पास ले गया। राजा ने उन दोनों से वहां आने का कारण पूछा। तिमिंग बोला—''महाराज ! मुझे चमकदार हीरा चाहिए जिससे मैं एक सुंदरी से शादी कर सकूं।''

गोशांग बोला—''मुझे आपका जादुई शंख चाहिए।''

महाराज बोले—''क्यों तुम्हें शादी नहीं करनी ?''

गोशांग बोला—''महाराज ! मुझे अपनी शादी से अधिक बाढ़ में फंसे लोगों की जान बचाने की फिक्र है। इसलिए मुझे आप शंख ही दे दीजिए।''

राजा उसका उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तिमिंग को चमकदार हीरा दे दिया और गोशांग को सफेद शंख। वे दोनों समुद्री राजा से विदा लेकर बाहर आ गए। तिमिंग ने अपना घोड़ा लिया और चलने लगा। तभी गोशांग बोला—''मुझे भी अपने साथ घोड़े पर बैठा लो, ताकि मैं जल्दी ही गांव पहुंच सकूं।''

तिमिंग बोला—''माफ करना दोस्त, मुझे राजकुमारी के पास जल्दी पहुंचना है।'' यह कहकर तिमिंग वहां से चल पड़ा। जब गांव आया, तो गांव वालों से वह बोला—''मुझे राजा ने अपना सफेद शंख देने से मना कर दिया है।'' यह कहकर वह आगे बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद गोशांग वहां आया। उसने जब गांव वालों को बताया कि वह जादुई सफेद शंख ले आया है, तो वे सब उसके आस-पास इकट्ठे हो गए। गोशांग ने जैसे ही शंख बजाया, पानी एकदम सूख गया। गांव वाले खुशी से नाचने लगे। तभी गांव का वृद्ध पंडित गोशांग से बोला—''बेटा, तुमने हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। हमारे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं बचा है। हमारे पास एक पुराना मटमैला हीरा है, जो काफी समय से हमारे मंदिर में रखा हुआ है। इसे तुम हमारी तरफ से भेंट में स्वीकार करो।''

गोशांग उनकी भेंट स्वीकार कर वहां से चल पड़ा। उधर तिमिंग राजकुमारी के पास पहुंचा। उसे चमकदार हीरा देकर बोला—''अब आप मुझसे शादी कीजिए।''

राजकुमारी बोली—''मैं रात को इस हीरे को देखूंगी। यदि यह ऐसे ही चमकता रहा, तो मैं अवश्य आपसे शादी करूंगी।''

शाम तक गोशांग भी वहां पहुंच गया। राजकुमारी बोली—''क्या मेरे लिए हीरा ले आए !''

गोशांग बोला—''माफ कीजिएगा राजकुमारी, मैं बाढ़ में फंसे गांव वालों की सहायता करने में लगा रहा, इसलिए हीरा नहीं ला सका। हां, गांव वालों ने उपहार में मुझे एक पुराना, मटमैला हीरा दिया है। यदि वह लेना चाहें, तो आप अवश्य ले सकती हैं।''

रात हो गई। राजकुमारी तिमिंग से बोली—''अब अपना चमकदार हीरा मुझे दो।''

जैसे ही तिमिंग ने हीरा बाहर निकाला। उसकी चमक खत्म हो चुकी थी। जब राजकुमारी ने हाथ में पकड़ा, तो वह गलकर बह गया। तिमिंग का मुंह लटक गया।

राजकुमारी ने जब गोशांग का मटमैला हीरा हाथ में लिया, तो वह एकदम चमकने लगा। राजकुमारी ने उसे हवा में उछाला। उसके प्रकाश से तिमिंग की आंखें बंद हो गईं। जब आंखें खोलीं, तो उसने देखा कि राजकुमारी वधू के वेश में उसके दोस्त गोशांग का हाथ पकड़े शादी करने जा रही है। वह उनके पीछे भागा। फिर रुक गया और अपने दोस्त के पास जाकर बोला—''दोस्त, मुझे क्षमा कर देना। सपना भी तुमने देखा था और राजकुमारी से शादी करने के भी तुम ही हकदार हो। मैं तो ईर्ष्या से तुम्हारे रास्ते में आ गया था।''

गोशांग ने उसे गले से लगा लिया। (चीन)

पुल टूट गया

— स्नेह अग्रवाल

राजकुमार गेनादी बहुत सुंदर था। जो देखता, देखता ही रह जाता। लगता था जैसे किसी दूसरे लोक से आया हो। पर एक अजब आदत थी उसकी। वह हर समय सोता रहता या ऊंघता रहता।

उस दिन गेनादी सो रहा था। राजा रानी से बोले— "राजकुमार को नींद के अलावा कुछ काम नहीं। आज शाम को राजमहल में दावत है। कहीं यह उसमें भी सो गया तो ?"

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं होगा। आखिर इतनी चहल-पहल के बीच इसे नींद कैसे आ जाएगी ?"—रानी ने कहा।

क्षण भर रुककर रानी फिर बोली— "और आज पड़ोसी राज्य की राजकुमारी लारिसा भी तो दावत में होगी। वह राजकुमार के साथ बातें करेगी, नाचेगी।"

शाम हुई। दावत शुरू हुई। राजमहल में झिलमिल-झिलमिल। मेहमानों की गहमागहमी। राजकुमारी लारिसा तो बहुत ही सज-धजकर आई थी। वह राजकुमार से मिली, तो खिली पड़ रही थी।

पर थोड़ी ही देर में उसकी खुशी छूमंतर हो गई। राजकुमार तो ऊंघने लगा था। और वह थी कि घंटों उसके साथ नाचने की बात सोचकर आई थी।

खैर, दावत हो गई। अगले दिन राजा-रानी ने लारिसा से कहा— "बेटी, तुम कुछ दिन यहां हमारी मेहमान बन कर रहो। गेनादी का मन भी बहलेगा।"

उसी समय गेनादी घोड़े पर सवार हो, राजमहल से बाहर चला गया। उसे जंगल में घूमने-फिरने का शौक था। जानवरों की उछल-कूद और चिड़ियों की चिउ-चिउ उसे बहुत भाती थी।

गेनादी चला जा रहा था। अचानक उसे किसी के नदी में गिरने की आवाज आई। 'बचाओ-बचाओ!'— कोई औरत चिल्लाई। वह झट से घोड़े से कूद पड़ा। नदी पर बना लकड़ी का पुराना पुल थोड़ा-सा टूट गया था। एक बूढ़ी औरत

नदी में गिर पड़ी थी।

राजकुमार ने उस बुढ़िया को बाहर निकाला। किनारे पर उसे लिटा दिया। फिर क्या हुआ ? बुढ़िया तो उठकर बैठ गई, राजकुमार वहीं सो गया।

बुढ़िया उसे देखकर मुसकराई। उसने अपनी पोशाक की जेब में हाथ डाला। दो गोलियां निकालीं और राजकुमार के मुंह में डाल दीं।

अरे, यह तो अनहोनी हो गई। राजकुमार की आंखें झट से खुल गईं। गेनादी को लगा कि वह एकदम बदल गया है, फुर्तीला हो गया है। गेनादी बोला— "बुढ़िया मां, कौन हो तुम ?"

बुढ़िया बोली— "मैं जादूगरनी मारिया हूं। एक बार राजा ने मेरे जादुई खेल देखकर मेरी हंसी उड़ाई। बस, मैंने बदला लेने की ठान ली। मैंने ही तुम पर नींद का मंत्र फेंका था। इसीलिए तुम ऊंघा करते थे। पर गेनादी, तुमने मेरी रक्षा की। तुम बहुत अच्छे हो। आज से उस मंत्र का असर खत्म हुआ।"

राजकुमार गेनादी राजमहल पहुंचा, तो बदला-बदला था। राजा-रानी उससे खुश हुए। अब राजकुमारी लारिसा उससे नाराज न रही। बाद में उन्होंने शादी कर ली। (रूस)

परी रानी का महल

चार खिलाड़ी। दो-दो की जोड़ी। हरएक की एक-एक गोटी। धरती से जाना है परी महल में। ३५ खानों से बनी पगडंडी है। दो सीमा शुल्क चौकियां हैं। महल तक पहुंचने के लिए परी बगीचा, परी नगर और परी सरोवर होकर जाना है। एक जोड़ी की दोनों गोटियां परी बगीचे की ओर से और दूसरी जोड़ी की दोनों गोटियां परी सरोवर की ओर से आगे बढ़ेंगी। सारी गोटियां, पांसा फेंकने पर दो आने पर ही एक-एक खाना आगे बढ़ सकेंगी। किसी खाने में दूसरी जोड़ी की गोटी आने पर उसमें रखी पहली जोड़ी की गोटी पिट कर पुनः धरती पर पहुंच जाएगी। सीमा शुल्क चौकी में आने पर हर गोटी छह आने पर ही उसमें से निकल आगे बढ़ सकेगी।

जिस जोड़ी की गोटी सबसे पहले परी महल में पहुंचेगी, विजयी मानी जाएगी।
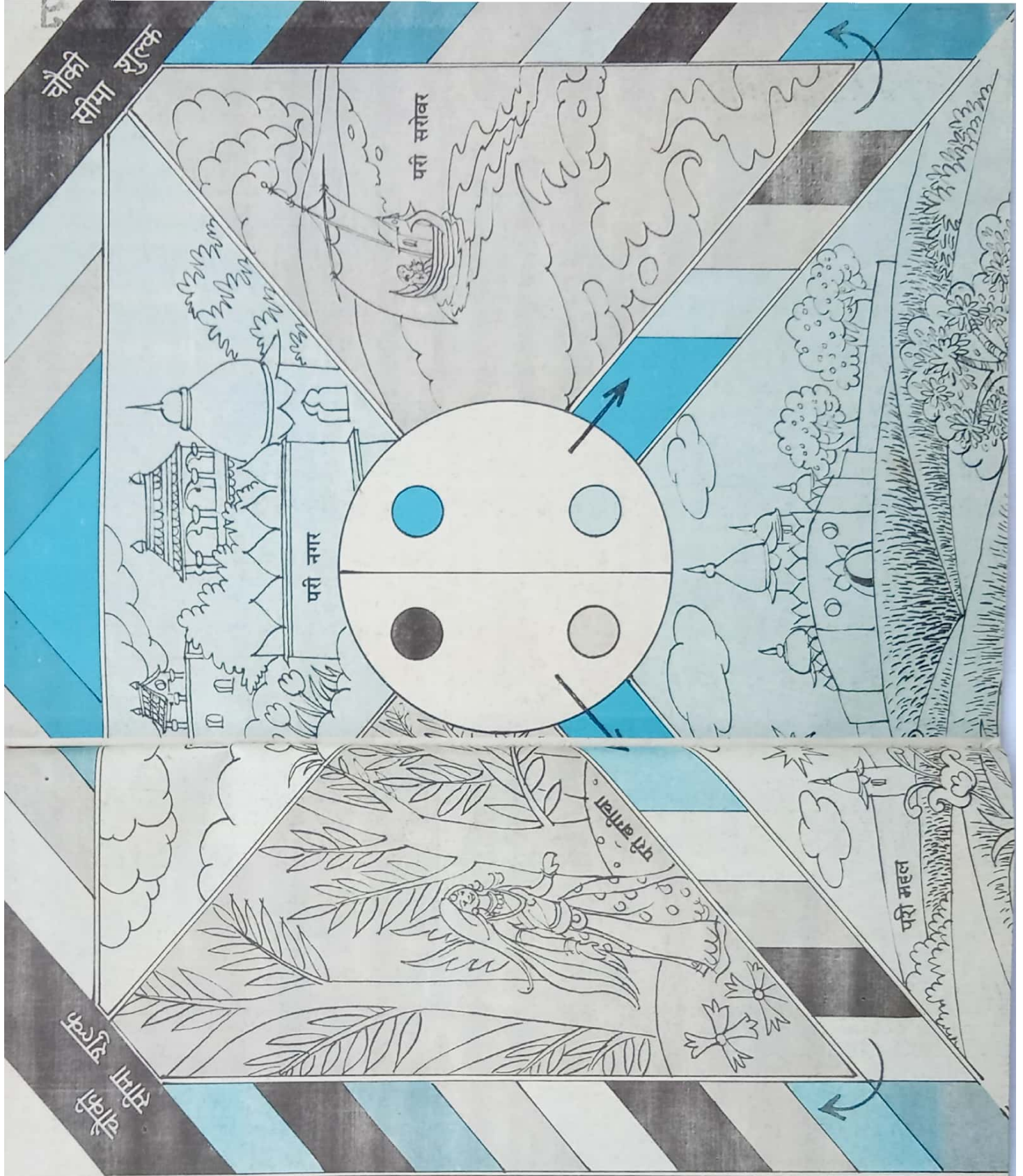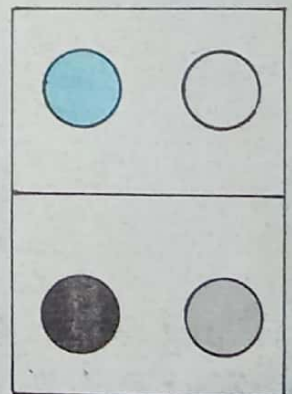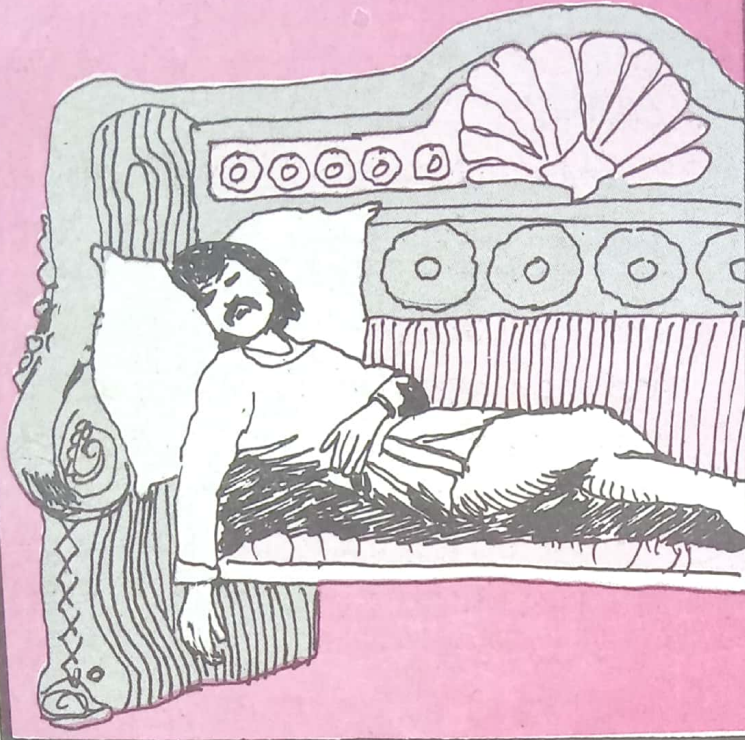
हीरों का हार

—ओम्प्रकाश सिंहल

सैकड़ों साल पुरानी घटना है । आयरलैंड के राजा ने अपनी पैदल सेना की एक टुकड़ी को डबलिन से कार्क जाने का हुक्म दिया । आदेश सुनते ही सेना ने कूच कर दिया । सैनिक कहीं भी आराम किए बिना, दिन भर चलते रहे । अंधेरा होने से कुछ देर पहले वे फरमाय गांव पहुंचे । अब तक सैनिक बेहद थक चुके थे ।

कप्तान गांव के सरपंच के पास गया । उन दिनों सेना रात को जिस गांव में रुकती, उस गांव के सरपंच को सैनिकों के ठहरने और खाने-पीने का प्रबंध करना पड़ता था । कप्तान ने गांव के सरपंच से प्रबंध करने के लिए कहा । सरपंच ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"आप चिंता मत कीजिए । मैं चुटकियों में सारा प्रबंध किए देता हूं ।" उसने अफसरों को संपन्न घरों में टिकाया, एक घर में एक । संख्या ज्यादा होने के कारण एक-एक घर में कई-कई सैनिकों को टिकाना पड़ा । गांव के ज्यादातर लोग गरीब थे, इसलिए सैनिकों को मनचाहा आराम न मिल सका । बहुतों को जमीन पर सोना पड़ा । खाने को मिले सिर्फ भुने हुए आलू ।

टुकड़ी के गांव में पहुंचते ही, एक सैनिक सरपंच के यहां पानी पीने गया । उस सैनिक का नाम था फिन । सरपंच ने उसे आदरपूर्वक बिठलाया । फिर नौकर से पानी लाने के लिए कहकर टुकड़ी के कप्तान से मिलने बाहर आ गया । फिन बहुत थका हुआ था । पानी पीते-पीते उसकी आंखें झपकने लगीं। वह सोफे पर लेट गया । लेटते ही नींद आ गई । सरपंच अन्य सैनिकों को ठहराने में व्यस्त हो गया । उसे फिन का ध्यान ही न रहा ।

सरपंच ने जैसे-तैसे सारे सैनिकों के ठहरने की व्यवस्था की । अब गांव में इतनी भी जगह बाकी नहीं बची थी कि एक भी सैनिक और ठहराया जा सकता । सरपंच यह सोचते हुए घर लौटा कि चलो सारा इंतजाम हो गया । लेकिन घर पहुंचते ही फिन ने उसके सामने हाजिर होकर कहा—"श्रीमन्, यह बताने की कृपा करें कि मेरे ठहरने का प्रबंध कहां किया गया है ?"

सरपंच सोच में पड़ गया । वह क्या जवाब दे ? गांव में कोई भी जगह बाकी न बची थी । वह उसे कहां ठहराए ! सहसा उसे एक शरारत सूझी । वह बोला—"तुम थिरैना के मिस्टर बैरी के यहां ठहरोगे । हमारे अड़ोस-पड़ोस में उसी का घर सबसे शानदार है ।" यह सुनकर फिन बहुत खुश हुआ ।

थिरैना के मिस्टर बैरी कभी गांव के मुखिया थे । गांव की सबसे ऊंची पहाड़ी पर उनका घर था । घर क्या था, राजमहल था । दूर-दूर तक मशहूर थी उसकी अद्‌भुत बनावट । मिस्टर बैरी स्वभाव के बेहद अच्छे थे । हमेशा दूसरों की भलाई के लिए तत्पर । दुष्टों को तुरंत दंड देने वाले । कहते हैं, उनके इस स्वभाव से प्रसन्न होकर परियां बीसियों बार उन्हें एक से एक विचित्र उपहार देकर गई थीं । यह भी सुना जाता है कि एक बार परियों ने उन्हें अपने यहां राज्य करने की विनती की थी, पर उन्होंने वह निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था । लेकिन अब तो उन्हें मरे हुए सैकड़ों साल बीत गए थे । रात की कौन कहे, वहां दिन में जाते हुए भी डर लगता था । बेचारे फिन को यह सब

मालूम नहीं था। वह सरपंच की बात सुन खुशी-खुशी उसके घर से बाहर निकला था।

फिन के बाहर निकलते ही सरपंच ने जोर से ठहाका लगाया। मन ही मन उसने कहा कि बेवकूफ बनाया बच्चू को। बड़ा होशियार समझता था अपने आपको।

सरपंच के घर से निकलने के बाद फिन ने एक गांव वाले से थिरैना के मिस्टर बैरी का पता पूछा। वह मुसकराकर आगे बढ़ गया। गांव के दूसरे, तीसरे, चौथे लोग ने भी यही किया। सबने सुना, हंसे और चल दिए। आखिर एक गांव वाले को दया आ गई। वह बोला—"क्या सचमुच आपके ठहरने का इंतजाम वहां किया गया है? आज तक तो वहां किसी को ठहराया नहीं गया।"

फिन ने कहा—"मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं। मेरे ठहरने का इंतजाम वहीं है।"

गांव वाले ने जवाब दिया—"कोई बात नहीं। सामने जो पहाड़ी दिखलाई दे रही है, उसी का नाम है थिरैना। श्री बैरी का शाही महल उसी पहाड़ी की चोटी पर है। गांव की सीमा समाप्त होने पर आपको एक रास्ता दिखलाई देगा। वह सीधा उस पहाड़ी पर जाएगा।" फिन ने गांव वाले को धन्यवाद दिया और पहाड़ी की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा।

फिन तेज कदमों से चल पड़ा। वह सोच रहा था कि वहां उसका भव्य स्वागत होगा। लेकिन पहाड़ी पर चढ़ते हुए वह यह भी महसूस करता रहा कि चढ़ाई काफी कठिन है और रास्ता घुमावदार। वह गिरता-पड़ता आगे बढ़ता रहा। अचानक उसे घोड़ों की टाप सुनाई दी। उसने पीछे मुड़कर देखा। इस बीच घुड़सवार उसके पास आ गया था। लम्बा-चौड़ा शरीर था उस घुड़सवार का। भूरे रंग का घोड़ा हवा से बातें करता था। घुड़सवार ने घोड़ा रोकते हुए पूछा—"तुम कहां जा रहे हो?"

फिन ने जवाब दिया—"सरपंच ने मुझे थिरैना के मिस्टर बैरी के यहां ठहरने का हुक्म दिया है। मैं वहीं जा रहा हूं।"

यह सुनकर घुड़सवार जोर से हंसा। फिर बोला—"अच्छा ही हुआ कि आपसे रास्ते में मुलाकात हो गई। मेरा ही नाम बैरी है। मेरे पीछे-पीछे चले आइए।"

फिन को अत्यंत सम्मानपूर्वक महल के भीतर ले जाया गया। एक आलीशान ड्राइंगरूम में बैठाया गया। बैठते ही उसे स्वादिष्ट शरबत पीने को दिया गया। आधा गिलास पीते-पीते उसकी सारी थकान जाती रही। मिस्टर बैरी ने उससे बातों-बातों में कहा—"बड़े मौके से हुआ आपका आना। कुछ समय पहले परियां मुझे अपने यहां ले गई थीं।"

फिन ने सपने में भी न सोचा था कि किसी दिन उसे ऐसा शानदार भोजन खाने को मिलेगा कि वह एक बार में सारे व्यंजन चख भी न पाएगा। और ऊपर से यह आग्रह! यह तो उसे अभी भी सपने-सा लग रहा था।

भोजन के बाद मिस्टर बैरी फिन को शयनागार में ले गए। बेहद खूबसूरत कमरा था। पलंग इतना बड़ा कि पांच-सात आदमी एक साथ लेट जाएं, तो भी दो-चार के लिए जगह बची रहे। परों से तैयार किया गया नरम-नरम बिस्तरा। फूलों की भीनी-भीनी महक। मिस्टर बैरी ने फिन से कहा— "श्रीमन्, अभी जब मैं परीलोक से यहां आ रहा था, तब परियों ने मुझे हीरों का यह खूबसूरत हार दिया था। आप इसे मेरी ओर से सरपंच को भेंट में दे दीजिएगा। और हां, अब आप विश्राम कीजिए। बहुत थक गए होंगे।"
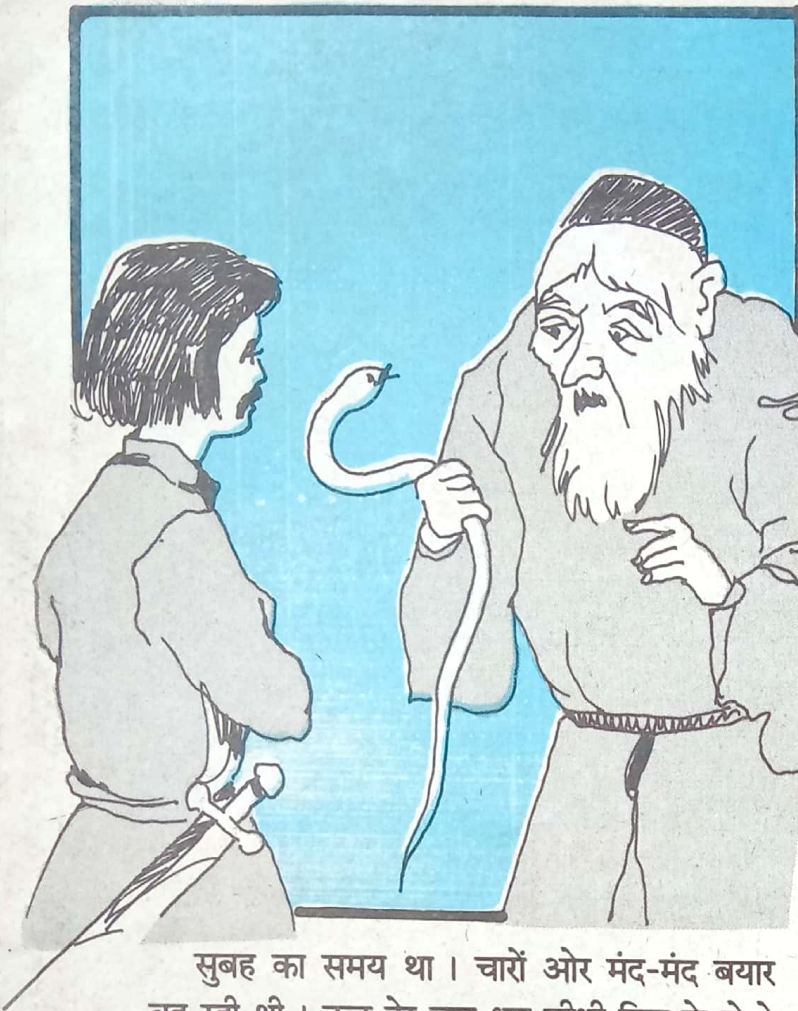
सुबह का समय था। चारों ओर मंद-मंद बयार बह रही थी। कुछ देर बाद धूप सीधी फिन के चेहरे पर पड़ने लगी। इससे फिन की आंख खुल गई। पर यह क्या ? उसने देखा कि वह एक चट्टान पर लेटा हुआ है। न कहीं आरामदेह नरम गद्दा है, न तिमंजिला महल। फिन ने आंखें मल-मलकर चारों ओर देखा। कहीं कुछ नहीं दिखलाई दिया। तो क्या उसने रात को सपना देखा था ? लेकिन मिस्टर बैरी ने सरपंच को देने के लिए हीरों का जो खूबसूरत हार दिया था, वह तो ज्यों का त्यों सिरहाने रखा था। सूरज की किरणें पड़ने पर वह रात से भी ज्यादा दमक रहा था। नहीं, वह सपना नहीं था। शायद परियां मिस्टर बैरी को महल समेत परीलोक ले गई थीं।

फिन ने पहाड़ी से उतरना शुरू किया। वह सीधा सरपंच के घर गया। सरपंच ने पूछा—"कहिए श्रीमन्, कैसी गुजरी आपकी रात ?" फिन ने उत्तर दिया—"बहुत बढ़िया। थिरैना के मिस्टर बैरी मुझे रास्ते में मिल गए थे। वह आग्रहपूर्वक अपने साथ ले गए। खूब आवभगत की।"

सरपंच को यह सुनकर बड़ा अचम्भा हुआ। वह बोला—"क्या कहा आपने ? मिस्टर बैरी आपको रास्ते में मिल गए थे ! उन्होंने आपकी बड़ी आवभगत की ?"

"जी हां। और यह खूबसूरत हार आपके लिए भेंट में भेजा है।"—यह कहकर फिन ने वह हार सरपंच की ओर बढ़ाया। लेकिन यह क्या ? सरपंच के हाथ में पकड़ने से पहले ही हार सांप के रूप में बदल गया। सरपंच पीछे-पीछे हटता गया और सांप उसकी ओर बढ़ता गया। सरपंच जोर-जोर से चीखने लगा—"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। यह सांप मुझे डस लेगा।"

घर के सभी लोग दौड़े-दौड़े आए। पर उन्हें सांप कहीं नहीं दिखाई दिया। वे हैरान थे कि सांप कहीं नहीं था और सरपंच दहाड़ रहा था—"बचाओ, मुझे इस सांप से बचाओ।"

अचानक सरपंच को लगा कि थिरैना के मिस्टर बैरी ने उसे अपनी भूल का अहसास कराने के लिए ही यह सांप भेजा है। उसे माफी मांग लेनी चाहिए। यह सोचते ही उसके मुंह से निकला—"सर्पराज, मैं वचन देता हूं कि भविष्य में किसी को भूलकर भी नहीं सताऊंगा। कभी नहीं करूंगा भद्दा मजाक। इस बार छोड़ दीजिए महाराज ! एक बार क्षमा कर दीजिए।"

क्षमा मांगते ही सर्पराज अंतर्धान हो गए। उनके अंतर्धान होते ही सरपंच ने फिन के पैरों में पड़कर कहा—"मुझे माफ कर दीजिए। मैं अपने किए पर बहुत शर्मिंदा हूं।"

सब लोग हैरान थे कि माजरा क्या है ? रहस्य तो सिर्फ सरपंच को मालूम था।

फिन अपना पैर छुड़ाने के लिए पीछे-पीछे हट रहा था, लेकिन सरपंच ने उसके पैर नहीं छोड़े। सरपंच बोला—"जब तक आप मुझे माफ नहीं करेंगे, तब तक मैं आपको जाने नहीं दूंगा।"

आखिरकार फिन को कहना पड़ा—"अच्छा बाबा, माफ किया। अब तो छोड़ दो मेरे पैर।"

सरपंच ने फिन के पैर छोड़ दिए। वह भागता-भागता अपने साथियों में जा मिला। सेना तेज कदमों से कार्क की ओर बढ़ चली। **(आयरलैंड)**

हवा पर सवारी

एक जमींदार था। बड़ा लालची। एक-एक पैसे के लिए...

जुल्म की सजा जरूर मिलेगी इसे...

मारो। जब तक लगान की पाई-पाई न दे।

भगवान बचाए ऐसे लालची से!

सरकार, बस। मर गया...

जमींदार को भी चोरों का भय सताने लगा। गांव के पास घना जंगल था। जमींदार ने अपना धन समेटा। आधी रात को जा पहुंचा जंगल के बीचों-बीच...
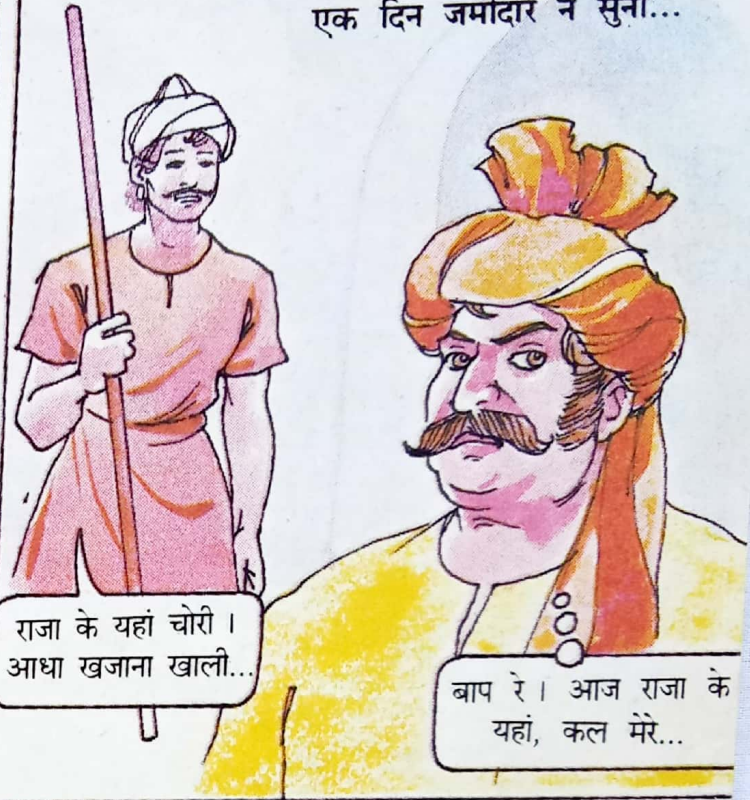
उस रात जंगल में परियां आई थीं। अपने पंख उस नीम के पत्तों में छिपाकर दूर खेल रही थीं। गड्ढा खुदने की आवाजें सुनीं, तो...

ुरंत दो परियां लकड़हारिन का रूप धर
र्मींदार के पास पहुंचीं। उससे
ड्ढा न खोदने की प्रार्थना की,
गर जमींदार ने...
ौन हो तुम? ाग जाओ, वरना...
हम परियां हैं। इस पेड़ पर हमारे पंख रखे हैं। यह गिर गया, तो...
जो मांगोगे, हम देंगी। पेड़ न गिराओ!

जमींदार ने पेड़ पर रखे पंख देखे, तो परीलोक को हथियाने की सोची। शर्त रखी...
तो मुझे परीलोक ले चलो!
हाय दैया, यह कैसे होगा?
कुछ और मांगो!

जमींदार अड़ गया। परियां परेशान। मोहलत मांग अपनी सखियों के पास पहुंचीं। सारी बात बताई...
हम फंस गए। आदमी को परीलोक कैसे ले जाएं?
सुनो..सुनो..
पंख कैसे मिलेंगे?
उसे पेड़ से दूर हटाने का उपाय

तोते ने उपाय बताया। परियां पहुंचीं जमींदार के पास। बोलीं—'चलो परीलोक'। जमींदार खुश उन्हें पेड़ से पंख उतारने दिए। मगर...
तुमने हमें अपने जाल में...
कोई बात नहीं। इन्हें सबक जरूर सिखाऊंगा।

अब जमींदार रोज रात को परियों की खोज में जंगल छानता रहता । एक रात...
परियां ही हैं । झाड़ी में पंख छिपा रही हैं ।
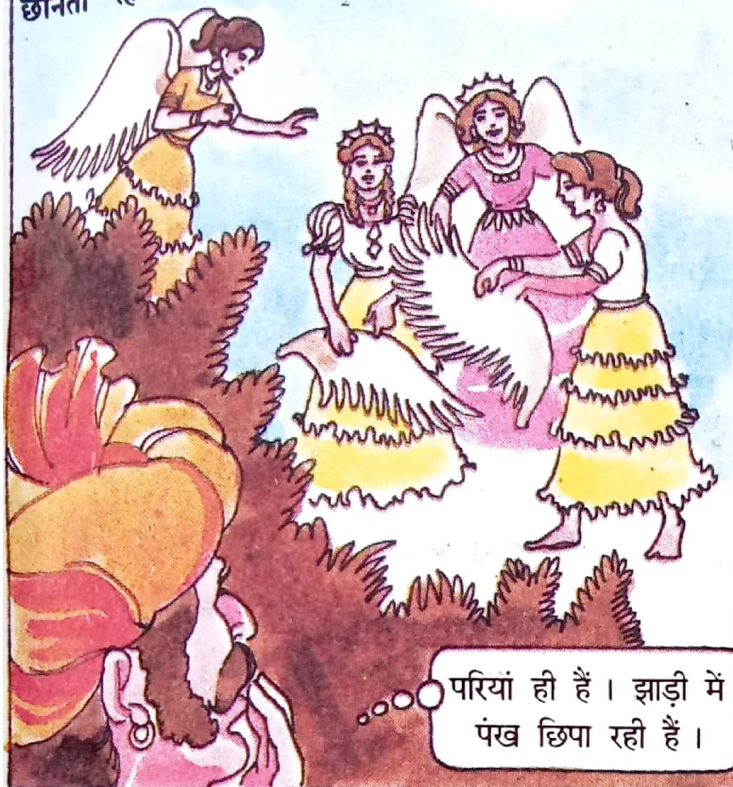
पंख छिपा परियां खेलने चली गईं । जमींदार ने चुपके से जा,सारे पंख चादर में बांध लिए । खेलकर परियां लौटीं, त अवाक...
अरे, यह तो वही आदमी है !
आज जान नहीं छूटेगी...
अब परी लोक नहीं, तो पंख नहीं । सबको जला दूंगा...

परियों के लाख समझाने-मनाने पर भी जमींदार न माना, तो...
हम चारों कोनों से चादर पकड़ लेंगी...
तुम्हें परी लोक ले जाएंगी...
इस चादर पर बैठ जाओ...

परियों की बात सुन जमींदार जोर से हंसा.
फिर मूर्ख बना रही हो । आकाश में जा,चादर छोड़ दोगी, तो... न...न...
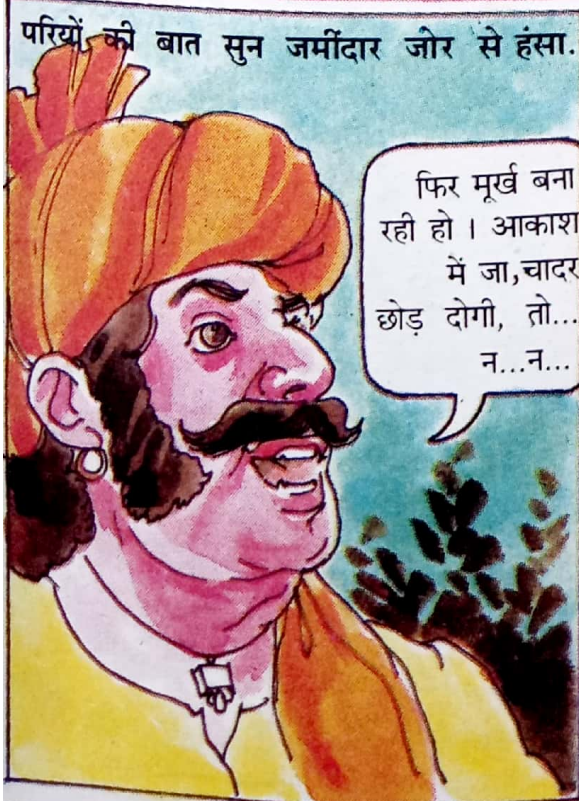
परियां फिर परेशान...
तो तुम ही बताओ, कैसे ले चलें ?
जमींदार बोला—'मैं किसी परी के पैर कसकर पकड़ लूंगा । उसके साथ परीलोक जा पहुंचूंगा ।'

परियां मान गईं और...
इतना बोझ....मर गई
उफ, पैर टूटे...
ाह ! वाह !!

नों हाथ पसार उन्हें लपकना ही चाहा था कि...
बचाओ ! हाय, पैर छूट गए। बचाओ !

कोमल परियां जमींदार को ढोते-ढोते थक गईं। उनका पसीना मोती बन-बनकर नीचे गिरने लगा...
अरे, मोती ! इतने चमकदार ! बेहद कीमती...
जमींदार पसीने से बने उन मोतियों को देख मन पर काबू न रख सका

पता नहीं, आकाश से लालची जमींदार कहां गिरा ? गांव में वह आज तक नहीं पहुंचा...
पता नहीं, कहां है ? है भी या नहीं। खोजने भी कौन जाए ?
कहीं हो या न हो। उस लालची से जान तो छूटी। मगर धन्यवाद किसे दें?

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष २८ अंक : ९; नई दिल्ली; जुलाई '९२, आषाढ़-श्रावण, शक सं. १९१४

बचे रहें सब पेड़-फूल, नदी, झरने, आदमी

रिओ द जिनीरो । हवा और पानी में तेजी से प्रदूषण बढ़ रहा है । जंगल कट रहे हैं । अनेक जीव जंतु लुप्त हो गए हैं । यह हमारी पृथ्वी के लिए खतरनाक है । इन्हीं समस्याओं पर विचार करने के लिए, यहां धरती शिखर सम्मेलन हुआ । इसका उद्घाटन राष्ट्र संघ के महासचिव श्री बुतरस घाली ने किया ।

रिओ ब्राजील की पुरानी राजधानी है । यहां हुए धरती सम्मेलन में भारत सहित १७८ देशों ने भाग लिया । दस हजार से ज्यादा प्रतिनिधि विश्व के कोने-कोने से रिओ पहुंचे । कहते हैं, पर्यावरण पर यह अब तक का सबसे बड़ा सम्मेलन था ।

श्री घाली ने कहा कि जो देश पर्यावरण को दूषित करें, उन्हें दंड दिया जाए । धरती आज बीमार है और इसके लिए अमीर तथा गरीब दोनों ही देश अपराधी हैं । अगर पर्यावरण को इसी तरह नष्ट किया जाता रहा, तो एक दिन आएगा कि मानव सभ्यता ही मिट जाएगी ।

उनके सुझाव पर सम्मेलन में भाग लेने वालों ने धरती के लिए दो मिनट का मौन रखा ।

संस्कृत में बाल कहानियां

दिल्ली । शिक्षा आयुक्त श्री एस.पी. अग्रवाल ने 'बालैक विंशतिः' नामक संस्कृत बाल कथा-संग्रह का विमोचन किया । उन्होंने कहा कि ये कथाएं अत्यंत सरल और सरस भाषा में लिखी गई हैं । रामायण-महाभारत की कथाओं से बालकों को प्रेरणा मिलेगी । इसमें जयप्रकाश भारती की उन कहानियों का सरल अनुवाद है जिन्हें भारत में पहली बार हंस एंडरसन पुरस्कार मिला है । पुस्तक शारदा प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली ने प्रकाशित की है । अनुवाद कवि मधुर शास्त्री ने किया है । समारोह दिल्ली संस्कृत अकादमी की ओर से हुआ ।

मधुमक्खियों की कैद में

विलिस्टन । एक ट्रक में मधुमक्खियों के छत्ते ले जाए जा रहे थे । रास्ते में टक्कर होने से ट्रक उलट गया । मधुमक्खियां छत्तों से निकलकर इधर-उधर मंडराने लगीं । ड्राइवर तीन घंटे तक ट्रक में ही दुबका बैठा रहा । क्योंकि मधुमक्खियों ने उसे बाहर नहीं आने दिया । जो उसे बचाने आया, उसे डंक मार-मार कर भगा दिया । बाद में जब मधुमक्खियों का क्रोध शांत हुआ, तब जाकर ड्राइवर बचकर भाग सका ।

अमरीकी बाल मजदूर

जिनेवा । अमरीका में बाल मजदूरों से काम करवाने के खिलाफ बहुत कड़े कानून हैं । लेकिन १९९० में ही वहां पचीस हजार बाल मजदूर थे । नन्हे बच्चे पूरी दुनिया में कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन उन्हें बहुत कम मजदूरी मिलती है ।

जीवन का नाश

न्यूयार्क । वनों के विनाश के साथ-साथ जीवन-जंतुओं का भी विनाश हो रहा है । अमरीकी वैज्ञानिक ई.ओ. विल्सन का कहना है— वनों की कटाई से हर वर्ष पचास हजार जीवों की प्रजातियां लुप्त हो रही हैं यानी रोजाना १४० बिना रीढ़ वाले जीव खत्म हो जाते हैं ।

लो नौकरी

रोम । आदा रोसी ने नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र दिया था । प्रार्थना पत्र का जवाब आया कि उसे नौकरी मिल गई है । लेकिन आदा का कहना है कि यह प्रार्थना पत्र तो उसने सत्ताइस वर्ष पहले दिया था । अब तो वह रिटायर भी होने वाली है ।

विमान का इंजन गिरा

डलास । एक यात्री विमान हवाई अड्डे से उड़ा । उसमें ४४ यात्री सवार थे । एकाएक न जाने क्या हुआ, विमान का दायां इंजन जमीन पर आ गिरा । जैसे ही विमान चालक को इंजन गिरने का पता चला, उसने विमान को सकुशल नीचे उतार लिया । किसी यात्री को जरा-सी भी चोट नहीं आई ।

शाबाश किरण

वाशिंगटन । अमरीकी गणित संघ के ओलम्पियाड में किरण कंडलय को इस वर्ष फिर प्रथम स्थान मिला । किरण के माता-पिता श्रीधर और कस्तूरी कर्नाटक के उडुपी जिले के रहने वाले हैं ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

नंदन बाल समाचार

वही सच्चा हिम्मती है, जो कभी निराश नहीं होता। —कनफ्यूशस

हर तरफ नया-नया

हम अपने देश को नहीं जानते या बहुत ही कम जानते हैं। जानने की कोशिश ही नहीं करते। किताबों-पत्रिकाओं से कुछ जानकारी मिल जाती है। लेकिन उतना ही काफी नहीं है। देश को जानने-समझने के लिए यात्रा जरूरी है। घुमक्कड़ घूम-घूमकर अपनी आंखों से देखता है। उसका ज्ञान ज्यादा सही होता है।

बहुत पहले धर्म गुरुओं ने 'चार धाम की यात्रा' चलाई। उन दिनों बढ़िया साधन न थे। समय भी काफी लगता था। फिर भी हजारों लोग यह यात्रा करते थे। छुट्टियों में कभी पहाड़ी सैरगाह पर चले गए। या कभी एक दिन के पिकनिक पर हो आए। इससे आगे दस-पंद्रह दिन या महीने भर की यात्रा पर भी निकलना चाहिए। हर दिशा में बहुत कुछ नया है— देखने और जानने के लिए। देश का बड़ा भाग समंदर से घिरा है। उसकी लहरें आगे बढ़-बढ़ आया करती हैं। शायद कहती हैं— आओ खेलें!

गायक कुत्ता

टोकियो। जापान में एक अनोखा कुत्ता रहता है। जब उसका मालिक गाता है, तो कुत्ता भी उसके साथ सुर मिलाता है।

धरती ठंडी हो

नई दिल्ली। धरती लगातार गर्म हो रही है। यदि इसी तरह गर्मी बढ़ती रही, तो मलेरिया जैसी बहुत-सी घातक बीमारियां पूरी दुनिया में फैल जाएंगी।

दो घंटे आगे भागा समय

पेरिस। पिछले दिनों यहां विद्यार्थियों के एक झुंड ने हंगामा कर दिया। सरकार की तरफ से रेलवे स्टेशन, बस अड्डा या जहां भी कहीं बड़ी-बड़ी घड़ियां लगाई गई हैं, वहां ये लोग जा पहुंचे। सभी घड़ियों को दो घंटे आगे कर दिया। आने-जाने वालों ने समझा कि उन्हें हर काम में दो घंटे की देर हो गई है। बस, फिर क्या था— खूब अफरा-तफरी मची। पुलिस को पता चला, तो उसने सभी घड़ियों को ठीक किया।

बच्चों का बोझ कम करें

नई दिल्ली। स्कूली बच्चों में डिप्रेशन बढ़ रहा है। इन बच्चों की उम्र ८-१२ वर्ष है। हर वर्ष अकेले अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में डिप्रेशन के शिकार छह सौ बच्चे आते हैं। इस कारण कई बार बच्चों को दिखाई देना बंद हो जाता है। कुछ को दौरे पड़ने लगते हैं। यहां तक कि बच्चे बुरी तरह से लड़ने-झगड़ने लगते हैं। बच्चों में इस बीमारी के बढ़ने का प्रमुख कारण उन पर पड़ने वाला पढ़ाई का बोझ है। माता-पिता तथा अध्यापकों के दबाव को बच्चा झेल नहीं पाता और डिप्रेशन का शिकार हो जाता है।

ज्यादा गहरी स्वेज नहर

काहिरा। स्वेज नहर को अधिक गहरा किया जा रहा है। इसके बाद अधिक बड़े जलयान नहर में से गुजरने लगेंगे। अभी इन जहाजों को अफ्रीका महाद्वीप का चक्कर लगाकर जाना पड़ता है, इससे यात्रा में बहुत अधिक समय लगता है।

चाकलेट बेची तो....

स्टाकहोम। स्वीडन के एक डाक्टर ने मोटापा घटाने का अनोखा तरीका निकाला। जो महिलाएं इलाज के लिए आती थीं, उनकी बहुत-सी तसवीरें खींची गईं। फिर उन्हें मिठाई, चाकलेट और आइसक्रीम बेचने वालों के पास भेजा गया। चित्र के पीछे चेतावनी लिखी थी—'यदि इस महिला को आपने मीठी चीजें बेचीं, तो आप इसकी मौत के जिम्मेदार होंगे।'

वैदिक गणित

लखनऊ। अब विद्यार्थियों को गणित से डरने की जरूरत नहीं। क्योंकि वैदिक गणित से घंटों में हल होने वाले सवाल मिनटों में हल हो जाया करेंगे। उत्तर प्रदेश के विद्यालयों में वैदिक गणित को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है।

वैदिक गणित वेदों के १२० शब्दों को मिलाकर बने १६ सूत्रों का गणित है। इससे कठिन से कठिन प्रश्न मिनटों में हल किए जा सकते हैं।

बधाई सनी!

नई दिल्ली। सात साल का सनी दिल्ली से बम्बई की साइकिल यात्रा पर निकला। दूरी १८०० किलोमीटर। एअर चीफ मार्शल एन.सी. सूरी ने सनी को विजय चौक में हरी झंडी दिखाई। सनी की यात्रा का उद्देश्य नेत्रहीनों के लिए धन जमा करना है।

पुलिस में सूअर

हलोवर। जर्मनी में एक मादा सूअर नशीले पदार्थों को दूर से ही सूंघ लेती है। उसे पुलिस में नौकरी देने की बात चली, तो सब मुकर गए। सूअर भी भला पुलिस में होते हैं। इस पर एक नेता ने सूअर के पक्ष में जोरदार दलीलें दीं। अब उसे बाकायदा पुलिस में भर्ती कर लिया गया है।

इस सदी का अंतिम दिन

अजमेर। गवर्नमेंट कालिज के छात्र रोहित कानोडिया ने अनगिनत वर्षों का दिमागी कैलें डर तैयार किया है। गुजर चुके सैकड़ों वर्ष पुराने या आनेवाले सैकड़ों वर्षों के दिन, वार और मास के बारे में वह झट बता देता है। पत्रकारों के पूछने पर रोहित ने बताया कि एक जनवरी सन् २००० का दिन शनिवार होगा। इकत्तीस दिसम्बर २००० का दिन रविवार होगा। यानी इस सदी का अंतिम दिन छुट्टी का दिन होगा। उसका अजीबो गरीब फार्मूला क्या है, वह अभी बताना नहीं चाहता।

जमीन में नगर

नई दिल्ली। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने खुदाई में हड़प्पाकाल का नगर खोज निकाला है। हजारों वर्ष पुराने इस नगर की संस्कृति बहुत विकसित थी। इसकी रक्षा के लिए चारों ओर ऊंची और मजबूत दीवार बनी हुई थी।

सेब और आलू

शिमला। हिमाचल प्रदेश सेब की खेती के लिए मशहूर है। लेकिन अब यहां से पूरे भारत में आलू भी भेजे जाते हैं।

बच्चों का संस्थान

ओस्लो। नार्वे में 'चाइल्ड वाच' संस्थान बनाया गया है। यह संस्थान दुनिया भर के बच्चों की समस्याओं पर नजर रखेगा। जरूरतमंद बच्चों की मदद करेगा।

सिक्कों का ढेर

रेडमांड। अमरीका के इस नगर के स्कूली बच्चों ने अनोखा काम कर दिखाया है। उन्होंने दस लाख से अधिक सिक्के जमा किए जिनका मूल्य सवा लाख डालर है। बच्चे उन लोगों की सहायता करेंगे जिनके पास रहने के लिए अपने घर नहीं हैं।

ज्ञानपीठ पुरस्कार

नई दिल्ली। बंगला के जाने-माने कवि हैं सुभाष मुखोपाध्याय। उन्हें इस वर्ष ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है।

बेकार की शर्त

डेकाल्ब। (अमरीका) यहां बच्चों में एक शर्त लगी कि सैंडविच कौन सबसे जल्दी खा सकता है। शर्त जीतने के चक्कर में एक बच्चे ने पूरा का पूरा सैंडविच मुंह में ठूंस लिया। बच्चे का दम घुटने लगा। एक बेकार की शर्त के कारण बच्चे को अपनी जान गंवानी पड़ी।

पुरानी घड़ी नई चाल

तिरुअनंतपुरम। यहां की १७० वर्ष पुरानी प्रसिद्ध घड़ी फिर से चलने लगी है। यह पद्मनाभ स्वामी मंदिर के निकट बनी हुई है। घंटा बजने पर घड़ी में ऊपर बना आदमी का चेहरा मुंह खोलता है। दोनों ओर बनी बकरियां आपस में सींग लड़ाती हैं। इस दृश्य को देखने के लिए बहुत-से सैलानी यहां आते हैं।

बाल नाटकों का विकास

नई दिल्ली। इंडियन पीपुल्स थिएटर (इप्टा) का यह स्वर्ण जयंती वर्ष है। इप्टा ने अपने घोषणा-पत्र में कहा है कि 'बाल नाटकों' को विकसित करने की आवश्यकता है। इसके लिए देश भर में अभियान चलाया जाएगा।

चटपट फैसला

जयपुर। मजिस्ट्रेट डा. पदमकुमार जैन ने मुकदमों का फैसला करने में नया रिकार्ड बनाया है। उन्होंने लोक अदालत शिविर लगाया। बारह दिन में दस हजार मुकदमों का फैसला किया। इस प्रकार एक घंटे में ११९ अर्थात एक मिनट में औसतन दो मुकदमों का निपटारा किया। डा. जैन अभी ४० वर्ष के हैं।

नन्हे समाचार

□ योजना आयोग की बैठकों में काजू की जगह चने खाने को मिला करेंगे। आयोग के सदस्य डॉ. जे.एस. बजाज का मानना है कि काजू में कोलेस्ट्रोल की मात्रा पाई जाती है।

□ शिता और निका-ये दो हथिनियां भारत से स्वीडन गई थीं। लेकिन वहां धन और स्थान की कमी पड़ने से इन्हें इंग्लैंड के एक चिड़ियाघर में भेज दिया गया है।

□ तिरुपति देवस्थानम के दान पात्र में कोई भक्त एक सोने की छड़ डाल गया। उसका वजन है एक किलो और मूल्य साढ़े चार लाख रुपए।

□ पूर्वी गोदावरी के एक किसान ने आम की ऐसी किस्म उगाई जिसमें ढाई से तीन किलो तक का आम लगता है। इसका नाम है— हाथी का दांत।

□ ट्रिनीडाड और टोबेगो में 'आगमन' नामक विशेष पर्व मनाया गया। इसे सौ वर्ष पहले यहां आए भारतीयों की स्मृति में किया गया।

□ हालैंड में एक कुत्ता पानी में जा रहा था। एकाएक विशाल मछली ने उस पर हल्ला बोल दिया। कुत्ता बुरी तरह घायल हो गया। उसे टांके लगाने पड़े।

□ लंदन संग्रहालय के तहखाने में ४००० वर्ष पुरानी एक पांडुलिपि मिली। यह एक मिस्री कविता है। इसे संग्रहालय ने बहुत पहले खरीदा था।

□ नेपाल का शेरपा आंग रिता सात बार माउंट एवरेस्ट को फतह कर चुका है। यह एक रिकार्ड है।

□ कोल्हापुर में आकाशवाणी का नया केंद्र खुल गया है। यह देश का एक सौ छत्तीसवां रेडियो स्टेशन है।

□ भारतीय बाल फिल्म सोसायटी का नाम अब बदल गया है। अब इसे राष्ट्रीय बाल और युवा फिल्म केंद्र के नाम से जाना जाएगा।

सचित्र समाचार

जानी-मानी कलाकार और नाटक निर्देशिका विजया मेहता को मध्य प्रदेश सरकार का कालिदास सम्मान।

जी.पी. फोंडके : विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार। हिन्दी, मराठी और अंग्रेजी में रचनाएं छपी हैं। मराठी में विज्ञान कथाएं लिखी हैं।

वैज्ञानिक आशीष दत्त को ↑ घनश्याम दास बिड़ला पुरस्कार : इसमें एक लाख रुपए दिए जाते हैं।

बधाई हो लिम्बाराम : चीन में हुई तीरंदाजी प्रतियोगिता में स्वर्णपदक मिला। ↓

भारत में बच्चों के बाइस्कोप की तरह जर्मनी का बाजा : आजकल बच्चों और बड़ों में बहुत लोकप्रिय हो रहा है।

हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा क प्रतियोगिता : पुरस्कृत कार्टून में स तेंदुलकर।

मोनिका सेलेस : इस बार का टेनिस टूर्नामेंट 'फ्रेंच ओपन' जीता। →

सिंहासन चोर
एक रात अभयनगर के बहुत से घरों में चोरियां हुईं। बंद कमरों से कीमती सामान गायब हो गया। सब परेशान थे। चोर कहां से आए, किधर से गए ?
कई लोग मिलकर राजदरबार पहुंचे फरियाद के लिए। वहां विचित्र बात सुनने को मिली। दरबार से राजसिंहासन गायब हो गया था।
पूरे नगर में घबराहट थी। राजा परेशान थे। कड़े पहरे के बीच से राजसिंहासन का गायब होना एक अनहोनी घटना थी। ऐसे में साधारण चोरियों का तो जिक्र ही क्या था।
नगर में पहरा कड़ा कर दिया गया। घरों में भी लोग सतर्क थे। रात भर पूरा नगर जागता रहा, पर कुछ पता न चला।
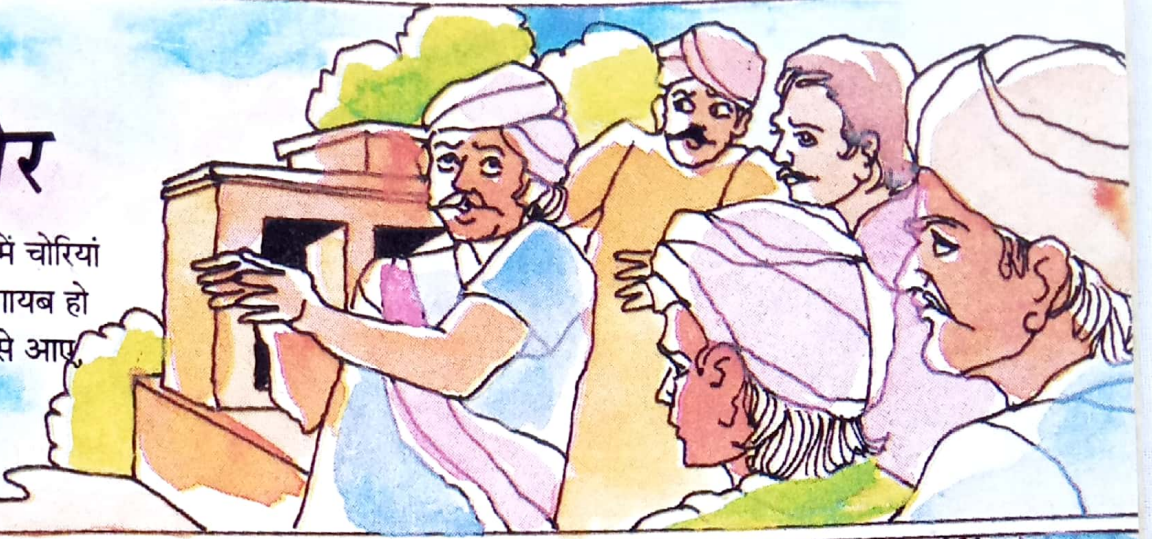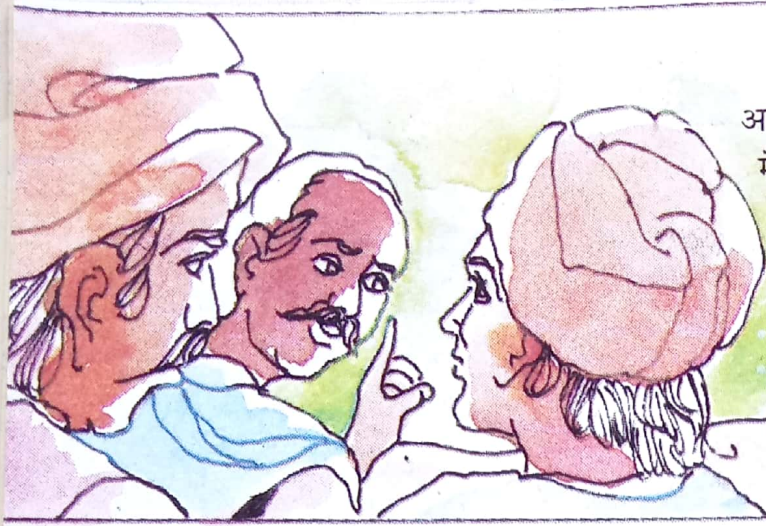
अगली रात एक और विचित्र घटना हुई। चोरी गया सामान एक मैदान में पड़ा मिला। पास में ही एक थाली में सोने के सिक्के रखे थे। सामान किसने चुराया और फिर वापस कैसे छोड़ गया— यह एक पहेली थी। लेकिन राजसिंहासन अब भी गायब था।
एक रात राजा देवसिंह महल में उदास बैठे थे। तभी उन्होंने आवाज सुनी— ''महाराज, बाहर मैदान में आइए।''
राजा मैदान में पहुंचे। धरती फटी और सिंहासन बाहर निकल आया। फिर एक बूढ़ा व्यक्ति भी दिखाई दिया।
सैनिक तलवारें लेकर दौड़े पर राजा ने रोक दिया।
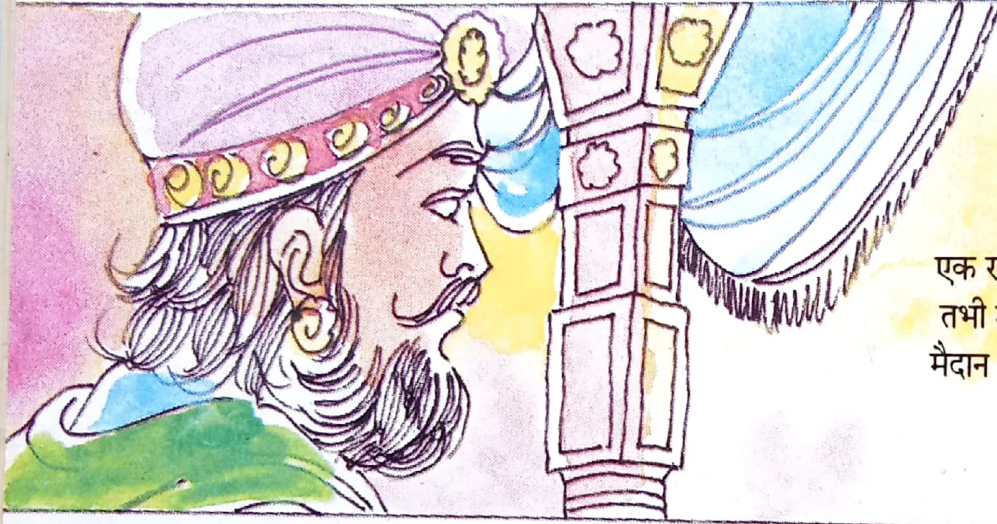
बूढ़े ने हाथ जोड़ कर कहा— ''महाराज, क्षमा करें । सिंहासन संभालिए । मेरे साथ चलकर अपराधी को दंड दीजिए ।''
राजा हैरान रह गए । जमीन में सीढ़ियां दिखाई दे रही थीं । वह कुछ घबरा रहे थे । सबने कहा— ''आप न जाएं, इस बूढ़े को गिरफ़्तार कर लें ।''
उस बूढ़े ने कहा— ''मैं पाताल नगर का राजा हूं । आप सैनिक लेकर मेरे साथ चलें । आप पर कोई विपत्ति न आएगी ।''
देवसिंह थे वीर । वह बूढ़े के पीछे-पीछे सीढ़ियां उतरने लगे । साथ में सैनिक भी थे ।
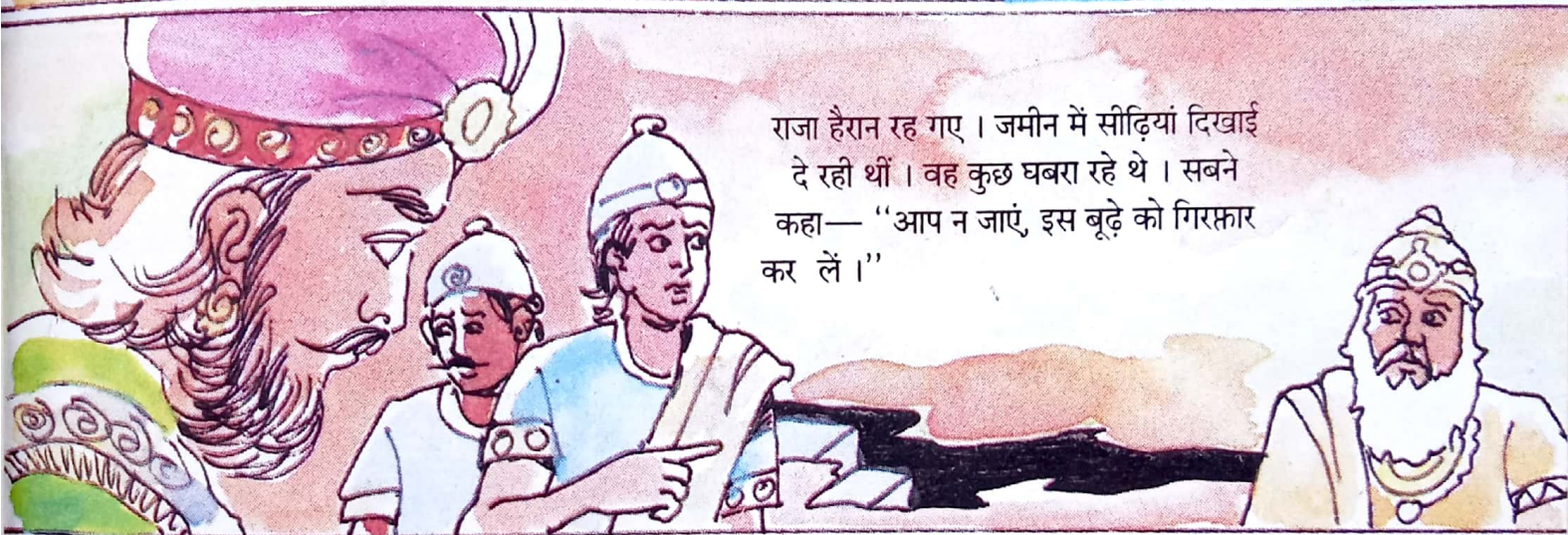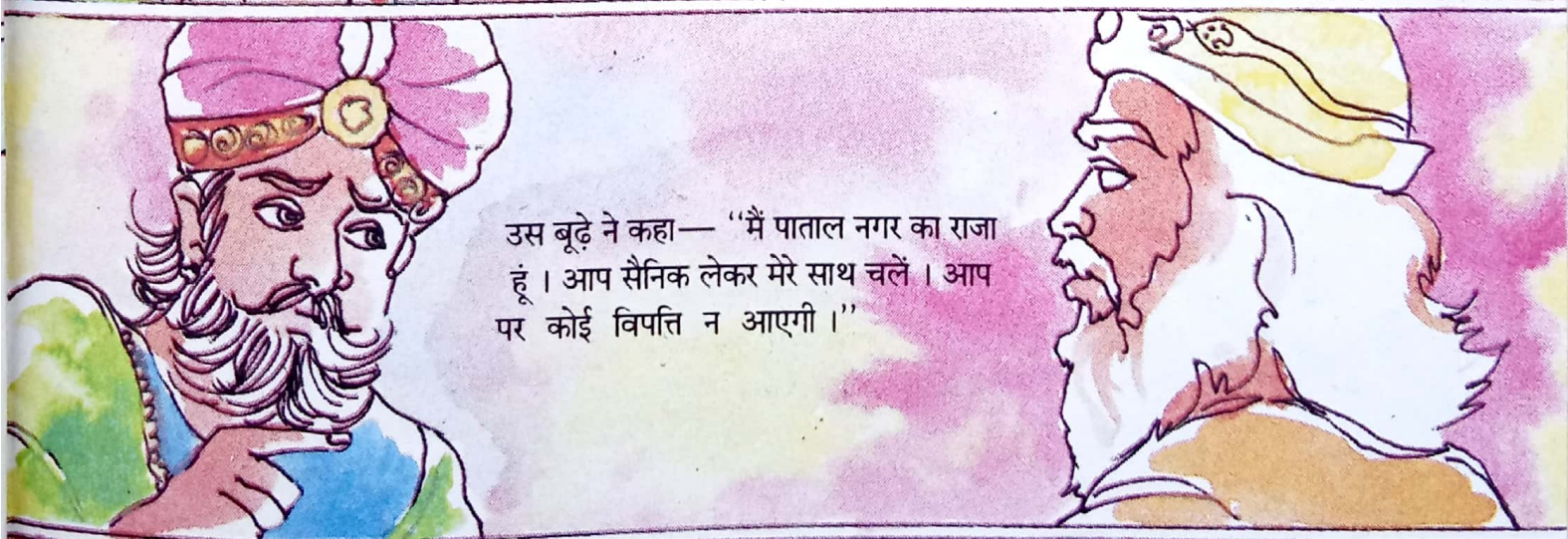
राजा देवसिंह ने देखा— एक शानदार नगर— वहीं एक व्यक्ति आग की लपटों से घिरा चीख रहा था। कह रहा था— "क्षमादान दो। क्षमादान दो। फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा।"
पाताल नगर के राजा ने कहा— "महाराज, यह मेरा बेटा है। इसी ने आपके नगर में अदृश्य रूप से चोरी करवाई थी। यह आपका अपराधी है। इसे जो चाहें दंड दें।"
राजा देवसिंह ने कहा— "आप कुमार को मुक्त कर दें। यह पश्चाताप कर रहा है। मैं अपने नगर की सुंदर-कलापूर्ण वस्तुएं भेंटस्वरूप आपके पास भेजूंगा।"
पाताल नगर का राजकुमार देवसिंह के पैरों पर गिर पड़ा। बोला— "आपके नगर का वैभव देखकर मेरा मन ललचा गया था।" देवसिंह पाताल नगर से लौटे, तो उन्होंने भेंटस्वरूप बहुत-सी सामग्री मैदान में रखवा दी। चीजें रात में वहां से गायब हो गईं। इस तरह दोनों राजा गहरे मित्र बन गए।

पेड़ का शाप

— प्रवीण कपूर

बहुत समय पहले एक मठ के समीप एक गरीब बूढ़ा रहता था। दूसरों की सेवा करने में उसे सुख मिलता था। स्वभाव से दयालु एवं ईमानदार था।

उस मठ में किसी देवता की एक मूर्ति थी। वह उसकी उपासना करता था। उसके मन में यह इच्छा होती कि रोज देवता को कुछ न कुछ भेंट चढ़ाए। पर भेंट न चढ़ा पाने के कारण, हमेशा उदास रहता।

एक दिन उसके घर में कोई भी वस्तु नहीं रही। उस दिन उसे भोजन तक नसीब नहीं हुआ। फिर भी वह उस मठ में गया। उसने देवता के सामने हाथ जोड़े। प्रार्थना की— "हे देवता ! मेरे पास तुम्हें देने को अब कुछ नहीं बचा है। हां, मेरी जिंदगी के कुछ दिन बचे हैं। वही तुम्हें भेंट चढ़ाता हूं। इसे स्वीकार करो।"

वह आंखें बंद कर बैठ गया। तभी जोर से गड़गड़ाहट हुई। मूर्ति में से आवाज आई— "चिंता मत करो। आज तक तुमने ईमानदारी और दूसरों की भलाई में जीवन बिताया है। इसका फल तुम्हें अवश्य मिलेगा।" फिर मूर्ति में थोड़ी-सी हलचल हुई। उसमें से एक देवता निकले। उनके हाथ में एक टोपी थी। टोपी की तरफ इशारा करते हुए बूढ़े से बोले— "यह जादुई टोपी है। इसे सिर पर पहनते ही तुम पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि की भाषा समझने लगोगे।" बूढ़ा आदमी कुछ बोलता या पूछता, इससे पहले ही देवता उस मूर्ति में समा गए। मूर्ति पूर्व अवस्था में आ गई।

बूढ़ा खुशी-खुशी वह टोपी सिर पर पहन आगे चल पड़ा। धूप से उसे गर्मी लगने लगी। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी दो कौए उस पेड़ पर आकर बैठ गए। एक कौआ पर्वतीय क्षेत्र से आया था। दूसरा समुद्र पार से। उन कौओं ने अपनी भाषा में एक-दूसरे का हालचाल पूछा।

बूढ़ा खुश था कि वह कौओं की बोली समझ रहा

है। उसकी थकान न जाने कहां चली गई ? वह ध्यान से उनकी बातें सुनने लगा। पहाड़ी इलाके से आए कौए ने उदास स्वर में कहा— "मुझे अपनी नहीं, पर अपने मित्र पेड़ की चिंता सता रही है। वह दिन पर दिन दुर्बल होता जा रहा है।"

"बताओ तो, पूरी बात क्या है ?"— दूसरे कौए ने पूछा।

— "लगभग छह वर्ष पहले की बात है। इस इलाके के एक अमीर आदमी ने अपने बगीचे में एक अतिथि-गृह का निर्माण कराया था। उसने एक पेड़ को कटवा दिया। पर उस पेड़ की जड़ें अभी भी हवा और पानी लेती हुई, दूर-दूर तक फैली हुई हैं। इसलिए पेड़ अभी तक जिंदा है। पर जैसे ही कोई शाखा या पत्ती निकलती है, उसे वहां का माली काट देता है। इसी से पेड़ पूरी तरह लहलहा भी नहीं पाता।"

"हाय, बेचारा !... लेकिन इसका कोई हल भी तो होगा।"— दूसरे कौए ने पूछा।

"पता नहीं, कुछ लोग इतने निर्दयी क्यों होते हैं ?

वे दूसरे का दुःख नहीं समझते । जानते हो, पेड़ ने उस अमीर को बीमार होने का शाप दे दिया है । यदि जल्दी से जल्दी उस पेड़ की जड़ों को निकालकर उन्हें दूसरी जगह में लगाया जाए, तो वह अमीर आदमी ठीक हो सकता है ।''

बूढ़े बाबा ने अपनी जादुई टोपी के कारण ये सारी बातें सुनीं । अमीर को ठीक करने की सोची । फिर उसने सोचा— 'यदि अमीर को मुझ पर विश्वास न आया....।' तभी उसे एक कारगर युक्ति सूझ गई— 'ज्योतिषी के रूप में जाना चाहिए । यही ठीक रहेगा ।' बूढ़े ने ज्योतिषी का वेश बनाया । तेजी से उस अमीर के घर की ओर बढ़ गया । घर पहुंचकर बूढ़े ने अमीर के घर का दरवाजा खटखटाया । अमीर की पत्नी ने दरवाजा खोला । बूढ़े ने कहा— ''आप बहुत चिंतित हैं । आपके पति पिछले छह वर्षों से बीमार हैं ।'' पत्नी आश्चर्य से बोली— ''जी ! आप कौन हैं ? आपको यह कैसे मालूम ? क्या आप उनको ठीक कर सकते हैं?''

''आप घबराएं नहीं । मुझ पर विश्वास कीजिए । मैं ज्योतिषी हूं । मुझे अपने पति के पास ले चलिए ।''— बूढ़े आदमी ने कहा ।

अमीर को देख, बूढ़ा थोड़ी देर चुप रहा । जैसे कुछ इलाज सोच रहा हो । फिर अमीर की पत्नी से बोला — ''क्या आज से छह वर्ष पूर्व आपने अपने बगीचे में एक अतिथि गृह बनवाया था ?''

—''हां, हां ! पर आपको कैसे मालूम ?''

— ''मैं रात में वहीं आराम करूंगा । फिर सुबह तुम्हारे पति का इलाज करूंगा ।''

रात के समय बूढ़े को नींद आने लगी । सिर पर टोपी थी ही । टोपी ने कमाल दिखाया । थोड़ी देर में उसे खुसुर-पुसुर की आवाज सुनाई दी । उसका ध्यान उधर गया । उसने देखा— बगीचे के सभी पेड़ बारी-बारी से उस कटे पेड़ के पास आ रहे थे । सागवान, पीपल, बबूल, नीम, सेब, चीकू की पत्तियां बारी-बारी से उस पेड़ से पूछ रही थीं—

''अब कैसे हो ? अब क्या हाल है ?''

''मेरा बचना मुश्किल है । मैं सांस तक नहीं ले पा रहा हूं । मेरा बचना कठिन है ।''— कटे पेड़ ने दुखी स्वर में कहा ।

पेड़ों की आपसी बातचीत बूढ़े को सुनाई दे रही थीं ।

सुबह होते ही बूढ़े ने माली और बढ़ई को बुलाया । बढ़ई ने कटे पेड़ की जड़ें धरती से बाहर निकालीं । फिर बगीचे के दूसरे कोने की खुली जगह में उन्हें माली की मदद से जमीन में लगा दिया । ऊपर से थोड़ी मिट्टी, खाद और पानी डाला । पेड़ लहलहा उठा ।

''भला हो तुम्हारा । तुमने मुझे नई जिंदगी दी । अब मैं अच्छी तरह से यहां फल-फूल सकता हूं । अमीर भी ठीक हो जाएगा । मेरे शाप का अंत हुआ ।''—पेड़ ने बूढ़े को धन्यवाद देते हुए कहा । बूढ़ा घर चला गया ।

उधर अमीर के चेहरे पर रौनक आ रही थी । देखते ही देखते दो-चार दिन में वह भला-चंगा हो गया ।

''मैं उस आदमी को धन्यवाद देना चाहता हूं जिसने मुझे ठीक कर दिया ।''— अमीर ने अपनी पत्नी से कहा ।

पत्नी ने पति को पूरी बात बताई । 'छह वर्षों के इलाज से जो रोग दूर नहीं हुआ, वह एक बूढ़े ज्योतिषी ने दूर कर दिया ।'— यह सुनकर अमीर ने उस बूढ़े को बुलवाया ।

''ज्योतिषी जी ! यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें ।''— कहते हुए उसने सोने-चांदी-मोतियों से भरा थैले उसे दे दिए और कहा— ''आपको जब भी कोई जरूरत हो, आप यहां आ सकते हैं ।''

''आप सचमुच दयालु और नेक हैं । ईश्वर आपको स्वस्थ रखे ।''— कहते हुए बूढ़े आदमी ने थैले उठाए । वह बाजार में पहुंचा । मन पसंद वस्तुएं खरीदीं । फिर वह मूर्ति के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया । बोला— ''हे देवता ! सचमुच यह जादुई टोपी देकर तुमने मेरा भाग्य ही बदल दिया ।'' कहते हुए उसकी आंखें छलक आईं । उसकी आवाज भर्रा गई । चाहकर भी वह ज्यादा कुछ न बोल सका ।

(पोलिनेशिया)

रूप बदलते

चंदा मामा रोज रात को
दिखलाते हैं ड्रामा,
पहने धुला सफेद चांदनी
का कुरता-पाजामा।

रोज रात को रूप बदलते
रोज बदलते जामा,
कभी दीखते दुबले-पतले
कभी एकदम गामा।

ड्रामे में इनके न कभी भी
बजता सा-रे-गा-मा,
तारे दर्शक भी न मचाते
कभी शोर-हंगामा।

अगर दिखाएं उतर जमीं पर
चंदा मामा ड्रामा,
तो घर लेकर जाएंगे वह
झोली भरकर नामा।

—द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

खरगोश

धुनी रुई के गाले जैसा
मनमोहक खरगोश,
चाहे जितना इसे छेड़िए,
रहता है खामोश!
मन करता है, इसे गोद में
लेकर खूब दुलारें,
अपने एलबम में रखने को
इसका चित्र उतारें।

— दिग्गज मुरादाबादी

मेला

मनभावन कहलाए मेला,
खुशियां लेकर आए मेला।
रंग-बिरंगी दुकानों से,
बढ़िया रूप दिखाए मेला।
खेल-तमाशा, जादू, सरकस,
झूला, चकरी लाए मेला।
ये नुमाइश, वो नुमाइश,
सबको खूब रिझाए मेला।
पैदल और बैलगाड़ी में,
गांव समूचा जाए मेला।
भीड़-भड़क्का देख-देखकर
फूला नहीं समाए मेला।
बिछुड़े लोगों को आपस में,
अपने आप मिलाए मेला।
ले गुब्बारे बच्चे कहते,
रोज-रोज यह आए मेला।

—राजा चौरसिया

चंदा पर नाच

चंदा मामा की धरती पर
बस्ती नई बसाने,
किसे-किसे चलना है, बोलो
मिलकर मौज मनाने।
शेरसिंह का सुन सवाल
भालू जी पहले आए,
बोले— 'मन करता चंदा पर
जाकर नाच दिखाएं।'
उछल लोमड़ी बोली —'ठहरो,
ठहरो हम चलते हैं,
पर क्या अंगूरों के गुच्छे
वहां खूब फलते हैं?'
बोला हाथी —'हमें चांद पर
जाना तो है भाता,
देखें हमें कौन-सा राकेट
ऊपर ले जा पाता?'
घोड़ा बोला—'हम चेतक के
वंशज हैं, जाएंगे,
एक नया इतिहास वीरता
का हम गढ़ आएंगे।'
सबने तय पाया, चंदा पर
बस्ती नई बसाएं,
बड़े मजे से जंगल में,
हम मंगल खूब मनाएं।

—डा. रोहिताश्व अस्थाना

गुफा में नींद

— चित्रा निगम

एक था सिंहल द्वीप। बहुत हरा-भरा, सुंदर। पेड़ फलों से लदे, हवा में फूलों की सुगंध, वनों में पक्षियों का शोर गूंजता रहता हर समय।

सिंहल के राजा थे जयसेन। बहुत न्यायी और दीन-दुखियों का ध्यान रखने वाले। उन्हें सब आशीर्वाद देते। कहते— 'राजकुमारी तिलोत्तमा सुखी रहें।' जयसेन की इकलौती बेटी का नाम तिलोत्तमा था। जयसेन उसे गुणवती बनाना चाहते थे। उसकी शिक्षा के लिए कई विद्वान अध्यापक नियुक्त कर रखे थे।

एक बार तिलोत्तमा बीमार हो गई। अच्छे-से-अच्छे वैद्य इलाज करने में जुट गए। पूरा नगर उदासी में डूब गया। कई महीने तक बीमार रही तिलोत्तमा। कुछ समय बाद रोग तो ठीक हो गया, पर वह एकदम गुमसुम रहने लगी। न खाती, न किसी से बोलती। रात में भी उसे नींद न आती। कोई समझ न पाया कि तिलोत्तमा को क्या हुआ है। उसकी उदासी दूर करने की हर कोशिश बेकार रही।

राजा जयसेन की चिंता बढ़ती जा रही थी। एक दिन दरबार में एक नाविक आया। उसके हाथ में पिंजरा था। उसमें एक मैना फुदक रही थी। नाविक ने राजा को नमस्कार किया। कहा— "महाराज, मैं इस मैना को राजकुमारी जी के लिए लेकर आया हूं। यह बोलने वाली मैना है। यह राजकुमारी की उदासी अवश्य दूर कर देगी।" मैना ने कहा— "महाराज, आपकी जय हो। मैं राजकुमारी को खुश कर दूंगी।"

राजा जयसेन ने नाविक को पुरस्कार देकर विदा किया। मैना का पिंजरा तिलोत्तमा के पास भिजवा दिया गया। बोलने वाली मैना को पाकर तिलोत्तमा के होंठों पर एक फीकी-सी मुसकान दिखाई देने लगी।

फिर तो राजकुमारी के कक्ष से हंसने-खिलखिलाने की आवाजें आने लगीं। मैना दुनिया भर में घूम चुकी थी। वह तिलोत्तमा को ऐसे-ऐसे विचित्र किस्से सुनाती कि राजकुमारी हैरान रह जाती।

राजा जयसेन की चिंता दूर हो गई, लेकिन थोड़े समय के लिए। एक शाम, उन्होंने तिलोत्तमा को फिर उदास देखा। पूछा, तो पता चला कि उसकी बोलने वाली मैना न जाने कहां गायब हो गई थी? कई दिन बीत गए, पर मैना नहीं लौटी। तिलोत्तमा की खुशी फिर खो गई थी। राजा जयसेन ने मैना की खोज में इधर-उधर सैनिक भेजे। वह सोचते थे—'शायद मैना किसी शिकारी का निशाना बन गई है।' उन्होंने मैना को ढूंढ़कर लाने वाले को बड़ा इनाम देने की घोषणा कर डाली। पर बोलने वाली मैना का कुछ पता न चला।

एक दिन दो मछुआरे नाव में बैठकर समुद्र में मछलियां पकड़ने गए। वे खुले समुद्र में बहुत दूर निकल गए। तभी एकाएक उन्हें एक द्वीप नजर आया। और फिर उनके कानों में आवाज आई— 'मुझे आजाद करो, मुझे आजाद करो।' आवाज

सुनकर मछुआरे उसी दिशा में बढ़ चले। वे जानना चाहते थे कि आवाज किसकी थी?

नाव खेते हुए दोनों मछुआरे तट पर जा उतरे। अब आवाज और भी तेज हो गई थी। दोनों आवाज की दिशा में बढ़ चले। द्वीप पर एक पहाड़ी थी और सब तरफ घना वन। धीरे-धीरे चलते हुए दोनों मछुआरे एक ऊंची जगह पर जा चढ़े। उन्हें एक विशाल पिंजरा दिखाई दिया। आवाज उसी पिंजरे में से आ रही थी।

मछुआरों ने देखा—पिंजरे में एक मैना पंख फड़फड़ा रही है। वह कह रही है— 'मुझे आजाद करो, मुझे आजाद करो।' मछुआरों की समझ में नहीं आया कि इस निर्जन द्वीप पर मैना को पिंजरे में किसने बंद किया? क्योंकि उन्हें तब तक वहां कोई आदमी नहीं दिखाई दिया था।

मैना ने उन्हें देखा, तो बोली— "जल्दी से पिंजरे का दरवाजा खोल दो, नहीं तो दुष्ट तांत्रिक आ जाएगा। अभी वह गुफा में सो रहा है। इसलिए तुमने उसे नहीं देखा होगा। जल्दी करो, जल्दी करो।"

मैना की पुकार सुनकर एक मछुआरे ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। मैना झट बाहर निकल आई और पेड़ पर जा बैठी। तभी मछुआरों ने भयानक सूरत वाले एक आदमी को गुफा से निकलते देखा। वह वहीं से चिल्लाया— "तो तुमने मैना को आजाद कर दिया। तुम्हें इसकी सजा मिलेगी। अब मैना की जगह तुम कैद में रहोगे।" दाढ़ी वाले के इतना कहते ही दोनों मछुआरों ने अपने को उस पिंजरे के अंदर पाया।

अब तो वे बुरी तरह घबरा गए। दाढ़ी वाला भयानक हंसी हंसता हुआ बोला— "मंत्र के जो प्रयोग मैं मैना के ऊपर कर रहा था, अब तुम पर करूंगा। तुम वही करोगे, जो मैं चाहूंगा। मैं दुनिया का माना हुआ तांत्रिक हूं। हा हा हा।"

उसकी डरावनी हंसी सुनकर मछुआरों के प्राण सूख गए। दोनों सोचने लगे— 'अब तो हम इस कैद से कभी आजाद नहीं हो सकेंगे।' इसके बाद तांत्रिक गुफा में चला गया। उसे विश्वास था कि दोनों मछुआरे अब पिंजरे की कैद से कभी आजाद नहीं हो सकेंगे।

मैना ने यह सब देख लिया। वह पेड़ से उड़कर समुद्र पर मंडराने लगी। उस समय समुद्र में एक नाव चली आ रही थी। उसमें कई लोग बैठे थे। वे इधर-उधर देख रहे थे, जैसे किसी को ढूंढ़ रहे हों। असल में वे उन दोनों मछुआरों के साथी थे, जो तांत्रिक के पिंजरे में बंद हो गए थे।

मैना नाव के ऊपर चक्कर काटती हुई कहने लगी— "उन्हें आजाद कराओ। उन्हें आजाद कराओ। मेरे साथ आओ।" यह कहती हुई वह द्वीप की ओर उड़ चली। नाव भी द्वीप की ओर बढ़ने लगी। मैना कह रही थी— "तुम्हारे दो साथियों को दुष्ट तांत्रिक ने पिंजरे में कैद कर रखा है। उन्हें आजाद कराओ।"

नाविक द्वीप पर जा उतरे। मैना उन्हें पिंजरे की तरफ ले गई। अपने साथियों को देखकर पिंजरे में बंद दोनों मछुआरे रोने लगे। मैना ने कहा— "चुप रहो। पहले मैं दुष्ट तांत्रिक का पता लगाऊं कि वह क्या कर रहा है। नहीं तो तुम भी संकट में पड़ जाओगे। जब मैं कहूं, तभी पिंजरे को खोलना। अभी झाड़ियों में छिप जाओ।"

मैना के कहे अनुसार नाविक झाड़ियों में छिप गए। उधर मैना ने गुफा में झांककर देखा, तांत्रिक सो रहा था। बस, वह गुफा में घुस गई। उसके ऊपर मंडराती हुई कहने लगी— 'जागना मत, सोते रहो। जागना मत, सोते रहो।' थोड़ी देर तक इस तरह दोहराने के बाद, मैना वापस पिंजरे के पास पहुंची। झाड़ियों में छिपे नाविकों से कहा— "मैंने तांत्रिक को

जादुई नींद में सुला दिया है। अब वह जाग नहीं सकता। तुम पिंजरा खोल दो।''

बात की बात में कैद मछुआरे आजाद हो गए। मैना ने कहा— ''अब तुम सब जल्दी से यहां से दूर निकल जाओ।'' मछुआरे तथा उनके साथी जल्दी से नौकाओं में बैठे और द्वीप से दूर चले गए। मैना फिर गुफा में गई। सोते हुए तांत्रिक पर मंडराती हुई कहने लगी— 'जागना मत, सोते रहना।' इस तरह कई दिन बीत गए। तांत्रिक की नींद न टूटी। इसके बाद मैना सिंहल द्वीप की ओर उड़ चली।

एक सुबह, जब राजकुमारी तिलोत्तमा अपने कक्ष में उदास बैठी थी, तभी उससे किसी ने कहा— ''प्रणाम राजकुमारी जी।'' राजकुमारी ने देखा — सामने मैना है।

मैना को लौटी देख, तिलोत्तमा बहुत खुश हुई। उसने मैना को हथेली पर बैठाया और पूछने लगी— ''तू कहां चली गई थी ? तेरे जाने से मैं बहुत परेशान थी।''

बोलने वाली मैना ने तिलोत्तमा से कहा— ''कुमारी जी, मुझे एक तांत्रिक ने पकड़ लिया था। वह मुझे एक द्वीप पर कैद रखकर तरह-तरह के प्रयोग कर रहा था।'' और फिर मैना ने पूरी घटना सुना दी।

सुनकर तिलोत्तमा आश्चर्य में डूब गई। ''अब कभी कहीं मत जाना''— उसने कहा।

''कुमारी जी, जाना तो होगा ही। मैं हर रोज उस द्वीप पर जाऊंगी, ताकि तांत्रिक की नींद न टूटे। दुष्ट सोता रहे, तो अच्छा है। नहीं तो वह न जाने क्या कर डालेगा ?'' —मैना ने कहा। तिलोत्तमा समझ गई कि मैना ठीक कह रही है।

बोलने वाली मैना रोज उस निर्जन द्वीप पर जाती। गुफा में सोते तांत्रिक के सिर पर मंडराकर कहती— 'जागना मत, सोते रहो।' और फिर तिलोत्तमा के पास लौट आती।

इसके बाद दुष्ट तांत्रिक फिर कभी नहीं जागा। निर्जन द्वीप की गुफा में सोता ही रहा। मैना हमेशा की तरह तिलोत्तमा का मन बहलाती रही।

(श्रीलंका)

मछली बोली

— स्वराज्य शुचि

उत्तर भारत के एक राज्य में सुपाणि नाम के एक राजा राज्य करते थे। उनका एक पुत्र था। उसका नाम यशोमत था। होनहार राजकुमार था। वह राज-काज में सहयोग देता। बड़ी से बड़ी समस्या सुलझाने में पिता का सहायक बन जाता था। राजकुमार को शिकार का बहुत शौक था। एक समय की बात है, राजकुमार यशोमत ने पिता से वन भ्रमण की आज्ञा मांगी। पिता ने शीघ्र आज्ञा दे दी।

जाते समय राजा ने राजकुमार से कहा— ''तुम जहां भी अपना पड़ाव डालो, वहां का हाल चाल विशेष दूत से मेरे पास भेजते रहना। ताकि मैं चिंता से मुक्त रह सकूं।'' राजकुमार ने हामी भर दी। और अपने सेवकों के साथ शिकार के लिए चल पड़ा। उसके साथ पचास आदमियों का एक काफिला था। खाने की सामग्री के साथ-साथ तीर, कमान तथा अनेक हथियार थे।

अक्सर राजकुमार किसी जंगल में अपना पड़ाव डाल देता था। वह शिकार खेलते-खेलते धनुष विद्या में पूर्ण रूप से निपुण हो गया था।

अनेक जंगलों से होता हुआ राजकुमार मधुबनी जंगल की ओर बढ़ रहा था। वह घोड़े पर सवार था। पीछे-पीछे उसके सेवक थे। संध्या का समय था। राजकुमार आखेट के लिए आगे बढ़ रहा था। न जाने कैसे वह अपने साथियों से बिछुड़ गया ? काफिला आगे बढ़ गया। वह पीछे रह गया। साथ ही किसी दूसरी दिशा में भटक गया।

राजकुमार ने इधर-उधर घूमकर देखा—काफिले के साथियों का कोई अता-पता न था। उसे प्यास लगी, पर पानी भी उसके साथियों के पास था। इतने बड़े जंगल में वह अकेला था। वह अपने माता-पिता तथा गुरु को स्मरण करने लगा। कुछ रुकता, फिर आगे बढ़ता। अंधकार भी घिरने लगा। सांय-सांय की आवाज उसके कानों को बेंध रही थी।

आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। घोड़ा भी आगे बढ़ने से हिचक रहा था। इतने बड़े जंगल में वही तो राजकुमार का सहारा था। कुछ दूर चलने के पश्चात, वह अब खुले स्थान पर आ गया। रात्रि का आधा पहर समाप्त हो गया था। कुछ दूर और चला, तो उसे एक नदी दिखाई दी। घोड़ा बहुत थक चुका था। उसके पैर भी लड़खड़ा रहे थे। अब राजकुमार खुले मैदान में आ गया था।

अनायास उसके कानों में किसी की बातचीत का स्वर पड़ा। उसे आश्चर्य हुआ कि इस सुनसान जगह में यह आवाज कहां से आ रही है? वह नदी के किनारे पहुंचा, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। एक अति सुंदर, श्वेत वस्त्र पहने लड़की नदी के किनारे बैठी मछलियों से बातें कर रही है। मछलियां भी पानी में उछल-उछलकर खेल रही हैं। यशोमत आश्चर्य में पड़ गया।

कैसी आत्मीयता थी लड़की और छोटी-बड़ी मछलियों के बीच। दूर खड़ा राजकुमार यह देखता रहा। फिर साहस कर आगे बढ़ा। पैरों की आवाज से लड़की का ध्यान उसकी ओर गया। राजकुमार बोला—"पहले अपने बारे में बताओ। उसके बाद मैं बताऊंगा। इस समय मैं मुसीबत का मारा हूं।" लड़की बोली—"आप खड़े क्यों हैं, बैठिए।" दोनों ने अपने-अपने बारे में बताया, तो उनमें घनिष्ठता हो गई। लड़की बोली—"मैं कभी इन्हीं मछलियों की तरह एक मछली थी। एक दिन परी रानी कुछ परियों के साथ पूर्णिमा की रात में नदी पर आई। वे सारी रात गाना गाती रहीं। नृत्य करती रहीं। सभी मछलियों को बहुत अच्छा लगा। मुझे बहुत आनंद आया। मैं नाचने लगी। परियों की रानी मेरा नृत्य देखकर प्रसन्न हो गई। उसने मेरी खूब प्रशंसा की। मुझसे परी लोक चलने को कहा।"

राजकुमार ध्यान से लड़की की बात सुन रहा था। थोड़ी देर बाद, वह बोली—"परी रानी ने दो मिनट मौन हो, अपने देवता से मुझे परी बनाने की प्रार्थना की। प्रार्थना के कुछ देर बाद ही मैं परी बन गई। उसी दिन से मैं उन लोगों के साथ-साथ रहती हूं। यहां
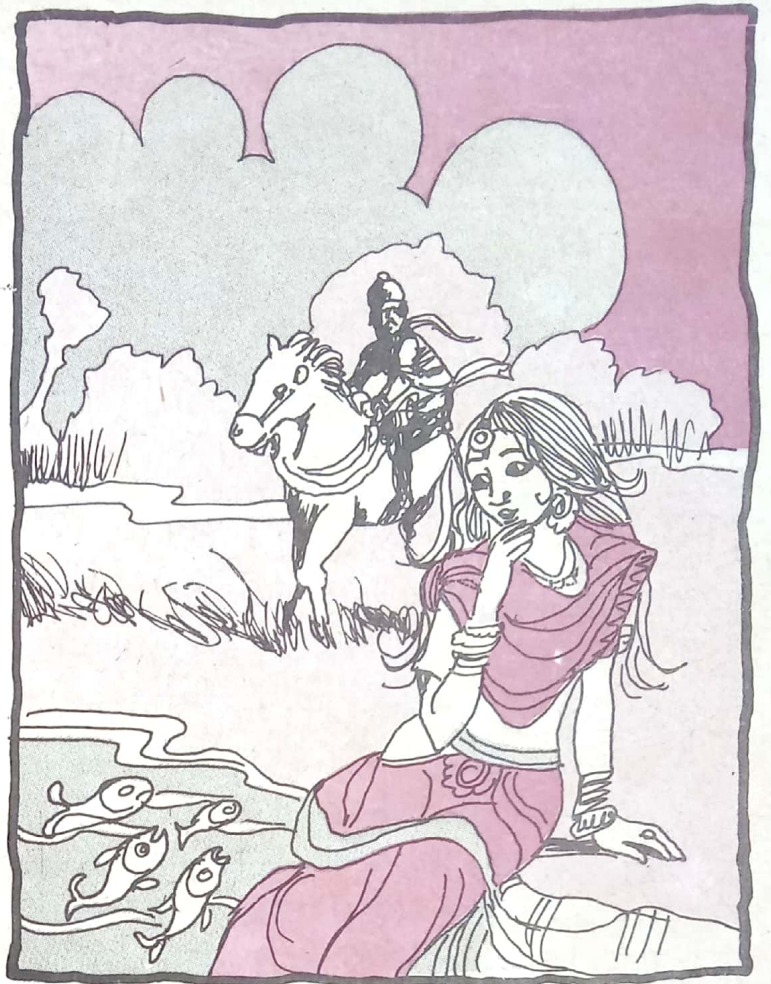
कभी-कभी अपनी पुरानी सहेलियों से मिलने आ जाती हूं।"

राजकुमार भूखा था। परी के पास कुछ फल और मिठाई रखी थीं। उसने राजकुमार से कहा—"आप फल और मिठाई खाकर भूख मिटाएं। मैं नदी से आपके लिए जल लाती हूं। आज से हम दोनों एक-दूसरे के मित्र बन गए।"

राजकुमार का घोड़ा विश्राम कर रहा था। भोर होने को थी। लड़की विमान में बैठी, क्योंकि उसे अपने देश जाना था। राजकुमार बोला—"मुझे भी अपने घर ले चलो।"

लड़की ने कहा—"ऐसा करना मेरे लिए संभव नहीं है। इसके लिए मैं आपसे क्षमा चाहती हूं। हां, मैं तुम्हारा परिचय नदी की सभी मछलियों से करा देती हूं। अगर तुम कभी मुझसे मिलना चाहो, तो इसी स्थान पर ठीक रात्रि के बारह बजे आ जाना। मैं तुमसे अवश्य मिलूंगी। तुम धरती पर ही सुख से रहो। राजकुमार! अब तुम घर जाओ। मार्ग में तुम्हारा काफिला तुम्हें मिल जाएगा।" फिर दोनों एक-दूसरे से विदा लेकर अपने-अपने घर चले गए।

जाकर कहना

—मनोहर पुरी

बहुत समय पहले मनुष्य और जानवर आपस में लड़ते नहीं थे। संसार बहुत ही अद्भुत था। पहाड़ों से मीठे झरने बहते थे। धरती बहुत उपजाऊ थी। खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। दूध-दही की नदियां बहती थीं। फल-फूलों से धरती सजी रहती थी।

भगवान पहाड़ों की सबसे ऊंची चोटी पर रहते थे। वहां मानव का जाना मना था। भगवान अपनी बनाई इस दुनिया को देखकर, स्वयं ही प्रसन्न होते रहते थे। तब लोग आपस में बहस और झगड़ा नहीं करते थे। जीव-जंतु, पशु-पक्षियों और मानव में कुछ भेदभाव नहीं था। सब मनुष्य का आदर करते थे।

धीरे-धीरे मनुष्य अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगे। लोग आपस में भी लड़ने-झगड़ने लगे।

जब भी दो जाति के लोग कहीं मिलते, तो वे सोचने लगते कि किसकी जाति अधिक उत्तम है? अपने-अपने गांव में भी जब दो-चार लोग बैठते, तो यही सोचते कि एक गाय काली है, तो दूसरी भूरी क्यों और तीसरी सफेद क्यों? एक बार तो उन्हें यह सोचते-सोचते रात से सुबह हो गई कि आग की लपटें कहां जाती हैं?

मनुष्य प्रत्येक प्रश्न का उत्तर भगवान से चाहता था। चूंकि मानव स्वयं भगवान के पास नहीं जा सकता था, इसलिए वह किसी न किसी जानवर को भगवान के पास अपने प्रश्नों सहित भेजता। जानवर मनुष्य के झगड़ालू स्वभाव से डरकर चुपचाप उसका आदेश मानते। ऐसी हालत में जानवरों को अनेक ढलानें और चढ़ाइयां पार करनी पड़तीं। कई प्रकार के कठिन भू-प्रदेशों से होकर गुजरना पड़ता। कभी बड़े-बड़े पत्थर उनका मार्ग रोकते, तो कभी नदी-नाले। कहीं तेज हवाओं का सामना करना पड़ता, तो कहीं बर्फीले तूफानों का।

एक शाम ऐसी ही बहस छिड़ीं। रात के समय सब मनुष्य इकट्ठे हुए। उनके मन में यह बात उठी कि मनुष्य जब सोता है, तो उसका शरीर सोता है या नहीं? मनुष्य के स्वप्न सच्चे होते हैं या नहीं? उनका कोई अर्थ होता है या नहीं? बहस बढ़ती हुई देखकर सब जानवर डरकर भाग गए और ऐसी जगह छिप गए कि गांव वाले उन्हें पा न सकें।

बहस होते-होते जानवर भेजकर इन प्रश्नों का उत्तर भगवान से मंगवाने की बात उठी। मनुष्य ने हर जगह ढूंढ़ा, लेकिन कोई भी जानवर कहीं भी न मिला। केवल एक गिरगिट और छिपकली एक चट्टान पर लेटे सूरज की किरणों के इंतजार में मिले। जब मनुष्य को कोई और मिला ही नहीं, तो मजबूरी में उन्होंने गिरगिट और छिपकली को ही भेजने का फैसला किया।

सुबह-सुबह का सुहावना मौसम था। धीरे-धीरे हवा चल रही थी और फूल-पौधों को थपकियां दे रही थीं। दोनों अपनी यात्रा पर मस्त होकर चल दिए। शुरू-शुरू में उनके पास बहुत-सी प्यारी-प्यारी बातें करने को थीं। उन्हें यात्रा बहुत अच्छी लगी। किंतु जैसे-जैसे दिन ढलने लगा और रात का अंधेरा चारों ओर फैलने लगा, वैसे-वैसे उन्हें यात्रा मुश्किल लगी। डर भी लगने लगा। अंधेरे में वे बार-बार रास्ता ही भूल जाते थे। आखिर रात के अंतिम प्रहर में वे भगवान के पास पहुंच गए।

भगवान ने आगे बढ़कर उनके आने का कारण पूछा। कारण जानकर वह बहुत ही नाराज हुए। उनकी आंखों से गुस्से के कारण अंगारे बरसने लगे। पहाड़ों पर भयंकर आवाजें गूंजने लगीं। भगवान उनसे बोले—"यह मनुष्य इतना सब पाकर भी खुश नहीं है। बिना किसी कारण के झगड़े और बहस करता है। बार-बार प्रश्न करता है। अब कोई ऐसा उपाय करना चाहिए कि तुम लोगों को बार-बार मेरे पास भागकर न आना पड़े।"

"भगवान! हम ही नहीं, सभी जीव-जंतु और पशु-पक्षी मनुष्य के इस स्वभाव से दुखी हैं। कई बार तो हम लोग घंटों कहीं न कहीं छिपे पड़े रहते हैं।"—गिरगिट और छिपकली एक साथ बोले।

—"तो आज से पशु-पक्षियों का भी मेरे यहां

ऐसे आना बंद किया जाता है। मैं अब मनुष्य के पास दो संदेश तुम्हारे द्वारा पहुंचा रहा हूं। जो संदेश उनके पास पहले पहुंचेगा, वही मनुष्य के आगामी जीवन का फैसला करेगा।''

भगवान छिपकली की ओर मुड़े। बोले—''छिपकली, तुम्हें यह उत्तर लेकर जाना है कि मनुष्य का दिमाग भी ईश्वर के दिमाग की तरह ही तेज हो जाए। जब वह सोए, तो उसे अच्छे-अच्छे स्वप्न आएं। स्वप्न में भी उसे उन बातों का पता चले, जो वह नहीं जानता। जब वह उठे, तो उसके स्वप्न सच्चे हो जाएं। उसके गांव में पहले की तरह दूध-दही की नदियां बहती रहें। मेवों के पेड़ हमेशा हरे-भरे रहें। उसका जीवन और भी अधिक शांति और सुख से भर जाए।''

इसके बाद भगवान गिरगिट की तरफ मुड़े—''गिरगिट, तुम यह संदेश लेकर जाओ कि हे मनुष्य,तेरे दूध, शहद और मेवों से भरे दिन समाप्त हो गए। अब तुझे अपनी जरूरत के लिए खुद काम करना होगा। मेहनत करके कमाना होगा। अब पड़ोसियों के साथ शांति से नहीं रह पाएगा। और रोज-रोज झगड़े होंगे।''

छिपकली और गिरगिट नमस्कार कर अपनी यात्रा को चल दिए। पहाड़ों की उतराई तक तो वे दोनों साथ-साथ चले। उतराई के बाद आया एक बड़ा मैदान। मैदान के आते ही छिपकली थकने लगी और धीरे-धीरे वह गिरगिट से पीछे रह गई। गिरगिट ने बिना थके, जल्दी-जल्दी यात्रा जारी रखी।

छिपकली इतनी धीरे-धीरे चल रही थी कि कभी तो ऐसा लगता था कि वह चल ही नहीं रही है। जब सूर्य पहाड़ों के पीछे छिप गया, तो अपने पैरों में सिर छिपाकर थोड़ी देर के लिए सो भी गई।

अगले दिन शाम ढले थकी-मांदी छिपकली अपने गांव पहुंची। गांव की पहली झोंपड़ी में जाकर उसने मनुष्य को भगवान का संदेश सुनाया।

वहां रहने वाला मनुष्य उस पर हंसने लगा। बोला—''छिपकली,यहां से चली जाओ। अपने झूठ को लेकर मेरे पास मत आओ। अगले गांव में जाकर
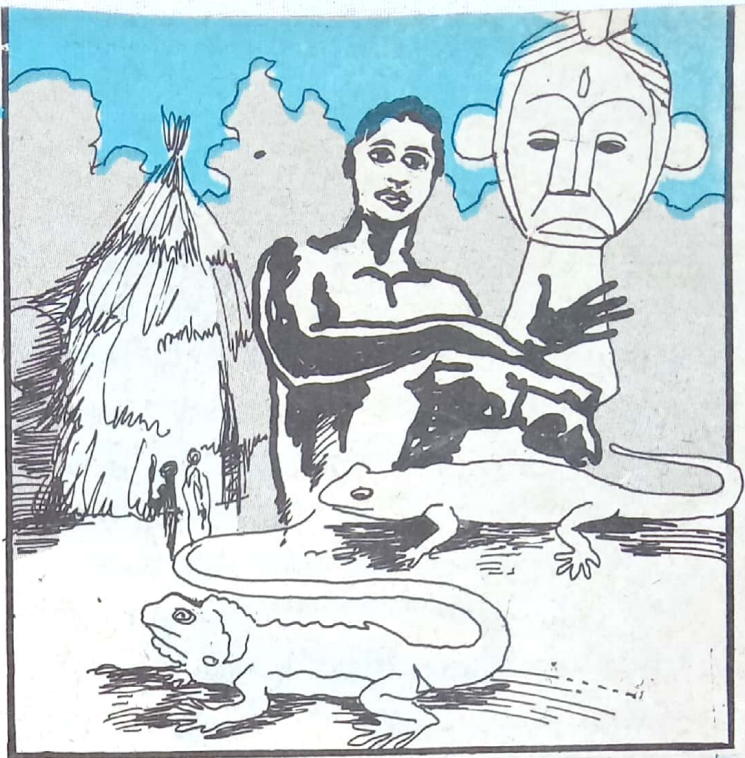
अपनी झूठी कहानी सुनाओ। शायद वहां कोई तुम्हारी झूठी बातें सुन ले। हमें तो गिरगिट ने सब कुछ साफ-साफ पहले ही बता दिया है। सुबह से पहले वहां पहुंचो, क्योंकि कल तो हम लड़ाई में उन्हें मारकर यह सिद्ध कर देंगे कि हम बहुत शक्तिशाली हैं। हमारे सामने कोई टिक नहीं सकता। हो सकता है कि वे लोग तुम्हारी बातों में आ जाएं।''

छिपकली ने उदास होकर धीरे से वह झोंपड़ी छोड़ी और अगले गांव की ओर चल दी। अगले गांव के मुखिया को उसने हथियार तेज करते देखा। फिर भी उसने अपनी ओर से पूरा संदेश सुनाने की कोशिश की, किंतु उसने भी उसका विश्वास नहीं किया। कहा—''छिपकली, भागो, मैं सुबह ही गिरगिट से सब कुछ सुन चुका हूं। हमें बहकाओ मत। लगता है, तुम दूसरे गांव के लोगों द्वारा भेजी गई हो। शायद वे जान गए हैं कि कल सुबह उनकी हार होगी।''

छिपकली ने निराश होकर, वह गांव भी छोड़ दिया और अगले गांव की ओर चल पड़ी और फिर उससे अगले। किंतु सब जगह गिरगिट पहले ही पहुंच चुका था।

छिपकली ने उम्मीद नहीं छोड़ी। आज भी वह एक गांव से दूसरे गांव इसी आशा में भटक रही है— 'शायद कभी वह ऐसे स्थान पर पहुंच जाए, जहां के मनुष्य के पास गिरगिट अभी तक न पहुंचा हो, और उसे भगवान का अमर संदेश दे सके।' **(कांगो)**

भागे बौने

रामदीन एक सुखी किसान था। वह बृजपुर नामक गांव में रहता था। उसके परिवार में पत्नी व एक पुत्र किशोर था।

एक वर्ष सूखा पड़ गया। अनाज का दाना भी उत्पन्न नहीं हुआ। लोग भूखों मरने लगे। रामदीन का पुत्र किशोर कमाने के लिए शहर चला गया।

दो सप्ताह बीत गए। किशोर का कोई समाचार न मिला। अब रामदीन ने उसे खुद जाकर ढूंढ़ने का निश्चय किया। वह एक पोटली में खाने का सामान तथा दूसरी में कुछ धन लेकर चला। घर से चलने के बाद जंगल में पहुंचा।

जंगल काफी बड़ा था। उसे पार करने के बाद एक गांव में पहुंचा। वहां उसने कुछ देर रुक कर विश्राम करने की सोची। वह सराय ढूंढ़ने लगा। रात काफी हो चुकी थी। उसे एक सराय दिखाई दी। वह अंदर खाने की मेज पर जा बैठा। तभी उसे नींद आ गई। वह सो गया।

इतने में वहां एक बौना आया। उसने दोनों पोटलियां उठाईं और भाग गया।

सराय का नौकर यह देख रहा था। वह रामदीन के पास आया। उसे जगाकर सब बताया। रामदीन को पता चला कि यहां आजकल बौनों ने बहुत गड़बड़ मचा रखी है।

उसने नौकर से बौनों की बस्ती का रास्ता पूछा। कुछ देर में वहां जा पहुंचा। रामदीन ने बौनों के सरदार से कहा— "तुम्हारा आदमी मेरी पोटलियां चुराकर भागा है।"

सरदार ने उल्टे उसे डांटा और कहा— "मेरे आदमी ऐसा काम नहीं करते।" रामदीन गांव में आया और बौनों की करतूत बताई। गांव वाले तो वैसे ही उनसे परेशान थे। सबने बौनों की बस्ती पर आक्रमण किया, तो बौने डर कर भाग गए। वहां कैद लोगों को आजाद कराया गया। रामदीन को उसका बेटा किशोर वहीं मिल गया। दोनों हंसी-खुशी अपने गांव लौट गए।

—वैभव रस्तोगी, नई दिल्ली

सोते-सोते

वाराणसी में एक व्यापारी रहता था— देवदास। वह रत्नों का व्यापार करता था। व्यापार अच्छा था। काम के सिलसिले में देवदास दूर-दूर की यात्राएं किया करता था। साथ में कई कर्मचारी भी रहते थे।

देवदास शक्की स्वभाव का था। उसे हर समय यह डर लगा रहता था कि कहीं उसका बहुमूल्य सामान चोरी न हो जाए। एक बार देवदास यात्रा पर निकला, तो सचमुच उसकी दो थैलियां चोरी हो गईं। उनमें सोने-चांदी के सिक्के थे।

देवदास को पता चला, तो वह बहुत घबराया। वह नौकरों को डांटने लगा। वे बेचारे क्या करते।

तभी एक बच्चा वहां आया। उसने कहा— "कुछ देर पहले मैंने एक दाढ़ी वाले को यहां से भागते हुए देखा था। उसके हाथ में थैलियां थीं।" बच्चा देवदास तथा उसके नौकरों को उस तरफ ले गया जिधर दाढ़ीवाला भागकर गया था। आगे एक बाजार था। बच्चे ने देवदास से कहा— "यहां मेरे भाई का होटल है। मैंने कई बार दाढ़ीवाले को भाई के होटल में देखा है। हो सकता है, बदमाश वहीं आराम कर रहा हो। मैं देखकर आता हूं। तब तक आप लोग यहीं रुके रहिए।"

बच्चा एक भोजनालय में चला गया। कुछ देर बाद दौड़ता हुआ आया। देवदास से बोला— "वह दाढ़ीवाला यहीं है। खाना खाकर मेज पर सिर टिकाए सो रहा है। वहीं थैलियां भी रखी हैं।"

देवदास ने झट पुलिस को खबर कर दी। सिपाहियों ने भोजनालय को घेर लिया। दाढ़ीवाले बदमाश को जरा भी भनक न मिली। भरपेट खाकर वह मजे से नींद ले रहा था। पुलिस वालों ने उसे जगाया, तो वह हक्का-बक्का रह गया। उसने भागना चाहा, पर वह फंस चुका था। देवदास को अपनी चोरी गई रकम मिल गई। बदमाश को जेल भेज दिया गया। देवदास बच्चे की सूझबूझ से बहुत प्रभावित हुआ। उसने बच्चे को इनाम देना चाहा, पर उसने नहीं लिया।

—निधि अरोड़ा, दिल्ली

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
· कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. — की भी थोड़ी चिंता करो कुमार! (साधु/साख)

२. बच्चा भागकर— के पीछे छिप गया। (पेड़/झाड़)

४. आखिर किसने उसे— दिया होगा? (शाप/शाल)

६. सुनो, यह तुम— से ही कह रहे हो न! (मुनि/मुझ)

७. —का स्नेह बहुत विकल कर रहा है आर्य! (पिता/माता)

८. अम्मा, गिरीश ने— खेल बिगाड़ दिया। (मेरा/सारा)

९. हां, तो मैं जंगल की कथा सुना रहा—। (था/हूं)

११. यह इस— का सबसे बड़ा करिश्मा है। (नदी/सदी)

१२. **पशु, जिसके शरीर पर सफेद चित्तियां होती हैं।**

ऊपर से नीचे

३. — में यह बालक कहां से आया? (वन/खान)

५. चाची देखो, —ने मुझे बांसुरी दिला दी। (भाई/भाभी)

१०. **कभी खाया है यह फल?**

- - - - - - - - - - - - काटिए - - -

'नंदन' ज्ञान-पहेली : २८३

नाम ____________________

आयु ______ पता ____________________

____

१ सा		▨	२	ड़	▨	३
▨	४ शा		▨	▨	▨	न
५ भा	▨	▨	६ मु		▨	▨
	▨	७	ता	▨	८	रा
▨	▨	▨	▨	९	अंतिम तिथि	
१० आ	▨	११	दी	१५-६-९२		
	▨	▨	▨	१२	त	

बुढ़िया की गुड़िया

— मंजीत कौर भाटिया

क्रिसमस का त्योहार करीब था। फूलों, फलों, खिलौनों और मिठाइयों की दुकानों पर सजावट शुरू हो चुकी थी। बड़े बाजार में खिलौनों की एक छोटी-सी दुकान पर तरह-तरह के खिलौने सजे थे। छोटी-बड़ी गुड़ियां, सूंड हिलाता हाथी, सफेद बालों वाला खरगोश, भूरी आंखों वाली बिल्ली और भी न जाने क्या-क्या.... ठीक इन खिलौनों के बीच छिपकर बैठी थी, एक छोटी परियों-सी खूबसूरत 'गुड़िया। उसकी ऊंचाई किसी बच्चे की छोटी अंगुली से अधिक नहीं थी। खिलौनों की भीड़-भाड़ में वह दिखाई भी नहीं दे रही थी। सब खिलौने प्रसन्न थे कि अभी कोई ग्राहक आएगा और उन्हें खरीदकर ले जाएगा।

"क्रिसमस पेड़ पर सजाने या बच्चों को उपहार में देने के लिए लोग ढेरों खिलौने खरीदेंगे। मैं तो परीलोक से आई हूं। मुझे तो कोई बगैर सोचे-समझे ही खरीदकर ले जाएगा।"—बड़ी गुड़िया ने गर्दन मटकाते हुए कहा।

"मेरे बाल कितने खूबसूरत हैं ! मुझे देखकर सब बहुत खुश होंगे। मैं हर छोटे-बड़े क्रिसमस वृक्ष की शोभा बन सकता हूं।"—सफेद बालों वाला खरगोश इतराते हुए बोला।

"दुकानदार कह रहा था, मैं सबसे सुंदर हूं। मुझे तो पलक झपकते ही कोई खरीद लेगा।"—दूल्हा बने गुड्डे ने गर्दन अकड़ाकर कहा।

"मेरा क्या होगा ?"—छोटी गुड़िया ने पूछा—"क्या मुझे भी कोई खरीदेगा ? मैं तो किसी को दिखाई ही नहीं दे रही हूं।"

—"हा-हा-हा..... तुम्हें कौन बेवकूफ खरीदेगा ?"

—"क्रिसमस पेड़ इतना छोटा होता कहां है, जहां तुम्हें सजाया जा सके।"

—"तुम्हें कोई नहीं खरीदेगा। तुम यहीं सड़ती रहोगी। हर साल की तरह क्रिसमस के बाद डिब्बे में बंद करके रख दी जाओगी।"

"और एक दिन दुकानदार तंग आकर तुम्हें बाहर सड़क पर फेंक देगा।"—एक के बाद एक खिलौना बोलता गया। छोटी गुड़िया उदास हो गई।

दिन बीतते गए। यहां तक कि क्रिसमस का दिन भी बीतने लगा। कोई भी खिलौने खरीदने नहीं आया। दुकानदार बहुत परेशान था। इस वर्ष उसका एक भी खिलौना नहीं बिका था। रात को जैसे ही वह दुकान बंद करने लगा, घंटी बजी। सभी खिलौने चुपचाप अपनी-अपनी जगह बैठ गए। खरीदार एक बुढ़िया थी।

"मुझे अपने बच्चों के लिए कोई नया व अनूठा

खिलौना चाहिए।''—बुढ़िया ने कहा।

दुकानदार को जैसे कुछ याद आया। उसने छोटी गुड़िया की तरफ छड़ी घुमाई। उसे देखते ही बुढ़िया खुशी के मारे उछल पड़ी—''हां-हां, यही चाहिए मुझे। जल्दी से पैक कर दो।''

दुकानदार ने उसे सारे खिलौने दिखाए, लेकिन बुढ़िया को कोई पसंद नहीं आया।

''नहीं, नहीं, इतने बड़े नहीं। मुझे छोटा-सा, प्यारा-सा खिलौना केक पर सजाने के लिए चाहिए।'' —वह चारों ओर नजरें घुमाती बोली।

दुकानदार ने खूबसूरत से कागज में लपेटकर गुड़िया, बुढ़िया को सौंप दी। सारे खिलौने हैरान-परेशान एक दूसरे का मुंह देख रहे थे।

—''हमें छोटी गुड़िया का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए था।''

—''हम तो क्रिसमस पेड़ पर सजने में ही अपना बड़प्पन समझ रहे थे। बुढ़िया तो उसे केक पर सजाएगी।''

''मैं सोच रही हूं, छोटी गुड़िया इस समय क्या कर रही होगी ?''—बड़ी गुड़िया ने उदास से स्वर में कहा।

बुढ़िया के घर छोटी गुड़िया बहुत मजे में थी। उसे खूबसूरत केक के बीचोंबीच सजाया गया था। आसपास सूखे मेवों से बने भूरे लाल रंग के बौने चुपचाप खड़े उसे निहार रहे थे। जैसे कह रहे हों—'तुम तो हमारी छोटी-सी रानी हो।' आधी रात के समय छोटी गुड़िया को ताज पहनाया। घेरा बांधकर, सब उसके इर्द-गिर्द नाचने लगे।

शाम को भी पार्टी के समय सबने उसकी तारीफ की थी। केक काटते समय बच्चों ने अपनी मां से प्रार्थना की कि ध्यान से काटें। गुड़िया को कोई नुकसान न पहुंचे।

पार्टी खत्म होने के बाद, बच्चों ने उसे बड़े प्यार से उठाकर गुड़िया घर में सजा दिया। उधर बाकी खिलौनों को दुकानदार ने डिब्बों में बंदकर अगले क्रिसमस तक के लिए स्टोर में डाल दिया।

(ब्रिटेन)
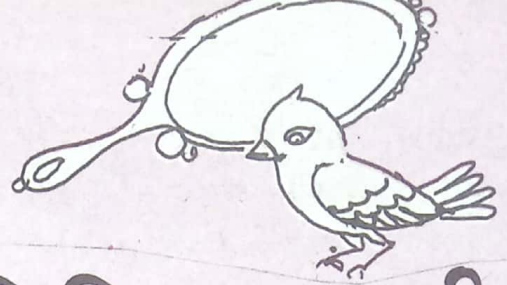
चिड़िया का शीशा

— मंजू राणा

राजा विनवैल्थ की इच्छा किसी बहुत ही सुंदर और सुशील स्त्री से विवाह करने की थी। एक बार वह सन फ्लावर नाम की स्त्री से मिला। उसमें वे सभी गुण थे। बस, दोनों का विवाह हो गया। विनवैल्थ सन फ्लावर में कुछ ऐसा खोया कि राजपाट की तरफ ध्यान देना ही भूल गया।

विनवैल्थ की मां काफी समय से राजपाट संभाल रही थी। वह अब विश्राम चाहती थी। बार-बार कहने पर भी विनवैल्थ ने जब मां की बात पर ध्यान न दिया तो मां ने सोचा—'सन फ्लावर को किसी तरह महल से निकाल देना चाहिए।' वह हमेशा ऐसे अवसर की तलाश में रहती थी।

कुछ समय पश्चात् सन फ्लावर ने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया। एक राजकुमार व दूसरी राजकुमारी। राजा की मां को यह अवसर बहुत उचित लगा। उसने दोनों बच्चों को कपड़े में लपेटा।एक बक्से में बंद कर नदी में बहा दिया। और वहां दो पत्थर रख दिए। राजा जब खुशी-खुशी अपने बच्चों को देखने आया,तो पत्थर देख हैरान रह गया। उसकी मां बोली—''रानी है तो बहुत सुंदर, पर चुड़ैल है। तभी तो बच्चों को जन्म देते ही पत्थर बना दिया। इसे महल से निकाल देना चाहिए।'' किंतु राजा ने ऐसा नहीं किया। हां, वह स्वयं दूसरे महल में चला गया। राजा की उपेक्षा से रानी हमेशा रोती रहती।

उधर वे दोनों बच्चे बहते हुए एक मछुआरे को मिले। वह उन्हें घर ले गया और अपनी पत्नी को दिखाया। पत्नी उन्हें देखकर बहुत खुश हुई। उनका लालन-पालन वे अपने बच्चों की तरह करने लगे।

समय के साथ-साथ दोनों बच्चे बड़े होते गए। एक दिन दोनों तेजी से दौड़ते हुए घर में आए।

पूछा—"मां, क्या यह सच है कि हम तुम्हारी संतान नहीं हैं और अनाथ हैं ?" मछुआरिन क्या कहती ? उसे सच बताना पड़ा। दोनों बच्चे बोले—"तुम बहुत अच्छी हो। परंतु हम अपने असली माता-पिता को खोजने जाएंगे।" लाख समझाने पर भी वे दोनों न माने।

दोनों जगह-जगह भटकते-भटकते एक दिन किसी राज्य में पहुंचे। संयोग से, वहां का राजा विनवैल्थ ही था। बच्चे यह नहीं जानते थे। वे एक वीरान घर में रहने लगे, जिसे उन्होंने बाद में बहुत ही सुंदर बना दिया। उन्होंने घर के आसपास सुंदर-सुंदर फल-फूलों के पेड़-पौधे लगाए। धीरे-धीरे उनके घर की चर्चा सारे राज्य में होने लगी। राजा की मां को विचित्र चीजें देखने का बहुत शौक था। इसलिए वह उन दोनों बच्चों का बाग देखने चली आई। वहां आकर उसने बच्चों की बहुत प्रशंसा की। पूछा कि वे कौन हैं और कहां से आए हैं ? बच्चों ने सारी कहानी सुना दी। अब राजा की मां को लगा कि ये तो सन फ्लावर का बेटा और बेटी हैं। सोचते ही वह भयभीत हो गई। कहीं राजा को पता चल गया, तो वह मुझे राज्य से निकाल देगा।

राजा की मां ने पास की पहाड़ी पर किसी भुतहे स्थान के विषय में सुन रखा था कि वहां रात को गाने-बजाने की आवाजें आती हैं। तेज रोशनी होती है। जो भी वहां जाता है, वह लौट कर नहीं आता। उसे लगा कि यदि दोनों भी वहां चले जाएं, तो किसी को कुछ पता न चल सकेगा। बस, उसने उनसे कहा—"पहाड़ी पर एक घर है। वहां एक आदमी और औरत रहते हैं। शायद वहीं तुम्हारे माता-पिता हैं।"

बच्चे यह सुनकर बहुत खुश हुए। शीघ्र ही उस ओर चल दिए। मगर जब वहां पहुंचे, तो उन्होंने कुछ और ही पाया। उन्हें लगा, जैसे वे न धरती पर हैं, न आकाश में। बहुत ढूंढ़ने पर भी उन्हें अपने माता-पिता वहां न मिले। थक-हारकर वे रोने लगे। तभी किसी की आवाज आई—"मैं जानती हूं, वे कहां हैं।"

दोनों ने आश्चर्य से पूछा—"तुम कौन हो ?"
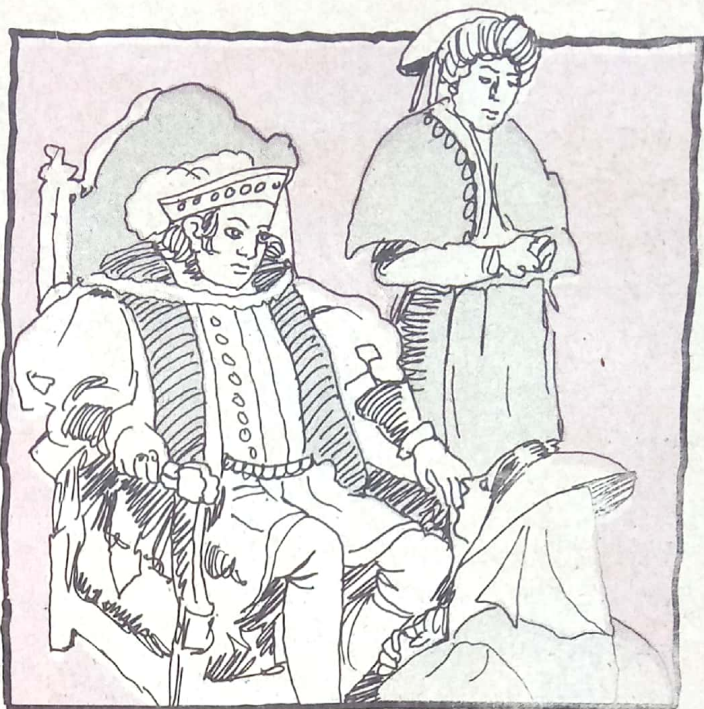
आवाज फिर आई—"मैं सच बोलने वाली चिड़िया हूं। यह एक छोटा परीलोक है। यहां रोज रात को परियां आती हैं, नाचती हैं और गाती हैं। सवेरा होते ही वापस आकाश में चली जाती हैं। तुम्हारे माता-पिता इसी राज्य के राजा-रानी हैं। तुम दोनों को उनसे अलग करवाने वाली तुम्हारी दादी ही है।"

बच्चों ने पूछा—"वे कैसे मानेंगे कि हम उनकी संतान हैं।"

चिड़िया बोली—"तुम चिंता मत करो। यह लो जादुई शीशा। राजा के पास जाकर कहना कि हम तुम्हारी संतान हैं। यदि इतने पर भी वह न माने, तो यह शीशा उसके सामने रखकर दो बार कहना— 'परीलोक के शीशे, तू खोल पुराने राज।' तुरंत राजा इसमें वे सब दृश्य देखेगा कि कैसे उसकी मां ने तुम दोनों को कपड़े में लपेट कर, बक्से में बंद किया। फिर नदी में बहा दिया था।"

दोनों बच्चे खुशी-खुशी महल में पहुंचे। उन्होंने राजा को सब कह सुनाया। राजा पहले तो न माना, जब शीशे ने सब सच दिखा दिया, तो उसे अपनी मां पर बहुत क्रोध आया। परंतु जब उसकी मां ने ऐसा करने का कारण बताया, तो राजा को अपनी भूल का अहसास हुआ। उसने अपनी मां को क्षमा कर दिया। राजा ने मछुआरा दम्पत्ति को बहुत-सा धन इनाम में दिया। राजा-रानी अपने बच्चों को पाकर खुशी-खुशी जीवन-यापन करने लगे। (डेन्मार्क)

चटपट

● शिक्षक (कक्षा में) —बताओ रमेश, आज तुमने कौन-सा नेक काम किया ?
रमेश—जी, एक आदमी बस के पीछे-पीछे दौड़ रहा था। मैंने उसके पीछे अपना कुत्ता छोड़ दिया। आदमी डरकर तेज दौड़ा, बस में चढ़ गया।

● मां—राजू, बताओ मैंने तुम्हें क्यों मारा ?
राजू (सुबकते हुए) —तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं, तो फिर क्यों मारा ?

● मालिक अपने मकान में चिकने फर्श पर फिसल पड़ा। नौकर को हंसते देखकर उसने डांटा—हंसता क्यों है ?
नौकर—मैं तो खुशी मना रहा हूं कि आपको चोट नहीं लगी।

● मरीज—डाक्टर साहब, सांस लेते ही मुझे दर्द होता है !
डाक्टर—घबराओ नहीं, मैं सांस रोक दूंगा।

● मोनू—यार, आजकल तुम बहुत तीखा बोलते हो।
सोनू—चीनी महंगी हो गई है। ज्यादा खाने को नहीं मिलती। मीठा कैसे बोलूं ?

● अजय—सारी रात सोचते-सोचते मेरे सारे बाल काले से सफेद हो गए।
विजय—दिन में सोचना शुरू कर दो। बाल फिर से काले हो जाएंगे।

● डाक्टर— क्या पागलों जैसी हरकतें करते हो ?
रोगी— न करूं, तो समझोगे कैसे ?

● एक यात्री— मैंने सीट पर रूमाल रख दिया था। मुझे सीट पर बैठने दीजिए।
दूसरा यात्री— रूमाल को रखा रहने दीजिए। मुझे उस पर बैठने में कोई एतराज नहीं।

● डाक्टर— तुम्हें कहां चोट लगी है ?
रोगी छात्र— स्कूल में।

● मां— बेटा, रात में क्या बड़बड़ाते रहते हो ?
बेटा— वही, जो दिन में आपसे डरके मारे कह नहीं पाता।

● अध्यापक— अब तुम्हें सारे प्रश्न समझ में आ गए होंगे।
एक छात्र— जी, अब केवल उत्तर समझा दीजिए।

● मां— बेटा, पंखे का बटन दबा दो। गर्मी लग रही है।
बेटा— हलके से दबाऊं या जोर से ?

● राम— कल मैंने तुम्हारे खेल के बारे में अपने दादा जी को बताया। फिर क्या, उन्होंने दांतों तले अंगुली दबा ली।
श्याम— पर तुमने तो एक दिन मुझसे कहा था कि दादा के एक भी दांत नहीं है।

● कमल— कभी-कभी तो सच बोल लिया करो।
विमल— जब सच बोलने का मौका दोगे, तभी तो बोलूंगा।

● पहलवान— तुम मुझसे कुश्ती लड़ने आए हो ?
एक लड़का— जी नहीं, मैं तो आपके साथ फोटो खिचवाना चाहता हूं।

● मालकिन— मुझे शोर-शराबा बिल्कुल पसंद नहीं।
भिखारी— तो आप चुपचाप मुझे पैसे दे दीजिए। हल्ला नहीं मचाऊंगा।

तेनालीराम २९१

घुसपैठिए

विजयनगर की खुशहाली के चर्चे दूर-दूर तक थे। पड़ौसी राज्यों से रोज घुसपैठ होती। लोग जहां मौका पाते, बस जाते। परेशान होकर राजा कृष्णदेव राय ने आदेश निकाला—"घुसपैठियों को सीमा पार न करने दी जाए।"

एक दिन प्रधान सीमा-रक्षक दरबार में आया। उसने बताया—"साधुओं का एक बड़ा दल नगर में आना चाहता है।"

राजा साधु-संन्यासियों का बड़ा सम्मान करते थे। उन्होंने तुरंत अनुमति दे दी। तभी तेनालीराम बोला—"महाराज, साधुओं को तो मान-सम्मान के साथ नगर में लाया जाना चाहिए।"

राजा ने यह काम तेनालीराम को सौंप दिया।
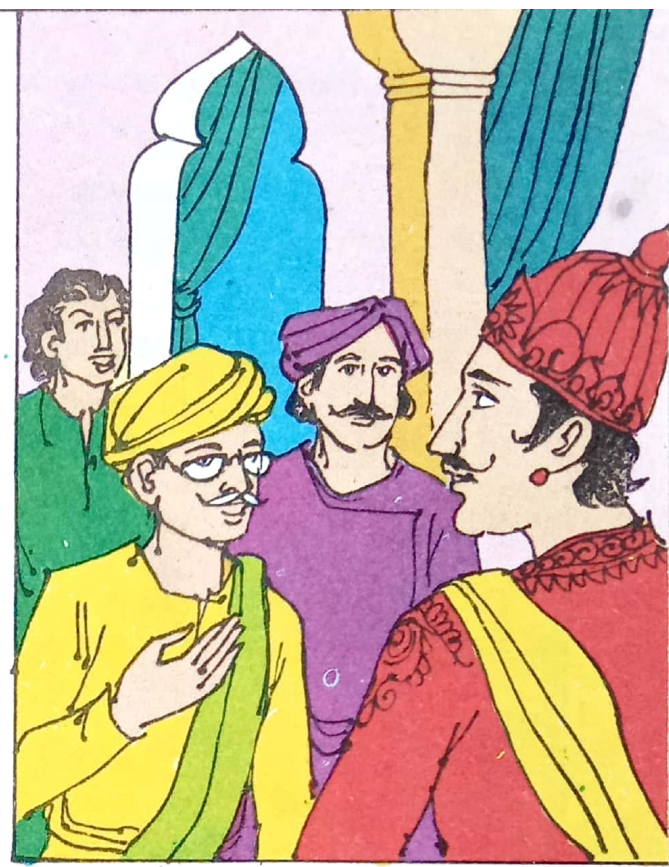
अगले दिन राजा दरबारियों के साथ साधुओं से मिलने गए, तो चकित रह गए। तेनालीराम ने उन्हें नगर की खाली पड़ी एक टूटी-फूटी सराय में ठहराया था। दरवाजे पर पहरा था। साधुओं ने इस बात की शिकायत राजा से की। दरबारियों ने भी मौका देख, तेनालीराम को खूब बुरा-भला कहा।

दरबार में राजा ने तेनालीराम से साधुओं के साथ बुरा व्यवहार करने का कारण पूछा। तेनालीराम ने हाथ जोड़कर कहा—"अन्नदाता, उत्तर कल सवेरे दूंगा।"

अगले दिन तेनालीराम राजा को ले सराय में पहुंचा। चारों ओर सन्नाटा। सारे साधु सराय में सोए पड़े थे। दरवाजा अंदर से बंद था। तेनालीराम ने झिरी से अंदर झांका। फिर राजा से भी झांकने को कहा। राजा ने देखा, अंदर सोए साधुओं के सिर के बाल और दाढ़ी-मूछें उखड़ी पड़ी थीं।
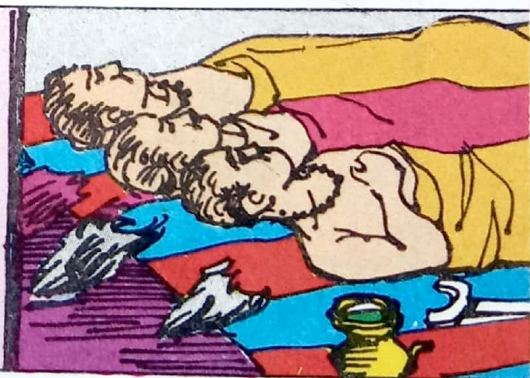
राजा सब कुछ समझ गए। पूरी साधु मंडली को गिरफ़्तार कराके पूछताछ की। पता चला—वे सब घुसपैठिए थे। साधु होने के कारण विजयनगर में रोक-टोक नहीं होगी, इसी से साधु बनकर आए थे।

उन्हें फिर से सीमा पार भेज, राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम की पीठ थपथपाई। पूछा—"तुम्हें कैसे पता लगा कि वे नकली साधु थे?"

"आंख-कान खुले रखकर महाराज।" —तेनालीराम ने उत्तर दिया।

लूसियस झरने के पास उदास बैठा था। झरने के आसपास जंगल फैला था। शाम ढल रही थी। अचानक उसकी तंद्रा टूटी। एक राहगीर ने उसे पुकारा—"भाई! ऐसे गुमसुम क्यों बैठे हो? अपने घर नहीं जाओगे क्या?"

"जाऊंगा, मगर वहां जाकर भी क्या करूंगा। मुझसे बीमार मां की हालत देखी नहीं जाती। मैं क्या करूं मां के लिए, कुछ समझ में नहीं आता।"—कहता

पोटली में जादू

—चंद्रदत्त इंदु

हुआ लूसियस सिसकने लगा।

—"क्यों, क्या हुआ तुम्हारी मां को?"

सिर उठाकर लूसियस ने राहगीर की ओर देखा, तो देखता ही रह गया। उसका वेश और रूप-रंग, उसकी सजी-धजी घोड़ी। राहगीर जैसे उसके मन की बात ताड़ गया। बोला—"मैं नील देश का राजकुमार हूं। वह दूर पर्वत की चोटी देख रहे हो न! उसी के पीछे, हरी घाटी में बसा है मेरा नगर। बस, घूमता-घूमता यहां चला आया।"

लूसियस सोचने लगा—'मैंने तो आज तक ऐसे देश का नाम नहीं सुना।' उसने सहमते हुए पूछा—"राजकुंवर जी, आप पर्वत को पार करके इतनी दूर से आए कैसे?"

"तुम मेरी चिंता छोड़ो। अपनी बताओ। क्या हुआ तुम्हारी मां को? अगर मैं भी तुम्हारे घर चलूं तो!"—राजकुमार ने पूछा।

लूसियस ने सुना तो जरूर, मगर क्या कहे, समझ नहीं आया। फिर बोला—"नहीं, नहीं। मेरा घर नहीं, एक मामूली झोंपड़ी है। बहुत गरीब है मेरी मां। तुम्हारे लिए खाना कहां से आएगा?"

"तुम चिंता न करो। खाना मेरे पास है। तुम भी मेरे साथ खाना। एक दवा भी है मेरे पास। शायद उससे तुम्हारी मां ठीक हो जाए। अच्छा पहले थोड़ा भोजन खाकर देखो।"—कहते हुए राजकुमार ने जीन में बंधी पोटली खोली। उसमें से निकालकर कुछ खाना लूसियस को दे दिया।

बेचारा लूसियस सुबह से भूखा था। खाया, तो चकित रह गया। ऐसा स्वादिष्ट भोजन, वह भी गरमागरम, उसने पहले कभी खाया नहीं था!
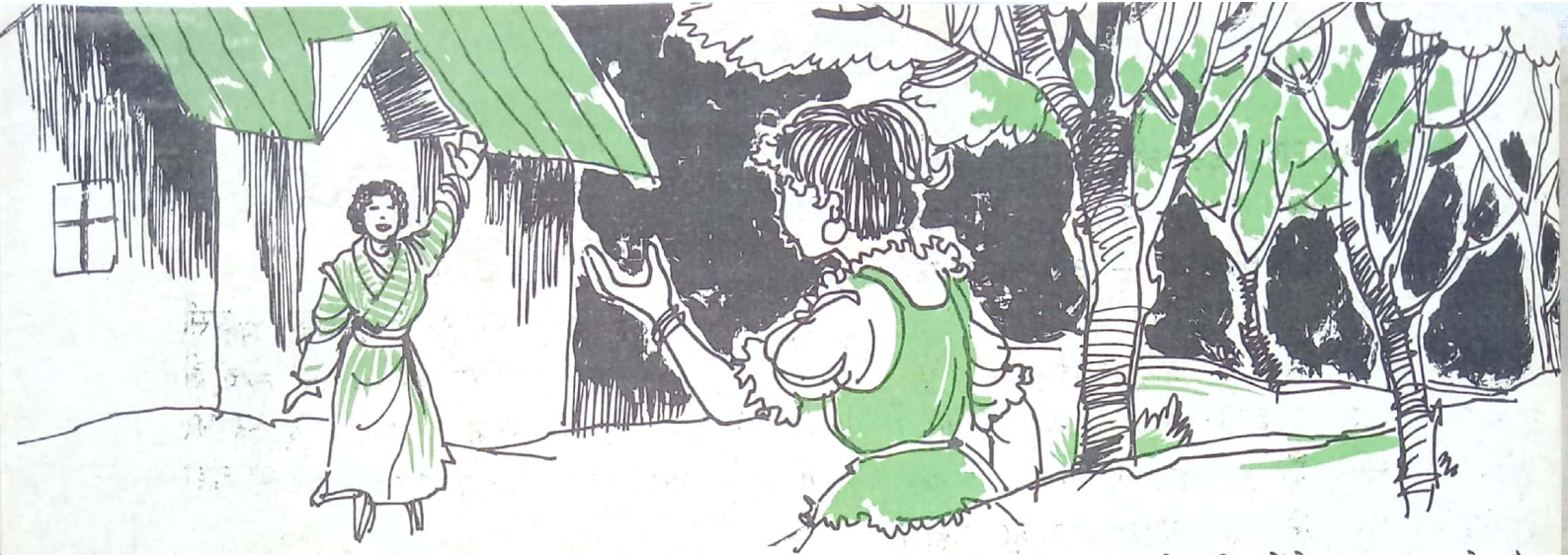
"क्यों, कैसा लगा ?"—राजकुमार ने पूछा।

"बहुत ही जायकेदार, मगर एक बात समझ नहीं आई। इस पोटली में खाना गरम कैसे रह पाया? लगा, जैसे अभी ताजा बना हो।"

राजकुमार ने हंसकर कहा—"इस पोटली का यही तो कमाल है। अच्छा, पहले मुझे घर ले चलो।" राजकुमार ने उसे घोड़ी पर अपने पीछे बैठा लिया। एड़ लगाते ही घोड़ी सरपट दौड़ी। कुछ ही देर में लूसियस की झोंपड़ी के सामने जाकर रुक गई।

लूसियस की मां जमीन पर लेटी थी। अजनबी को देखकर भी वह चुप रही। राजकुमार ने पोटली में से एक शीशी निकाली। डाट खोलकर दो बूंदें मां के मुंह में टपका दीं। मां एकाएक उठ बैठी। बोली—"बेटा, यह कौन है ? इनकी दवा ने तो जैसे जादू कर दिया। अब मैं बिल्कुल ठीक हूं।"

इसके बाद राजकुमार ने पोटली से निकालकर कुछ खाना लूसियस की मां को दिया।

तीनों देर तक बैठे बातें करते रहे। आधी रात बीत गई। राजकुमार ने पोटली लूसियस की मां को देते हुए कहा—"यह चमत्कारी पोटली है। इसमें अभी कई दिन का खाना है। अब मैं जा रहा हूं। फिर कभी आऊंगा।" कहकर राजकुमार घोड़ी पर बैठ गया। और कुछ ही देर में घोड़ी आंखों से ओझल हो गई।

दिन निकल आया। लूसियस और उसकी मां उठे। उन्हें भूख लगी, तो पोटली की याद आई। लूसियस ने पोटली उठाकर खोली, तो हैरान रह गया। उसमें सिक्के थे। लूसियस ने मां से कहा—"लगता है, खाने की पोटली के बदले भूल से वह इसे छोड़ गया। हम इन्हें खर्च नहीं करेंगे। आएगा, तो लौटा देंगे।" मां ने भी उसकी बात का समर्थन किया।

रात को लूसियस की मां की आंखें खुल गईं। झोंपड़ी के बाहर घुंघरुओं की छमाछम सुनाई दी। लगा, कोई धीरे-धीरे झोंपड़ी की ओर आ रहा है। मां ने देखा, एक लड़की उधर ही आ रही है। आश्चर्य में डूबी मां बाहर आई। लूसियस भी जाग गया। वह भी मां के पीछे-पीछे बाहर आया। मां-बेटे को देखकर लड़की मुसकराई। फिर लूसियस की ओर देखकर बोली—"तुम्हारा ही नाम लूसियस है न !"

लड़की के मुंह से अपना नाम सुन, वह आश्चर्य से भर उठा। बोला—"मेरा नाम तुम कैसे जानती हो ? क्या तुम भी नील देश से आई हो ?"

"भूल से तुम्हारा भाई अपने सोने के सिक्के यहां छोड़ गया। शायद तुम उन्हें ही लेने आई हो।"—लूसियस की मां ने कहा। "मैं सोने के सिक्के लेने नहीं आई। चाहो, तो तुम सिक्के अपने पास रख सकते हो।"—लड़की बोली।

"तुम इन सिक्कों ले ही जाओ। गांव वालों को पता चल गया, तो जीना हराम कर देंगे।"—कहते हुए लूसियस की मां झोंपड़ी में सिक्कों वाली पोटली लेने चली गई।

"लूसियस, तुम्हें नहीं चाहिएं सिक्के ? क्या तुम गांव के जमींदार से ज्यादा मालदार बनना नहीं चाहते ? क्या तुम्हें राजकुमार जैसी पोशाक और सजी-धजी घोड़ी नहीं चाहिए ?"

लूसियस बोला—"चाहता तो हूं। मगर मुझे अपने साथ ले चलो। कुछ ऐसा काम बताओ कि मैं धन कमा सकूं। मुफ्त में नहीं चाहिए कुछ।"

लड़की मुसकराई। इसी बीच मां पोटली लेकर आ गई। उसने पोटली लड़की को दी। उसने पोटली खोलकर देखी। हंसते हुए कहा—"अरे कहां हैं सोने के सिक्के! इसमें तो गरमागरम भोजन है।"

"भोजन है! तब तो जरूर कोई गड़बड़ है। ठीक-ठीक बताओ, तुम जादूगरनी तो नहीं? मेरी मां झूठ नहीं बोलती। मैंने भी देखा था पोटली को, सोने के सिक्के थे।"—लूसियस ने नाराज होते हुए कहा।

लड़की हंसने लगी। बोली—"तुम तो नाराज हो गए। तुम दोनों ने ठीक ही देखा था। असल में तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए ही मैंने यह किया था। ईमानदारी का इनाम तुम्हें मिलेगा।"

"मगर सिक्के तो राजकुमार दे गए थे। तुम्हारा उससे क्या लेना-देना? सच बताओ—तुम कौन हो?"—लूसियस ने पूछा।

"मैं वनदेवी हूं। कल राजकुमार के वेश में थी और आज लड़की के वेश में आई हूं। मेरा एक रूप नहीं। सारी हरियाली, नदी-झरने, पर्वत, घाटी मेरा ही रूप हैं। अब तुम दोनों मेरे साथ चलो। अपनी मेहनत से नया गांव बसाओ। मैं वहीं तुमसे मिलने आया करूंगी।"

वन देवी ने उन का संसार बदल दिया। वह उन्हें लेकर पर्वत की एक घाटी में आई। वहां दूर तक समतल जमीन थी। फलों वाले पेड़ थे। वन देवी बोली—" उधर देखो, पत्थरों का जो घर दिखाई दे रहा है, उसी में जाकर रहो। मैं देखना चाहती हूं, तुम अपनी मेहनत से क्या करते हो। और हां, यह पोटली रख लो। अब इसमें भोजन ही है। अभी यहां अन्न उगाने में देर लगेगी। तब तक इस पोटली का भोजन तुम्हारे काम आएगा।" यह कहकर वन देवी चली गई।

समय बीतता रहा। बीतते समय के साथ लूसियस भी बड़ा होता गया। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ी, उसकी मेहनत का रंग चारों ओर बिखरने लगा। सारी समतल जमीन, खेतों की क्यारियों और फूलों की बगिया में बदल गई थी। फिर लूसियस की बहू आ गई। परिवार में नए अंकुर फूटे। **(इटली)**

तीन पेड़ों का पेड़

—डा. रंजना अग्रवाल

फरगस नाम का एक राजा था। था बहुत साहसी और वीर। उसका सेनापति भी राजा की तरह ही साहसी और वीर था। राजा के एक इशारे पर मर मिटने को तैयार रहता था। फरगस को उस पर बड़ा गर्व था।

राज्य की सीमा से लगा एक घना जंगल था। उसे लोग तीन शाख वाला जंगल कहते थे। उसमें कोई भी जाने का साहस नहीं करता था। लोग सोचते थे, जो भी वहां जाएगा, जीवित नहीं लौटेगा।

सारे दिन एक से नहीं रहते। एक दिन अचानक सेनापति की मृत्यु हो गई। फरगस बहुत दुखी हुआ। उसकी समझ में न आया कि सेनापति के रिक्त स्थान को भरने के लिए योग्य व्यक्ति की तलाश कैसे की जाए। बहुत सोच-विचार कर उसने रण कौशल की एक प्रतियोगिता आयोजित की। घोषणा कर दी—'जो भी विजयी रहेगा, उसी को सेनापति का पद दे दिया जाएगा।'

निश्चित दिन आ पहुंचा। महल के पास एक मैदान में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। सब अपने-अपने स्थान पर बैठे थे। दूर-दूर से प्रतियोगी आए थे।

राजा की अनुमति पा, मंत्री प्रतियोगिता शुरू होने की घोषणा करने उठा ही था कि एक युवक भीड़ में से निकल कर फरगस के सामने आ खड़ा हुआ। पतला-दुबला, एकदम जोकर जैसा। "प्रणाम महाराज।"—उसने राजा से कहा—"कृपया मुझे भी इस प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति दें।"

सबकी नजरें उस युवक की ओर उठ गईं। उसे देख वे हंस पड़े। वह युवक सचमुच जोकर ही लग रहा था। पुरानी फटी पोशाक और हाथ में जंग लगी तलवार। उसका कवच तो इतना जीर्ण-शीर्ण था कि लगता था, छूते ही टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ेगा।

उस युवक का नाम राबर्ट था। फरगस ने राबर्ट की तलवार और कवच को देखते हुए पूछा—"तुम

इस जंग लगी तलवार और पुराने कवच के बल पर प्रतियोगिता कैसे जीतोगे ? मुझे डर है, कहीं चोट न खा जाओ ।''

—''महाराज ! मेरे पिता ने मरते समय मुझे आदेश दिया था कि मैं जब भी पहली बार आपके पास जाऊं, तो यही कवच पहन कर और यही तलवार लेकर जाऊं । मैं अपने पिता का आदेश मानकर ही कवच पहन और यह तलवार लेकर आया हूं । मेरी प्रार्थना है कि मुझे भी प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति दी जाए ।''

आश्चर्य में पड़े फरगस ने अनुमति दे दी । प्रतियोगिता आरम्भ हुई । सब अचरज में थे । राबर्ट के सामने कोई भी नहीं टिक पा रहा था । तभी एक सैनिक भागता हुआ आया । राजा को प्रणाम करके बोला—''महाराज़ ! तीन शाख वाले जंगल में भयंकर आग लगी है । वह फैलती ही जा रही है । यही नहीं, जंगल से निकलकर असंख्य बौनों ने हमारे सीमा-रक्षकों पर आक्रमण कर दिया है ।''
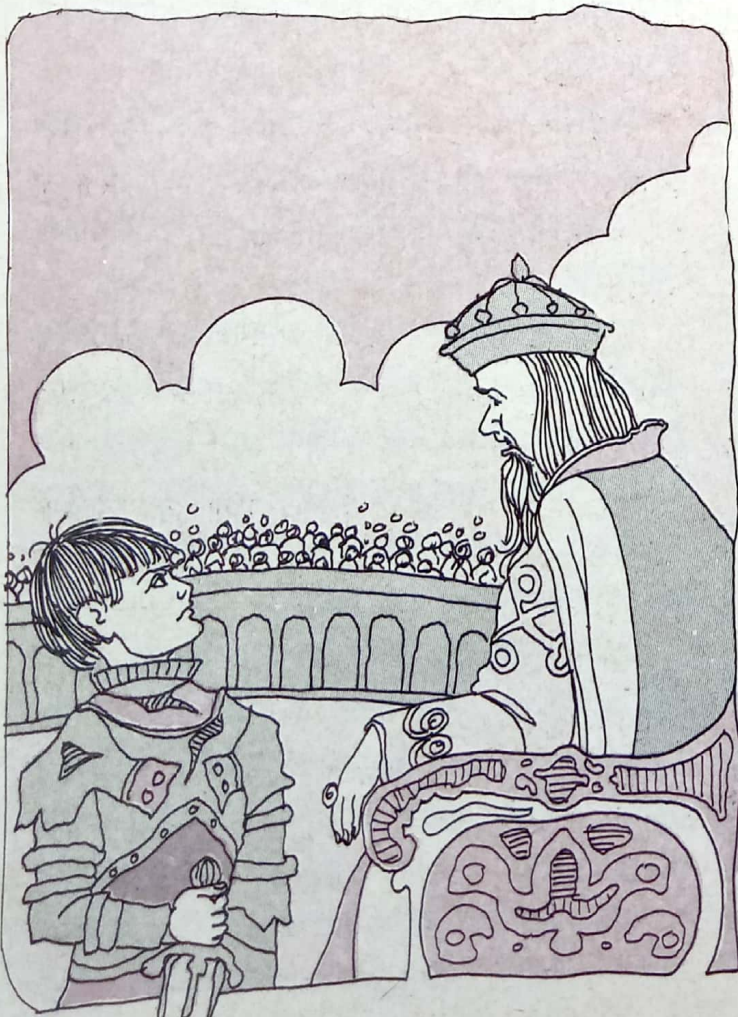
रण कौशल की परीक्षा के लिए इससे उत्तम अवसर क्या हो सकता था । राजा ने तुरंत घोषणा की—''जो भी बौनों पर विजय प्राप्त करेगा, उसी को सेनापति का पद दिया जाएगा ।''

तीन शाख वाले जंगल और बौनों का नाम सुन सभी प्रतियोगियों के चेहरे सफेद पड़ गए । मुसकराता रहा, तो केवल वह जोकर-सा लगने वाला राबर्ट । वह अपनी जंग लगी तलवार लिए जंगल की तरफ चल दिया । बड़े-बूढ़े फब्तियां कसने लगे, पर राबर्ट इन सारी बातों को अनसुनी करता हुए आगे ही आगे बढ़ता रहा । बौनों से लड़ता हुआ वह जंगल में घुस गया । उसके जंगल में घुसते ही आग धीमी होने लगी । बौने लौटने लगे । अचानक राबर्ट ने देखा कि उसकी जंग लगी तलवार सोने-सी चमकने लगी है ।

''अरे, मेरी तलवार तो सोने की हो गई ।''—वह बुदबुदाया । फिर उसकी नजर अपनी पोशाक और कवच पर गई ।

''अरे, मेरी पोशाक भी नई हो गई और कवच भी सोने का । यह तो कोई जादुई जगह लगती है ।''—वह अचरज से बोला ।

''हां, यह जगह भी जादुई है और तुम्हारी पोशाक, तलवार और कवच भी ।''—उसे एक आवाज सुनाई दी ।

''कौन हो तुम ? सामने आओ ।''—राबर्ट ने जोर से कहा ।

''तुम्हारे दोस्त । हमारे पीछे चले आओ ।''—आवाज फिर आई ।

राबर्ट उस आवाज के पीछे-पीछे चल दिया । तब तक आग पूरी तरह शांत हो चुकी थी । धुआं भी छंट चुका था । राबर्ट अब अपने आगे-आगे चलते बौने को स्पष्ट देख पा रहा था । वह बौना उसे अपने राजा के पास ले गया ।

''आओ बेटे !''—बौनों के राजा ने राबर्ट को देखते ही गले से लगा लिया ।

राबर्ट कुछ समझ नहीं सका । उसने बौनों के राजा को प्रणाम किया । फिर पूछा—''आप कौन हैं ? मैं आपका बेटा कैसे...''

"मैं बौनों का राजा हूं।"—राजा ने कहा—"तुम्हारे पिता मेरे मित्र थे। एक बार उन्होंने मेरे प्राणों की रक्षा की थी। तब मैंनें उन्हें यह जादुई पोशाक, कवच और तलवार दी थी। कहा था—ये वस्तुएं अपने पुत्र को दे देना।जब भी वह पहली बार राजा के पास जाए, तो इन्हें पहन कर और यह तलवार लेकर जाए। मैं इन वस्तुओं से उसे पहचान लूंगा। तुम्हें अपने पास बुलाने के लिए ही मुझे यह सब नाटक रचना पड़ा। आज तुम्हारे जीवन की नई शुरुआत है। तुम एक बड़े राज्य के सेनापति बनने जा रहे हो। इस अवसर पर मैं तुम्हें कुछ उपहार देना चाहता हूं। आओ, मेरे साथ।"

राबर्ट बौनों के राजा के साथ चल दिया। चलते-चलते वे एक विचित्र वृक्ष के पास पहुंचे। उसकी तीन मोटी-मोटी शाखाएं इस प्रकार फैली थीं, जैसे तीन पेड़ आपस में गुंथे खड़े हों। शायद इसीलिए वह जंगल तीन शाख वाले जंगल के नाम से प्रसिद्ध था।

वहां पहुंच कर बौनों के राजा ने एक गुच्छा निकाला, जिसमें सोने की तीन चाबियां थीं। एक शाखा में चाबी लगा कर घुमाया, तो उसमें एक दरवाजा खुल गया। वे दोनों दरवाजे के अंदर चले गए। वहां एक सुंदर बाग था। नर्म मुलायम घास, छोटे-छोटे बौने, वृक्ष और उन पर लदे छोटे-छोटे लाल-लाल फल। बौनों के राजा ने राबर्ट को कुछ फल तोड़ कर दिए। कहा—"इन फलों की विशेषता है कि जो भी इन्हें देखेगा, खाना चाहेगा। जिसे तुम यह फल खिला दोगे, वह तुम्हारा मित्र बन जाएगा।"

फिर वे दूसरी शाखा के पास पहुंचे। वहां चाबी घुमाने पर एक और द्वार खुला। उसमें जाने पर वे एक ऊंची चट्टान पर पहुंचे। वहां से दूर-दूर तक का दृश्य दिखाई दे रहा था। राबर्ट ने देखा, एक बड़ी सेना फरगस के राज्य की तरफ बढ़ी जा रही थी।

"शायद यह सेना फरगस पर आक्रमण करने जा रही है। यदि ऐसा है, तो मुझे वहां जाना चाहिए।"—राबर्ट ने कहा।

"अवश्य। चलो, तुम्हारे वहां शीघ्र पहुंचने का प्रबंध कर दूं।"—बौनों के राजा ने कहा। वे तीसरी शाखा के पास पहुंचे। चाबी लगाकर उसे खोला, तो एक रास्ता दिखाई दिया। वह रास्ता समुद्र तट पर पहुंचता था। तट पर एक जहाज खड़ा था।

"यह उड़ सकता है।"—बौनों के राजा ने बताया। फिर चाबियों का गुच्छा राबर्ट को दे अपने देश लौट गया।

राबर्ट जहाज पर सवार होकर बढ़ती हुई शत्रु सेना की तरफ उड़ चला। वहां पहुंच कर उसने वे फल नीचे गिरा दिए। सेना ने मिल-बांटकर वे फल खाए, तो सब राबर्ट के मित्र बन गए। बिना युद्ध हुए ही समस्या सुलझ गई।

फरगस को इन सारी बातों का पता चला, तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। "तुम सचमुच मेरे सेनापति बनने योग्य हो।"—कहकर उसने राबर्ट को सेनापति के पद पर नियुक्त कर दिया। (स्काटलैंड)

एक गांव में रहता था जाकोपेन। उसके माता-पिता न थे। अपने चाचा-चाची के पास रहता था। चाचा जाकोपेन से बहुत प्यार करते थे, पर चाची का स्वभाव अच्छा न था।

जाकोपेन समझ न पाता कि क्या करे। जब ज्यादा परेशान होता, तो वन में चला जाता। वहां एक विशाल झील थी। बस, वह झील के किनारे जा बैठता। उसे वहां बैठकर अपना दुःख कम होता हुआ मालूम देता।

रंग बदलता पानी

— डा. जितेंद्रपाल चंदेल

जाकोपेन को कभी-कभी लगता, जैसे झील का पानी रंग बदल रहा हो। कभी लाल दिखता, तो अगले पल नीला और फिर बैंगनी-हरा। वह समझ न पाता कि यह उसका भ्रम है या सच! झील घने जंगल में थी। वहां लोग कम ही जाते थे। वैसे रंग बदलने वाले पानी की बात उसे औरों ने भी बताई थी।

एक दिन की बात, जाकोपेन झील के तट पर बैठा था। आकाश में बादल घिरे थे। ठंडी हवा चल रही थी। आसपास कोई नहीं था। एकाएक जाकोपेन ने दो हंसों को देखा। वे झील पर मंडरा रहे थे। फिर उसके देखते-देखते हंस गायब हो गए।

झील का जल जोर से ऊपर उछला, उसमें लहरें उठने लगीं। जाकोपेन आश्चर्य से देखता रह गया। 'आखिर हंस कहां गए?'—उसने मन में कहा। तभी दोनों हंस झील में से निकलते दिखाई दिए। वे आकाश में उठे, तो जाकोपेन ने देखा—हंसों की चोंच में कुछ फूल थे। फिर वे अदृश्य हो गए।

उस रात जाकोपेन इस विचित्र घटना के बारे में सोचता रहा। अगले दिन वह फिर झील के तट पर जा बैठा। कुछ देर बाद फिर आकाश में दो हंस दिखाई दिए। पहले गायब हुए, झील के पानी में हलचल हुई। फिर वे चोंच में फूल दबाए निकले और लोप हो गए, पिछले दिन की तरह।

जाकोपेन समझ न पाया कि हंस कहां से आते हैं और पानी में कहां समा जाते हैं? अगले दिन वह झील के पास जाकर झाड़ियों में छिप गया। वह सोच रहा था—'शायद इस तरह कोई नई बात देखने को मिले।'

झाड़ियों में बैठे हुए थोड़ी देर हुई थी कि उसने दो हंसों को झील से बाहर आते देखा। आज वे आकाश में गायब नहीं हुए, झील के तट पर आ उतरे। अगले ही पल हंसों के स्थान पर दो आदमी खड़े दिखाई दिए।

जाकोपेन अपनी उत्सुकता को दबा न पाया और खुले में निकल आया। उसके होंठों से निकला—"दोनों हंस कहां गए? क्या आप ही ...." और वह चुप हो गया।

जाकोपेन की बात सुनकर दोनों व्यक्ति हंस पड़े और जाकोपेन ने सुना—'जो कुछ तुमने देखा था, वह एकदम सच है। अपना भला चाहते हो, तो किसी से कुछ न कहना।'

उनकी बात सुनकर जाकोपेन बुरी तरह डर गया। उसने कांपते स्वर में कहा—"आप लोग कौन हैं?"

उनमें से एक व्यक्ति ने कहा—"हम दोनों परी रानी के सेवक हैं। इस झील की तली में विशेष प्रकार के फूल उगते हैं। परी रानी को उन फूलों का रस अच्छा लगता है। हम हर रोज वही फूल लेने आते हैं।"

"लेकिन हंसों के रूप में क्यों आते हैं आप लोग?"—जाकोपेन ने पूछा।

"अगर हम असली रूप में आकाश से उतरेंगे, तो
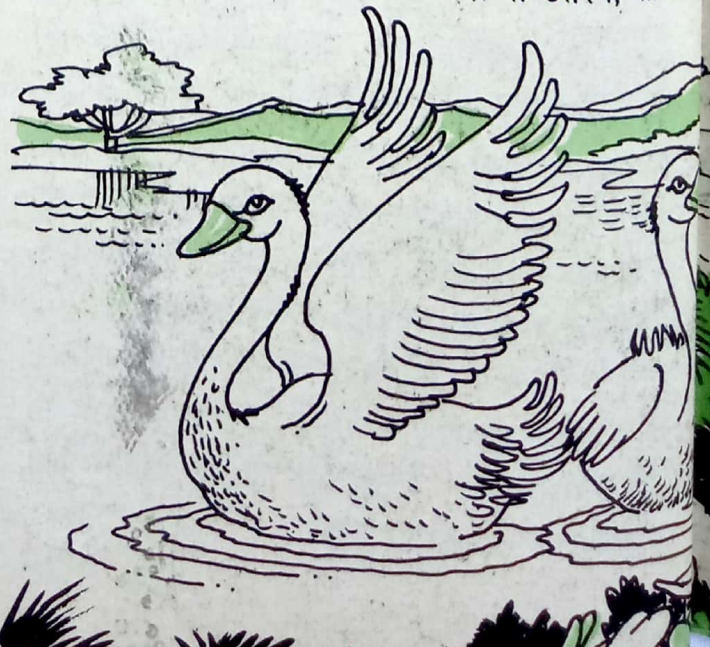
देखने वाले तरह-तरह की बातें बनाएंगे। हो सकता है, इससे हमारे लिए आना मुश्किल हो जाए। इसलिए हम हंस बनकर आकाश से उतरते हैं। पर आज तुमने हमारा असली रूप देख लिया। यह तो ठीक नहीं हुआ।''—परी रानी का दूसरा सेवक बोला—''तुम इस घटना के बारे में किसी से कुछ मत कहना। नहीं तो अच्छा न होगा।''—इतना कहकर परी रानी के सेवक ने जाकोपेन को एक नन्हा-सा दीपक दे दिया।

''यह किसलिए ?''—जाकोपेन ने पूछा।

''अंधेरा होते ही यह दीपक अपने आप जल उठेगा। दिन निकलते ही स्वयं बुझ जाएगा। इसका प्रकाश बहुत तेज होगा। यह तुम्हारे बहुत काम आएगा। हमारी ओर से भेंट है यह।''—इतना कहकर परी रानी के सेवक उड़ गए।

उनके जाने के बाद जाकोपेन को घर का ध्यान आया। वह तेजी से घर की ओर लौट चला। उसे वन में बहुत देर हो गई थी। वह सोच रहा था— 'चाची नाराज हो रही होगी।' और सच जाकोपेन को देखते ही चाची उस पर चीखने लगी। डंडा उठाकर उसकी तरफ दौड़ी। जाकोपेन घबरा गया। हड़बड़ी में उसने चाची को सब कुछ बता दिया। परी रानी के सेवकों से मिला दीपक भी दिखाया। वह एकदम भूल गया कि उसे इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहना था।

दीपक चम-चम चमक रहा था। चाची उसे अंधेरे कमरे में ले गई, तो अचानक दीपक से प्रकाश फूटने

लगा। चाची का क्रोध दूर हो गया। कहने लगी—''जाकोपेन, अगली बार उनसे कोई और जादुई वस्तु मांगकर लाना।''

अगले दिन जाकोपेन की चाची दीपक को लेकर शहर गई। वह सोच रही थी—'दीपक सोने का है, इसे बेचने पर काफी धन मिल जाएगा।' उसने जौहरी को दीपक की विचित्रता के बारे में भी बताया। जौहरी को कुछ संदेह हो गया। उसने तुरंत राजा को खबर कर दी। राज सैनिक आए और जाकोपेन की चाची को पकड़कर ले गए।

दरबार में पहुंचकर जाकोपेन की चाची ने राजा को सब कुछ बता दिया। उसके कहने पर राजा ने जाकोपेन को भी दरबार में बुलवा लिया। जाकोपेन समझ गया कि सब गड़बड़ हो गया। राजा के पूछने पर उसे भी सब कुछ बताना पड़ा।

राजा ने मंत्री से कहा—''हमारे राज्य की झील पर परीलोक के वासी हंस बनकर उतरते हैं और हमें कुछ पता नहीं। कितने आश्चर्य की बात है। उन्हें तुरंत पकड़ने का प्रबंध किया जाए।''

झील के चारों ओर सैनिक तैनात कर दिए गए। फिर झील के ऊपर एक विशाल जाल तान दिया गया, ताकि अगर हंस आएं, तो जाल में फंस जाएं। कई दिन बीत गए,पर झील की तरफ कोई न आया। जो पशु-पक्षी रोज वहां आते थे, वे भी न जाने कहां गायब हो गए। एक बात और हुई। झील का पानी तेजी से सूखने लगा।

जनता परेशान हो उठी। फसलें मुरझा गईं। सब कहने लगे—'राजा ने परीलोक से आने वाले हंसों को पकड़ना चाहा, इसलिए ऐसा हुआ है। राजा को भी अपनी भूल का आभास हुआ। एक दिन वह स्वयं झील के पास गया। सैनिकों से जाल हटाने को कहा, फिर सैनिकों को भी वापस बुला लिया गया।

इसके बाद एक रोज खूब जोर की बरसात हुई। सूखे तालाब और कुएं फिर से भर गए, पर उस झील में पानी न आया। वह एकदम ही सूख गई।

परी रानी के सेवकों ने जाकोपेन को जो दीपक दिया, वह राजा के खजाने से गायब हो गया। **(पोलैंड)**

चंद्रलोक की राजकुमारी

— डा. लक्ष्मीशंकर व्यास

बहुत पुरानी बात है। एक वृद्ध दम्पति बांसों के जंगल में रहते थे। नदी के किनारे उनका लकड़ी का मकान था। बूढ़ा रोज बांस काटकर लाता। उसकी पत्नी उससे वंशी बनाती और बनाती बांस की दौरियां।

उनके मन में एक अभाव सदा खटकता। उनके कोई संतान न थी। एक दिन बूढ़े ने अपनी पत्नी से कहा— "कितना अच्छा होता कि हमारे एक संतान होती। तब हमारे दिन इस प्रकार सूने-सूने न रहते।"

पत्नी क्या उत्तर देती ! चुप रह गई। एक दिन बूढ़ा बांस काटने गया, तो अचानक ही एक मोटा बांस उसके सामने आ गिरा। उसे लगा कि बांस कह रहा है —'मुझे काटो।'

बूढ़े ने सावधानी से उस मोटे बांस को काटा ही था कि उस खोखले बांस में उसे एक नन्ही-सी सुंदर बालिका बैठी दिखाई दी। उसका रंग गोरा था। रेशम के सुंदर वस्त्र पहने थी। बूढ़े ने भगवान को मन ही मन प्रणाम कर, उस बालिका को बांस से निकाल लिया। फिर उसे गोद में उठाए अपने घर की ओर दौड़ पड़ा। पत्नी ने भी जब उस बालिका को देखा, तो पुलक उठी। गले से लगा लिया। प्यार से नाम रखा— यूकी।

बड़े लाड़-प्यार से यूकी का पालन-पोषण होने लगा। यूकी दिन-दूनी रात-चौगुनी रफ़्तार से बढ़ती गई। महीना बीतते न बीतते वह दो फुट लम्बी हो गई। उसकी रेशमी पोशाक छोटी पड़ गई।

एक दिन बूढ़ा जंगल में बांस काट रहा था। अपनी गरीबी के बारे में सोच ही रहा था कि एक बांस से सोने के सिक्के गिरने लगे। अब उसे पूरा विश्वास हो गया कि भगवान ने हमें सुंदर ही नहीं, भाग्यशाली राजकुमारी दी है। उसी ने उसके लालन-पालन के लिए ये सोने की मोहरें भेजी हैं।

जैसे-जैसे यूकी बड़ी होने लगी, उसकी आवश्यकताओं के लिए अब बूढ़े को बांस काटते समय सोने की मोहरें मिलती रहती थीं। तीन वर्ष में ही यूकी पूर्ण युवती हो गई। वह रूप की साक्षात मूर्ति लगती थी। वृद्ध दम्पति को अब उसके विवाह की चिंता हुई। तब तक नगर में यूकी के सौंदर्य की चर्चा फैल गई थी। विवाह के प्रस्ताव आने लगे थे। यूकी ने विवाह के लिए तीन युवकों को चुना, पर शर्त रखी कि जो सबसे पहले उसका सौंपा कार्य पूरा करके लौटेगा, वह उसी से विवाह करेगी।

पहले युवक से उसने कहा— "तुम वह प्याली लेकर आओ, जिसका प्रयोग भगवान बुद्ध करते थे।" दूसरे से उसने कहा— "ऐसी खाल लेकर आओ, जो आग में नहीं जलती।" तीसरे से कहा— "समुद्र से सुदर्शन शंख ले आओ।"

तीनों युवकों ने सोचा कि यूकी पागल है। उसकी मनचाही वस्तुएं लाना सम्भव नहीं। अतः पहले ने एक कुम्हार से एक सुंदर प्याला तैयार कराया। उस पर ऐसी पालिश कराई, जिससे वह सदियों पुराना प्रतीत हो। दूसरे ने चमड़े पर आग में न जलने वाला मसाला लगाकर विवाह की शर्त पूरी करनी चाही। तीसरे ने किसी मछुए से एक शंख खरीदकर शर्त पूरी करने की कोशिश की।

किंतु यूकी ने तीनों की चालाकी और धोखेबाजी को समझ लिया। तीनों युवक अपनी चालाकी का भंडाफोड़ हो जाने से लज्जित और निराश हो गए। वृद्ध दम्पति यह देखकर अत्यंत दुखी हुए कि अब यूकी का विवाह कैसे होगा। उन्हें दुखी देख, यूकी ने बताया— "मैं बहुत स्वार्थी और कठोर हूं। इसी कारण मेरे पिता चंद्रमा ने मुझे शाप देकर बांस में बंद कर, यह दंड दिया था। आप लोगों ने मेरा लालन-पालन कर विनम्रता, दया और करुणा की शिक्षा दी। अब मैं शाप-मुक्त हो रही हूं और चंद्रलोक अपने पिता के पास लौट जाना चाहती हूं।"

पूर्णिमा के दिन जब वृद्ध दम्पति बाजार से लौटे, तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि चंद्रलोक की राजकुमारी वहां नहीं थी।

(जापान)

इस कहानी में परी बगीचे में आती है, चलो चुपके से हम भी बगीचे में चल कर उस से मिलते हैं...

परी से हम जादू की छड़ी मांग लेंगे। फिर तो सबकुछ अपना...

भागो, पता नहीं, इस बगीचे में घुसना मना है

परी नहीं, यहां तो राक्षस छड़ी लिए घूम रहा है। चलो पुराने कुएं पर। शायद वहां...

कुएं में गिरने का इरादा है क्या, पता नहीं यहां कितने गिर कर...

आज चांदनी रात है। तालाब पर परियां आएंगी, चलो वहीं...

आण्टी, चीटू नीटू इतनी रात को तालाब की ओर जा रहे हैं। सुना है वहां कोई दैत्य बच्चों को उठा ले जाता है

तुम्हें इतनी बढ़िया किताब ला दी। फिर भी तुम दिन-रात आवारा...

परी कथाएं पढ़ने को हर कोई उकसाता है, पर परी से मिलने कोई नहीं देता..

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई छोटा-सा, सुंदर-सा शीर्षक सोचिए। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ जुलाई' ९२ तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली के पते प भेज दीजिए। चु हुए शीर्षकों पुरस्कार दिए जाएं

परिणाम : सितंबर' ९

चित्र : विद्याव्र

पुरस्कृत चित्र

बबीता चौधरी, सुपुत्री श्री डी.पी. सिंह, क्वार्टर नं.-पी ।।।/१, नहर कालोनी, मायापुर, हरिद्वार

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे—
गिफ्टी गुप्ता, पठानकोट; नीति बंसल, हिसार; अर्पना सिंह, कोयला नगर (धनबाद); रश्मि, नई दिल्ली

अपना देश प्रतियोगिता

आवश्यक सूचना

☐ प्रत्येक प्रश्न के आगे कोष्ठक में तीन उत्तर दिए हैं। जो सही हो, उस पर √ निशान लगाएं।

☐ सही हल इसी फार्म पर भेजें।

☐ अंतिम तिथि ३१ जुलाई '१९९२

☐ पता— अपना देश प्रतियोगिता, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

☐ इस वर्ष भारत रत्न से इन्हें सम्मानित किया गया।
(राजीव गांधी / सत्यजित राय / सरदार वल्लभभाई पटेल)

☐ सोमनाथ मंदिर किस राज्य में है?
(बिहार / महाराष्ट्र / गुजरात)

☐ इसे दक्षिण की गंगा भी कहते हैं।
(कृष्णा / गोदावरी / नागवल्ली)

☐ एक प्राचीन ग्रंथ जिसे बच्चे बहुत पसंद करते हैं।
(मेघदूत / पंचतंत्र / श्रीमद्भागवत्)

☐ यहां केसर की खेती होती है।
(कांचीपुरम् / मंगलौर / पाम्पोर)

☐ वितस्ता नदी यहां से निकलती है।
(गोमुख / वेरीनाग / सूरजकुंड)

☐ ग्यारहवीं शताब्दी में यह विदेशी विद्वान भारत आया था।
(फाहियान / ह्वेनसांग / अलबेरुनी)

☐ यह शहर ग्यारहवीं शताब्दी में एक राजपूत राजा ने बसाया था।
(चंडीगढ़ / शिमला / दिल्ली)

☐ सुनहरे पीले फूलों वाला सुंदर पेड़।
(यूक्लिप्टस / अमलतास / पॉप्लर)

☐ एक प्राचीन भारतीय चिकित्सक।
(चरक / पाणिनि / कौटिल्य)

☐ यह नागा लोगों का सबसे प्रिय बाजा है।
(ढपली / सितार / पैतू)

जीतिए ५० इनाम

प्रत्येक को ५० रुपए की पुस्तकें

☐ स्वामी विवेकानंद ने यहां तपस्या की थी।
(हरिद्वार / कन्याकुमारी / ऋषिकेश)

☐ प्राचीन काल में इसका नाम कलिंग था।
(कर्नाटक / उड़ीसा / बिहार)

☐ दूर-दूर से सुरखाब पक्षी यहां आते हैं।
(त्रिवेंद्रम / वृंदावन / कच्छ)

☐ इस शहर के पास सागर में मोती पैदा होते हैं।
(कोचीन / मुम्बई / जामनगर)

☐ विश्व के प्राचीनतम गणराज्यों में से एक।
(कुंडग्राम / वैशाली / मथुरा)

☐ **पहचानिए और इनके नाम लिखिए—**

______ ______ ______

अधिक से अधिक दस शब्दों में वाक्य पूरा कीजिए—

नंदन इसलिए पसंद है क्योंकि -

अपना देश प्रतियोगिता

नाम - - - - - - - - - - - उम्र - - -

पता - - - - - - - - - - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - - - - - - - - - - -

नई पुस्तकें

अर्चना – लेखक : क्रांत; प्रकाशक : किवा प्रकाशन, सी-४७७, सेक्टर-१९, नौएडा- २०१३०१; पृष्ठ-३२; मूल्य : ५ रुपए।

सुंदर और साफ अक्षरों से युक्त हस्तलिपि में छपी पुस्तक। संस्कृत श्लोकों के पद्यानुवाद हिंदी में दिए गए हैं। पुस्तक देखने में प्रेस में ढले अक्षरों की छपाई से भी अच्छी लगती है।

सरस्वती वंदना, प्रातः स्मरण, भोजन मंत्र, संघ प्रार्थना, गीता तत्व तथा सुभाषित वाक्यों आदि का यह द्विभाषी (संस्कृत और हिंदी) काव्य संकलन है। विद्यार्थियों को हस्तलेख सुधारने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

जैन रामायण की कहानियां – लेखक : डा. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण'; प्रकाशक : परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार, दिल्ली-९२; सजिल्द मूल्य : ४० रुपए।

महाकवि स्वयंभूदेव की 'पउम चरिउ' बहुत पुरानी रचना है। इसमें राम-कथा ही है, पर कहीं-कहीं थोड़ा भेद है। पउम चरिउ को ही जैन रामायण कहा गया है। उसके कुछ प्रसंग चुनकर डा. अरुण ने कहानियां लिखी हैं। इन कहानियों में अहिंसा, क्षमा, त्याग, परोपकार जैसे मूल्यों की चर्चा है। इन दस कहानियों से मनोरंजन तो होता ही है, कहीं न कहीं संदेश भी इनमें है। भाषा सरल है। बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी पुस्तक पठनीय है।

बिन पानी सब सून – लेखक : प्रेमानंद चंदोला; प्रकाशक : हिमालय पुस्तक भंडार, गांधी नगर, दिल्ली-३१; सजिल्द मूल्य : ४० रुपए।

मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—इन पांच से ही जीवन का ताना-बाना बुना गया। आज का विज्ञान इन्हें तत्व नहीं मानता, पर ये घटक जीवन के आधार हैं। इनके बिना पृथ्वी सूनी और बंजर होती। लेखक ने सरल और रोचक शैली में इनकी चर्चा की है। इसके अलावा पर्यावरण, खून, नमक और एंजाइम पर हल्की-फुलकी शैली के निबंध हैं। जगह-जगह चित्र भी हैं। पाठक इन वैज्ञानिक निबंधों को बांचते हुए बोर नहीं होता। उसे बहुत-सी जानकारी भी मिल जाती है।

प्राकृतिक नेत्र चिकित्सा – लेखक : डा. एम. एस. अग्रवाल; प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर, दरियागंज, नई दिल्ली-२; मूल्य : १० रुपए।

आंखें हमारे शरीर में अनमोल हैं। आंखों में कौन-सा रोग क्यों होता है, उसे कैसे दूर किया जाए, प्राकृतिक और योग के सरल उपायों से आंखों को कैसे ठीक रखें—यह सब पुस्तक में बताया गया है। एक ही पुस्तक हिन्दी और अंग्रेजी में है। सभी के लिए उपयोगी है।

होनहार बच्चे

राहुल ठाकोर— आयु साढ़े चार वर्ष। ढाई वर्ष का था, तो खिलौना-कैमरे से खेलता था। तीन वर्ष का होते-होते असली कैमरे से फोटो खींचने लगा। अब तो कुशल फोटोग्राफर की तरह फोटो खींचता है। मई में राहुल के खींचे सैकड़ों चित्रों की प्रदर्शनी दिल्ली में लगी। समाचार-पत्रों में खबरें छपीं। यह राहुल के खींचे चित्रों की पांचवीं प्रदर्शनी थी। हैदराबाद दूरदर्शन से राहुल के कार्यक्रम प्रसारित हुए। आंध्र प्रदेश की बाल अकादमी ने बाल रत्न की उपाधि दी। स्वर्ण पदक दिया। राष्ट्रीय बाल कोष ने अच्छा कैमरा खरीदने के लिए पांच हजार रुपए भी दिए।

राहुल भगवती बाई मांटेसरी स्कूल (हैदराबाद) में के. जी. का छात्र है। सबसे छोटा फोटोग्राफर है। पता है— **द्वारा श्री तेज राय, अध्यापक, के. वी. के. हाई स्कूल, आजमपुरा, हैदराबाद।**

राहुल का खींचा एक चित्र

सुमित पारोलकर

ईशा गुप्ता

चिंकी

चित्ररूपा शेखर

बाल सभा

पत्र मिला

□ मई अंक, याने बेजोड़ अंक । 'नमक का पहाड़', 'बच गया गांव', 'छोटी बहू' मनोरंजक और ज्ञानवर्धक कहानियां । चित्र-कथाओं की छटा निराली ।

— बलराम प्रसाद पटेल, चाम्पा (म.प्र.)

□ नंदन मेरी सबसे प्रिय पत्रिका है । मैं इसे नियमित रूप से पढ़ता हूं । 'किसने पुकारा' से वीरता की प्रेरणा मिलती है । आपसे अनुरोध है कि महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग भी छापा करें ।

— सुभाषचंद्र सिहाग, गांव चौटाला (हरि.)

□ पिछले छह माह से लगातार नंदन पढ़ रहा हूं । मई अंक में मां आद्या कात्यायनी को एलबम में देख कर चित्त प्रसन्न हो उठा । 'चीटू-नीटू' और तेनालीराम ने घर के सारे बच्चों को लुभा लिया । नंदन के अलावा किसी भी अन्य पत्रिका से कुछ कर गुजरने की प्रेरणा नहीं मिलती ।

— गनेशीलाल कोष्टा, फफूंद, इटावा

□ एक बार किसी मित्र के घर गया । उसने मुझे नंदन पढ़ने को दी । पहले तो मैंने उसे अनदेखा कर दिया, किंतु जब पढ़ी, तो ठगा-सा रह गया । आज तक मुझे नंदन की प्रतीक्षा रहती है।**— देवकुमार सिंह, थाना भवन (उ.प्र.)**

□ विश्व की महान कृतियों में स्काट ओ डैल के हिंदी रूपांतर 'मछली और मोती' ने रोंगटे खड़े कर दिए । ऐसी कहानी हर अंक में छापा करें ।

— दिलीप मोदी, कटक (उड़ीसा)

□ एलबम में 'मां कात्यायनी' और 'तीन नहीं, एक हां' चित्र-कथा ने मन मोह लिया । चीटू-नीटू की पिकनिक ने खूब हंसाया । नंदन बाल समाचार ने देश-विदेश की बालोपयोगी खबरों से अवगत कराया । नंदन याने सम्पूर्ण पत्रिका ।

— नीरजकुमार अग्रवाल, ललितपुर

□ मई अंक काफी रोचक रहा । 'छोटी बहू' और 'झील में दरवाजा' बहुत अच्छी लगीं । नंदन बुद्धि तो निखारती ही है, भरपूर मुसकराहटें भी दे जाती है ।

— शाहिद सैफी, नरसिंहगढ़

□ ताज्जुब होता है कि आप नंदन में इतना सब कुछ कैसे भर देते हैं कि आता है,तो पहले पढ़ने के लिए घर भर में तकरार शुरू हो जाती है । ऐसी कोई पत्रिका नहीं जिसे पड़पोता, पोता, बाबा और पड़बाबा एक साथ पढ़ना चाहें ।

— सुलेमान अफरोज, श्रीनगर

□ कहानियां रोचक, कविताएं मधुर, चटपट जैसे जोकर, चित्र-कथाएं मन भावन, तेनालीराम गोरखधंधा, चीटू-नीटू हंसी का फौवारा, ऊपर से ज्ञान का भंडार बाल समाचार और पुरस्कार के लिए कई प्रतियोगिताएं । नंदन है या'आल इन वन' !

— सुकुमार सेन गुप्ता, कलकत्ता

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे— जगमोहन मित्रुका, हनुमानगढ़ (राज.); बलिराम प्रसाद, जमुई (बिहार); मनमोहन प्रसाद, बलसाड़ (महा.); नर्मदा शंकर, खुर्जा ।

आगामी अंक

आजादी की खुली हवा में रंग-रंग बिखराता आता

झलकियां—

- □ हमारे तीन राष्ट्रीय प्रतीक : सिंह, मोर और चिह्न—नंदन एलबम में
- □ रिमझिम-रिमझिम पड़ें फुहार गोवा में— रंग-बिरंगी झांकी
- □ दो बेहद रोचक चित्र-कथाएं
- □ वह सपने की दुनिया थी । सपने का सच क्या था ? पढ़िए 'द वैली आफ ड्रीम्स' का सार-संक्षेप विश्व की महान कृतियों में । **साथ में सभी स्थायी स्तम्भ**

पुराने जमाने में प्रत्येक नगर में एक 'नगर प्रमुख' हुआ करता था। अन्य नगरों की भांति बगदाद नगर में भी एक नगर प्रमुख था। 'नगर प्रमुख' को बहुत-से अधिकार होते थे। उसे सामान्य न्याय करने से लेकर मृत्यु-दंड देने तक का अधिकार होता था।

नगर में उसका विशेष सम्मान होता था। जब वह नगर की व्यवस्था देखने निकलता था, तब नागरिक उसे विशेष सम्मान देते थे। लोग अपने-अपने घरों से निकलकर उसका स्वागत करते। यदि कोई कष्ट होता, तो फरियाद भी किया करते थे। नगर प्रमुख मौके पर ही निर्णय सुनाता और दोनों पक्ष के लोग उसके निर्णय को खुशी-खुशी स्वीकार करते।

बगदाद के नगर प्रमुख का एक बेटा था। बेटे का नाम था आदिल। व्यवहार और स्वभाव में आदिल अपने पिता के विपरीत था। दूसरों को दुःख देने में उसे सुख मिलता था। वह न तो अपने घर में किसी की सुनता और न बाहर वालों की।

मन की बात

— डा. सत्येंद्र वर्मा

आदिल गोरा और स्वस्थ था। कुरते-पाजामे और टोपी में वह नवाब जैसा लगता था। उसे खुश करने के लिए लोग उसे 'छोटे नवाब' कहते थे। इस नाम से वह खुश हो जाता, फूला न समाता। आदिल का मन पढ़ने में नहीं लगता था। वह बड़ा शरारती और उदंड था। हमेशा अपने अटपटे व्यवहार से दूसरों को सताता। उसे घमंड था कि वह नगर प्रमुख का बेटा है। नगर में कोई उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

बगदाद नगर से कुछ दूर एक मदरसा था। एक बूढ़े मौलवी साहब मदरसे को चलाते थे। बच्चों को पढ़ाते, मौलवी साहब को पचास वर्ष हो चुके थे। उनके पढ़ाने का ढंग ऐसा था कि लोग दूर-दूर से अपने बच्चों को पढ़ने के लिए उनके पास भेजते थे। बिगड़े हुए बच्चे सुधरकर, नेक बनकर मदरसे से वापस लौटते थे।

मौलवी साहब कभी-कभी सीख भरी और रोचक कहानियां सुनाकर बच्चों का ज्ञान बढ़ाते और मनोरंजन किया करते थे। नगर प्रमुख ने भी अपने लाड़ले बेटे आदिल को मदरसे में भेज दिया।

आदिल मदरसे में दाखिल तो हो गया, किंतु वहां भी किसी को कुछ नहीं समझता था। मौका पाकर अपने संगी-साथियों को परेशान करता और सताया करता था। किसी का काम बिगाड़ता, तो किसी की पिटाई कर देता। वह मौलवी साहब की हां में हां तो मिलाता, किंतु करता अपने मन की। मौलवी साहब को गुस्सा तो बहुत आता, किंतु नगर प्रमुख के नेक व्यवहार के कारण आदिल को कभी दंडित नहीं करते थे।

मदरसे से कुछ दूर पर हरा-भरा जंगल था। मदरसे में आदिल का मन नहीं लगता था। अवसर पाते ही अपने साथियों को लेकर जंगल की ओर निकल जाता। प्रकृति की गोद में पहुंचकर उसे विशेष सुख और शांति मिलती थी। झील, झरनों और वृक्षों से उसे विशेष लगाव था।

आदिल की शैतानियों से परेशान होकर एक दिन मौलवी साहब ने उसे दंडित किया और मदरसे से बाहर निकाल दिया। आदिल के मन को ठेस लगी। इतना अपमान तो उसे कभी नहीं सहना पड़ा था। आदिल दुखी मन से जंगल में चला गया।

जंगल में पहुंचकर वह विशाल वृक्ष की हरी-भरी डाल पर जाकर बैठ गया। पत्तियों के झुरमुट में बैठा हुआ देर तक वह आकाश की ओर देखता रहा। कुछ देर बाद उसे ऐसा लगा कि अपने सुंदर पंखों को फैलाते हुए एक परी आकाश से वृक्ष की ओर उतरती आ रही है। पहले उसे लगा— कहीं वह स्वप्न तो नहीं देख रहा है। किंतु कुछ क्षणों के बाद वास्तव में झिलमिल-झिलमिल करते वस्त्रों में सुसज्जित परी उसके सामने मुसकराती हुई खड़ी थी। परी को देखकर वह आश्चर्य में पड़ गया। उसने सोचा— 'अब्बा हुजूर से परियों के बारे में सुना था। आज तो देखने को भी मिल गई।'

परी ने आदिल से पूछा— "तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने कहा— "आदिल।"

— "क्या करते हो ?"

आदिल ने झिझकते हुए किंतु साफ शब्दों में कहा— "मुझे तो लोगों को सताने और परेशान करने में मजा आता है। पढ़ाई में तो तनिक भी मन नहीं लगता।"

परी ने गंभीर होते हुए कहा— "यह तो बुरी बात है, पढ़ाई के बिना तो तुम मूर्ख ही रह जाओगे। तुम्हें कोई मान-सम्मान नहीं मिलेगा।" बात आदिल को धीरे-धीरे समझ में आ रही थी।

परी ने हवा में हाथ घुमाया। तुरंत उसके हाथ में एक सुनहरी कलगी आ गई। परी ने आदिल की टोपी के साथ कलगी लगा दी। फिर कहा— "जाओ, अब तुम्हारा मन पढ़ने में लगेगा।"

आदिल का मन पढ़ाई में लगने लगा। वह सहपाठियों के प्रति भी अच्छा व्यवहार करने लगा। उसकी गिनती अव्वल छात्रों में होने लगी। आदिल में आए परिवर्तन को देखकर मौलवी साहब खुश थे।

नगर प्रमुख को आदिल की चिंता थी। एक बार उसने दो सिपाही भेजकर मौलवी साहब को आदर के साथ बुलवाया। मौलवी साहब ऊंट पर बैठकर बगदाद आए। मौलवी साहब जूते पहने हुए ही नगर प्रमुख के कमरे में जाकर बैठ गए। सेवकों ने मौलवी साहब से कहा— "आपको जूते पहनकर कमरे में नहीं आना चाहिए। यहां जूते पहनकर आना मना है।" आदिल भी उसी समय कमरे में पहुंच गया। मौलवी साहब कुछ कहते, इससे पहले ही आदिल ने मौलवी साहब के जूते अपने हाथों से उठाकर कमरे के बाहर रख दिए।

इसी बीच दूसरे दरवाजे से नगर प्रमुख कमरे में आ गया। नगर प्रमुख को देखकर मौलवी साहब डर गए। सोचने लगे— 'आदिल के हाथों में मेरे जूते देखकर नगर प्रमुख जरूर नाराज हो गए होंगे। कहीं सजा न दें।' किंतु यह देख, नगर प्रमुख प्रसन्न हो गया कि उसका बेटा इतना अनुशासित हो गया।'

उसने मौलवी साहब से कहा— "मेरा बेटा अच्छा इंसान बन गया, इसकी मुझे खुशी है! मैं आपसे बहुत खुश हूं।" नगर प्रमुख ने मौलवी साहब को पुरस्कृत भी किया। **(अरब)**

शीर्षक बताइए : परिणाम

नंदन मई '९२ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

सिर पर टोपी हाथ में छड़ी, चिंता नहीं अगर धूप हो कड़ी ।
—रेनू प्रभा, १०४१ न्यू हाउसिंग बोर्ड, करनाल (हरि.) ।

इक नन्हा-सा सपना मेरा, हर कहीं हो प्रेम बसेरा ।
—नवीन शर्मा, २२ सात वैल्स स्ट्रीट, मद्रास ।

हो गई छुट्टियां हमारी, कर ली जाने की तैयारी ।
—प्रमोदसिंह चौहान, ३ लक्ष्मी कृपा, गावड़ बाड़ी, विरार (पूर्व) जि. थाना (महाराष्ट्र) ।

अब पढ़ाई से है टाटा, खूब करेंगे सैर-सपाटा ।
—सौम्यासिंह, डा. एस. पी. सिंह, एफ-३ कृषि कालोनी, ग्वालियर (म.प्र.) ।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : सुरभि तोमर, नई दिल्ली; हर्षकुमार, अबोहर (पंजाब); नितिन कर्नावट चित्तौड़ गढ़; सोनालीकुमार, दुर्गापुर (म.प्र.) ।

नंदन ज्ञान पहेली : २८१

परिणाम

फ्रु	स	■	र	थ	■	ढी
■	सा	त	■	■	■	ला
गु	■	■	जा	ले	■	■
फा	■	शे	र	■	चू	ड़ी
■	■	■	■	रू	क	■
ची	■	मो	ती	■	■	■
न	■	■	■	शि	री	ष

नं.ज्ञा.प.२८१

इस बार पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया । दो सर्वशुद्ध आ गए । पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध : दो : प्रत्येक को दो सौ रुपए
१. अंतुकुमार ओझा, बक्सर; २. संजीवकुमार जैन, नालंदा (बि.) ।

एक गलती : पचीस : प्रत्येक को पचीस रुपए
१. जितेंद्रकुमार सर्राफ, कलकत्ता; २. श्रद्धा बस्नेत, सिराहा (नेपाल); ३. राजेशकुमार, श्रीगंगानगर (राज.); ४. राजेशमोहन ठाकुर, दरभंगा; ५. श्रीहा दानी, अजमेर; ६. कृष्णकांत सिंह, सहरसा; ७. रोहित सक्सेना, कोलीवाड़ा, मुंबई; ८. सौरभ पात्र, हुगली (प. बं.); ९. संतोषकुमार, भोजपुर; १०. दीपककुमार गुप्ता, सागर (म.प्र.); ११. अभिषेककुमार, बोकारो स्टील सिटी; १२. ममताकुमारी सिंघानिया, कलकत्ता; १३. मोहित गर्ग, यमुनानगर; १४. आराधना भारद्वाज, गुड़गांव (हरि.); १५. मणि जाधव, भोपाल; १६. मनोजकुमार, गया; १७. गोमतीकुमारी ध्रुव, रायपुर (म.प्र.); १८. विश्वासकुमार गर्ग, अजमेर; १९. शिप्रा वर्मा, कलकत्ता; २०. अतुल त्रिपाठी, देवरिया (उ.प्र.); २१. आशुतोष सहगल, सहारनपुर; २२. योगेशचंद्र, भागलपुर; २३. आनंदकुमार सिंह, कलकत्ता; २४. नितिन सिंघल, ग्वालियर; २५. रोहिणी साहू, रायपुर ।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर सिंक पर लटका मोजा छोटा है ।
२. पेटी पर बैठे बौने के बाएं पैर में जूता नहीं है ।
३. सामने दीवार पर टंगी एक तसवीर बदली हुई है ।
४. पूछताछ करते सिपाही के हाथ में लगी नोटबुक का कवर छोटा है ।
५. कुर्सी के नीचे बाल्टी से बिखरा रंग एक ही स्थान पर है ।
६. ड्रेसिंग टेबल की दराज में हैंडिल है ।
७. ड्रेसिंग टेबल के शीशे के चारों ओर जड़े बल्बों में से एक गायब है ।
८. उसकी छानबीन करते व्यक्ति का स्वेटर दूसरा है।
९. उसके बाईं ओर वाले दरवाजे पर पूरा फ्रेम है ।
१०. छत से लटका लेम्प शेड टूटा हुआ है ।

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने एवं लेखन में रुचि :

१. संजयकुमार गर्ग, १६, १८२ डासना गेट, गाजियाबाद; २. हार्दिक राठौर , १४, जयंत राठौर, पुरानी बस्ती , झारसुगडा (उड़ीसा); ३. विंदेश्वर प्रसाद, १६, कल्याण एजेंसी, ग्रा.+पो. हिलसा, नालंदा; ४. प्रवीणकुमार अग्रवाल, १४, बाबूराम श्रीराम आढ़ती, अनाज मंडी, खुर्जा ; ५. विकास कोठारी, १३, वंदना, बी- ७ सुभाष लेन, मलाड (पूर्व) मुंबई; ६. दीपककुमार, १४, १८४ एफ, एन.ई. रेलवे कालोनी, लहरतारा फाटक, वाराणसी; ७. सचिन वाजपेयी, १४, ३६२ ब्रह्मपुरी, मुजफ्फरनगर; ८. कृष्णकुमार, १४, म.नं. १२२, इंदौर रोड, धार (म.प्र.); ९. निखिल बोहरा, १४, ४२९ एफ, पाकेट-२, फेज १, मयूर विहार , दिल्ली; १०. सुरेश बंसल, १४, शिवसहाय मल वंशीधर, सेफरागुवार, झुंझुनू ; ११. श्रीकृष्णकुमार, १४, रमेशप्रसाद शर्मा, हुलासगंज, जहानाबाद; १२. राजेशकुमार, १६, जे. आर. साहू, पो. अर्जुनी, वाया भाटा पारा, रायपुर; १३. जितेंद्रकुमार गुप्ता, १३, छोटेलाल गुप्ता, आयल डीलर, जैथरा, एटा; १४. मनीषा गुलवानी,१२,बी ३५/४ एन.ए. पी. ५ टाउनशिप, नरौरा, बुलंदशहर; १५. गगनदीप कांसल, १६, सैक्टर ३२ए ,म.नं. ५०४, चंडीगढ़ ; १६. आशुतोषसिंह, १४, माहेश्वरीप्रसाद सिंह, ग्रा+पो. महियामा, भागलपुर; १७. अरविंद कुमार, १३, बाम्बे वस्त्रालय, गुदरी बाजार, पडरौना, देवरिया; १८. ओम्प्रकाश सिन्हा, १६ , लक्ष्मणप्रसाद सिन्हा, कुष्ठ नियंत्रण इकाई पूर्व, जेल रोड, रांची; १९. रजनीश अग्रवाल, १२, मनोहरलाल दलाल, गोपाल हलवाई की गली, बयाना (राज.); २०. विमला विष्ट, १३, डी-१८, शुगर फैक्ट्री, काशीपुर, नैनीताल; २१. अजय पाराशर, १५, ओम्प्रकाश पाराशर, व्यास गली, जोबनेर , जयपुर; २२. संजय कामले, १६, २७ केशर बाग, इंदौर; २३. आरती कुमारी, ७, नंदकिशोर, बाभन टोली, गिरिडीह; २४. नीतूकुमारी सिन्हा, १२, २२ डी-रेलवे आवास, दिउलिया, नरकटिया गंज, प. चम्पारण (बि.); २५. शोभना मलैया, १४, मलैया ब्रदर्स, तिलकगंज, स्टेशन रोड, सागर (म.प्र.) ।

खेल, संगीत एवं चित्रकला में रुचि :

१. अरविंदकुमार जैन, १३ वर्ष, वीरेंद्रकुमार जैन, शोभाश्री मार्केट, गौपाली, चौक, आरा; २. कमलकुमार गुप्ता, १३, गुलाब टेक्सटाइल, विंध्याचल, मिर्जापुर ; ३ . नीरज शर्मा, १४ ११७/ २-३ एम.टी. लाइन, करियप्पा रोड, इलाहाबाद; ४. विवेककुमार, ८, मिथिलेश कुमार, नौबतपुर, पटना; ५. ऋचा शर्मा, १३, ७/६३८५ देव नगर, नई दिल्ली; ६. कुमारी लीना, १५ , सुनील चौधरी, बुलहा मधुसूदनपुर, जनकपुर रोड, सीतामढ़ी; ७. प्रतीक श्रीवास्तव, १२, आर.के. श्रीवास्तव २२ दीप नगर, आगरा; ८. निशांत मिश्रा, ८, देवेन्द्रकुमारदत्त मिश्रा, मुसल्लहपुर हाट, महेंद्रू, पटना; ९. तेजपालसिंह १६, म.नं. १ क १३, कमला नेहरू नगर, पाली, मारवाड़; १०. सुनील पांडेय, ११, सीताराम पांडेय, म.नं. २९३ जी. एच. रामपुर कालोनी, जमालपुर (बि.); ११. मोनिका सोनी, ९, माणकलाल सोनी , सोनी पान भंडार, रानी बाजार, बीकानेर ; १२. कुलवंतसिंह आजमानी, ११, रेडिमेड हाउस, बस स्टैंड, पिथौरा, रायपुर; १३. राहुलकुमार, १३, नंदकेश्वर सहाय, चांद चौरा, गया; १४. भानुप्रताप, १६, १/१९ राउज एवेन्यू रोड, नई दिल्ली; १५. संजीव कुमार, १६, ३३/१९ के.मी. पावर सब स्टेशन, सहरसा (बि.); १६. अभिषेक जैन, ११, ३४/६ सिविल लाइन साउथ, मुजफ्फरनगर, १७. रूपेशकुमार, १४, रोड नं. ३०, म. नं. १०, गर्दनी बाग, पो. अनीसाबाद , पटना; १८. मु. उसमान, १५, १२/११७१ गनपत सराय, पुल बंजारन, सहारनपुर; १९. स्नेहिल निलय, १२, विनयकुमार, मुख्य डाकघर, सासाराम, रोहतास; २०. सुजीत कुमार श्रीवास्तव, १३, हरीओम् श्रीवास्तव, सदर बाजार, सीतापुर ; २१. जौली अग्रवाल, १५, योगेश कुमार सिंघल, २३ पटेलनगर, मुजफ्फर नगर , २२. शमीककुमार, ६, कुमुदकिशोर सिंह, नौबतपुर, पटना; २३. अब्दुल कादिर, १३, लईक अहमद, ११ सिविल लाइन, रुड़की; २४. चेतना चंचल, ६, जे.के. सिंह, संयुक्त खाद्य एवं औषधि प्रयोग शाला, पटना; २५. जितिन कुमार, १३, ५०/२८०, हाल्सी रोड, कानपुर ।

डाक टिकट संग्रह, भ्रमण एवं पहेली में रुचि :

१. अंकुर मेहरोत्रा, १० वर्ष, इलाहाबाद बैंक, सिविल लाइंस, मुरादाबाद ; २. मनीष डागा, १३, सोसायटी स्टोर, एयर फोर्स, तेजपुर (असम); ३. गोपाल कृष्ण, १५, ६९ए विवेकानंद रोड, कलकत्ता; ४. अविनाश कुमार, १४, हरिनारायण सिंह, म्युनिसिपल चौक, छपरा; ५. प्रीतेश सौरभ,५, १३, एम.एल. सिंह (आई.ए.एस.) बुद्धा कालोनी, पटना; ६. भुवनदीप सिंह, ९, ५२७ए, सैक्टर-१३, भीष्म नगर , पटियाला; ७. तनुश्री गुप्ता, १५, २८/९ अशोक मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ;

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ______________ आयु ______

पूरा पता ______________

____

रुचि ______________

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन
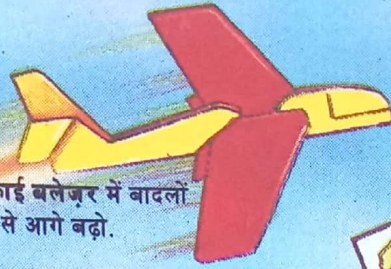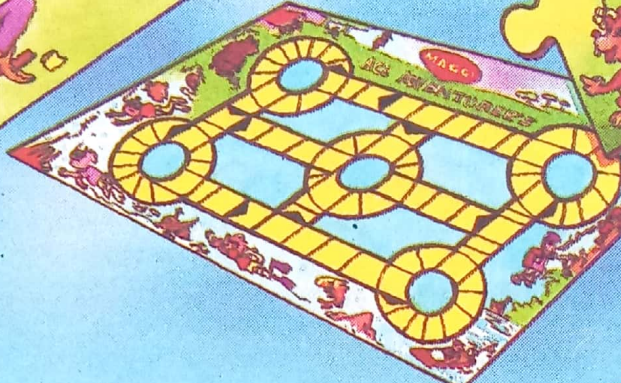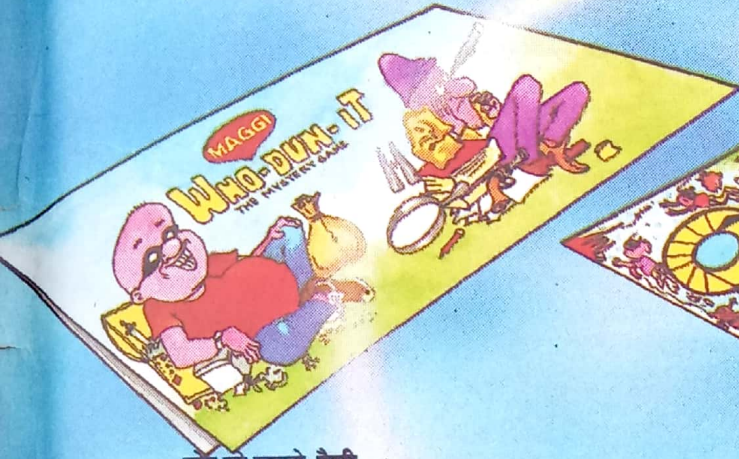
MAGGI CLUBBERS
FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
मैगी स्काई बलेज़र में बादलों से आगे बढ़ो.
मैगी जिगसा पज़ल से मैगी के साहसिक कारनामों की दुनिया को जानो
MAGGI
WHO-DUN-IT
THE MYSTERY GAME
MAGGI
समुद्र से आकाश की अभियान पूरी करो मैगी एस एडवेंचरर्स गेम में
चोर को पकड़ो-मैगी हू-डन-इट रहस्यमय खेल में
अब मौज-मस्ती भरे साहसिक खेल!
मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहार
मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.
RAIDERS OF THE RED STAR
Name
Membership no.
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!
बस यह लोगो मैगी नूडल्स के 5 रैपर के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.
अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिख भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मुफ़्त मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी भेज देंगे.
मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनिमल्स' क्विज पुस्तिका!
अपने हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमिल्स' क्विज पुस्तिका.
MAGGI
2-Minute noodles
FAST TO COOK! GOOD TO EAT!
हमाार पता है
मैगी क्लब
पो.ओ. बॉक्स 5788, नई दिल्ली-110 055
एक और मौका: अगर अभी तक तुमने मैगी 'बर्डहाउस' नहीं लिया है तो तुरन्त ले लो!